दीपावली विशेषांक

अक्टूबर 95 | मूल्य 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

आप अपने बुढ़ापे को यौवन में बदलिये

पंचांगुली कल्प

महालक्ष्मी का नृत्य आपके आंगन में

गुरुदेव का आमंत्रण
आना है तो फिर आना ही है

फिर से इसे पढ़िये

दीपावली महोत्सव

23 व 24 अक्टूबर 1995

कुबेरकृत, अद्वितीय, गोपनीय, दुर्लभ
दो दिवसीय साधना शिविर

एवं

सूर्य ग्रहण साधना शिविर
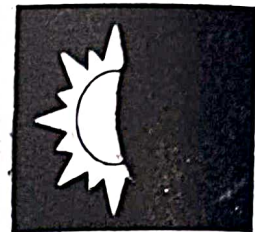
क्योंकि जहां २३ अक्टूबर को दीपावली है, वहीं २४ अक्टूबर को "दुर्लभ सूर्य ग्रहण" है, और उस दिन जोधपुर में ही रहकर मनोवांछित दुर्लभ साधनाएं सम्पन्न करने की इच्छा हजारों साधकों ने व्यक्त की है।

शिविर स्थल : डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०)

साधना जगत में काल गणना का अपना ही महत्त्व होता है,
जिस प्रकार सही लग्न में किया गया कार्य निश्चित सफलता प्रदान करता है,
उसी प्रकार दीपावली की रात्रि को भी सिंह लग्न में की गई लक्ष्मी की साधना से
सफलता प्राप्त होती ही है. . . और फिर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में किया हुआ
प्रयोग कभी असफल होता ही नहीं, इसीलिए आपको भौतिकता और आध्यात्मिकता की
पूर्णता के लिए सपरिवार इस साधना में भाग लेना ही है–

२३ अक्टूबर को सम्पन्न होने वाले प्रयोग

* रात्रि को सिंह लग्न में चारों वेदों से युक्त महालक्ष्मी पूजन
* ऋषियों द्वारा प्रमाणित, [illegible] सूक्त युक्त लक्ष्मी पूजन
* कनकधारा स्तोत्र से महालक्ष्मी अभिषेक
* इन्द्राणी-लक्ष्मी सिद्धि चेतना

२४ अक्टूबर को सम्पन्न होने वाले प्रयोग

* नाभिदर्शना, शशिदेव्य अप्सरा प्रत्यक्ष सिद्धि साधना
* सूर्य की तरह हृदय में प्रकाश पुञ्ज स्वरूप जाज्वल्य गुरु स्थापन प्रयोग
* निश्चित मनोवांछित सफलता साधना
* शत्रु मर्दन साधना

नियम –

- प्रत्येक साधक को २३ अक्टूवर १९९५ की प्रातः शुभ वेला में जोधपुर पहुंच जाना चाहिए, आप वापिस २५ अक्टूबर को प्रातः प्रस्थान कर सकते हैं।
- **शिविर शुल्क मात्र ३३०/-**
- शिविर में बताये गये नियमों का पालन अनिवार्य है।
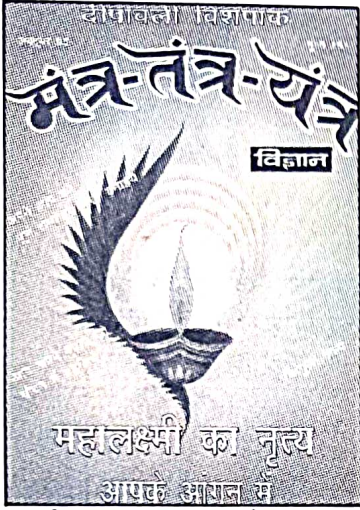
वर्ष 15 अंक 10
अक्टूबर 1995 पृष्ठ 80

प्रधान संपादक
नन्दकिशोर श्रीमाली
सह सम्पादक मण्डल
डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरु सेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई
संयोजक
कैलाश चन्द्र श्रीमाली
वित्तीय सलाहकार
अरविन्द श्रीमाली
मूल्य (भारत में)
एक प्रति : 18/-
वार्षिक : 180/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034,
फोन : 011-7182248
फेक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०)
फोन : 0291-32209
फेक्स : 0291-32010

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C- 13, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

विषय सूची

साधना

योग

सद्गुरुदेव

दीक्षा

स्तोत्र

विवेचना

विशेष

स्तम्भ

प्रार्थना

नित्यं सौभाग्यमेतत् जनयति शुभदं दीपमाला सुमाला,
प्रेमाबद्धं च ललितं वितरति सत्यं दानमानादि सौख्यं।
हीत्वा हेयं तमौघं प्रभवति विमलं ह्य तेजोऽभिधेयं;
वन्द्यः सिद्धैश्च निखिलः स्फुरतु मम हृदि ब्रह्मतेजोऽभिदीप्तः।।

सुन्दर दीयों से सुशोभित यह दीपमाला सौभाग्य को उत्पन्न करने वाली है, जिसके आते ही लोग प्रेममय होकर अच्छे वस्त्रों से सुसज्जित हो, सत्य, दान, मान एवं बन्धुत्वमय व्यवहार करने लगते हैं, यह दीपमाला सभी अन्धकार राशि को दूर करके स्वच्छ प्रकाश से संसार को आलोकित कर देती है, इस मंगल बेला में सिद्ध समूह से वन्दित गुरुदेव निखिल अपने ब्रह्मतेज से दीप्त हो मेरे हृदय में स्फुरित हों।

सेवाधर्मः परमगहनः योगिनामप्यगम्यः

बहुत ही धीर-गम्भीर मुद्रा में बैठे हुए थे 'ऋषि शौनिक' और सामने बैठा था विशाल शिष्य-वृन्द। सभी के मन में एक कौतूहल था, कि अकस्मात् गुरुदेव ने हम सभी को क्यों एकत्र किया है यहां? आज तक तो शिक्षा प्रदान करने के अतिरिक्त कभी इस तरह सभा का आयोजन नहीं हुआ था . . . तभी ऋषि शौनिक की ओजस्वी वाणी गूंजी– "मेरा इस पृथ्वी लोक से प्रस्थान करने का समय सन्निकट है, अतः कल मैं अपने उत्तराधिकारी का चयन करूंगा, जिससे भविष्य में भी निर्बाध इस आश्रम का संचालन होता रहे।" गुरुदेव के इन शब्दों को सुनकर समस्त शिष्य स्तब्ध हो गये, उनकी स्तब्धता को भंग करते हुए गुरुदेव ने पुनः कहा– "मैं श्यामपट्ट पर एक वाक्य लिख रहा हूं, जो इसका अर्थ स्पष्ट कर देगा, वही मेरा उत्तराधिकारी बनेगा।" श्यामपट्ट पर लिखे वाक्य को एक-एक कर सभी शिष्यों ने पढ़ा, लेकिन उसका अर्थ समझने में असमर्थ रहे।

आश्रम के एक कोने में बैठा हुआ एक युवक, जो पिछले पन्द्रह वर्षों से लगातार धान कूटने का कार्य कर रहा था, क्योंकि जिस दिन वह आश्रम में आया था, उसे गुरुदेव ने आज्ञा दी– "तुम उस कोने में बैठकर भण्डारे के लिए धान कूटोगे, जब मैं आवश्यक समझूंगा, तुम्हें बुला लूगां।" जब उसे पता चला, कि गुरुदेव ने परलोक गमन की घोषणा की है, तो उससे रहा नहीं गया, लेकिन गुरु-आज्ञा में बंधा हुआ . . . बेबस . . . आंसू बहाता धान कूटता जा रहा था। तभी उसको लगा– गुरुदेव उसे पुकार रहे हैं. . . और सारे काम छोड़ कर वह दौड़ पड़ा गुरु से मिलने के लिए . . . लेकिन रोक दिया गया. . . कारण पूछा, तो पता चला कि वहां लिखे वाक्य का जो अर्थ समझ सकेगा, गुरुदेव उसी से मिलेंगे। उत्सुकता से भरा वह श्यामपट्ट के पास पहुंचा और जैसे ही उसने वाक्य को पढ़ा, मदमस्त हो कर नृत्य करने लगा, हंसने लगा, उछलने लगा. . . दो-चार शिष्य उसे पकड़ कर ऋषि के पास ले गये और विनती की– "इस नासमझ को क्षमा करें, आपके द्वारा लिखे वाक्य को पढ़कर यह ऐसी क्रियाएं करने लगा है।" शौनिक ने उसे अपने पास बुलाया और समस्त शिष्यों के सामने घोषणा की– "सही अर्थों में मेरे लिखे वाक्य को इसी ने समझा है, क्योंकि **गुरु के वचन अर्थान्वेषण के लिए नहीं, हृदयंगम करने के लिए होते हैं,** जैसा कि इसने किया है, अतः मैं अपनी समस्त तपस्या व ज्ञान की चेतना ऊर्ध्वपात के माध्यम से इसे प्रदान कर अपना उत्तराधिकारी घोषित करता हूं।" सेवा कोई आवश्यक नहीं, कि गुरु के पास रहकर ही की जाय, मीलों दूर रहकर, गुरुत्व का चिन्तन करते हुए भी सेवा की जा सकती है, जिसमें न तो प्रदर्शन हो, न ही स्वार्थ सम्वेदन; **अपने आप को समर्पित कर किया हुआ कोई भी कार्य गुरु सेवा होती है** . . . और तब गुरु की प्रसन्नता स्वतः प्राप्त हो जाती है।

नियम

पाठकों के पत्र

★ प्रिय सम्पादक जी, लुधियाना में सम्पन्न हुए **'गुरु पूर्णिमा शिविर'** के ऑडियो कैसेट भेजने की कृपा करें, वहां हुए अद्वितीय प्रयोग, जो मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर हैं, हो सके तो वीडियो कैसेट भी भेज देवें।

राहुल, वाराणसी

★ महोदय, मैं **अगस्त-९५** में गुरुधाम दिल्ली से कुछ कैसेट लेकर गया था, जिनको सुनने पर जिस दिव्यता, जिस आध्यात्मिक ज्ञान का अनुभव हुआ, वह मैं इस कलम के माध्यम से वर्णन नहीं कर सकता। वास्तव में गुरुदेव ज्ञान के मूर्तिमंत स्वरूप हैं।

करनसिंह कुशवाहा, शकूरपुर

★ **अगस्त-९५** के अंक में पृष्ठ ५७ पर प्रकाशित **'पापांकुशा साधना'** वास्तव में श्रेष्ठ एवं प्रत्येक व्यक्ति द्वारा सम्पन्न करने योग्य साधना है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने पूर्वजन्मकृत दोषों का शमन कर, जीवन को ऊंचाइयों की ओर अग्रसर कर सकता है। वास्तव में आपकी पत्रिका एक श्रेष्ठ, सार्थक पत्रिका है।

कु. प्रेमलता, त्रिनगर, दिल्ली

★ आपकी पत्रिका में सभी साधनाएं श्रेष्ठ, दिव्य एवं चमत्कारिक हैं। मैं चाहता हूं कि प्रत्येक साधना को सम्पन्न करूं, परन्तु आज के व्यस्त युग में मेरे लिए यह सम्भव नहीं हो पा रहा है, मैं क्या करूं? कृपया मार्ग बताएं।

टीकम सिंह, टिहरी गढ़वाल

— आपको पत्रिका में प्रकाशित साधनात्मक ज्ञान अच्छा लगा, इसके लिए धन्यवाद। आप किसी भी साधना को चुनकर, जो आपकी परिस्थिति के लिए अनुकूलतादायक हो, सम्पन्न करें। शेष साधनाएं आपकी धरोहर हैं, जिसे भविष्य में कभी भी उपयोग किया ज सकता है, और लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

—उपसम्पादक

★ हम आपकी पत्रिका में से कई साधनाओं को सम्पन्न कर लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, मगर मंत्रोच्चारण सही है अथवा नहीं, यह बात हमें सन्देह में डाल देती है, और हम साधना नहीं कर पाते। कृपया मंत्र को अंग्रेजी व हिन्दी दोनों भाषाओं में लिख कर समस्या का समाधान करें।

पुष्पा देवी, रोहिणी, दिल्ली

— आपकी समस्या सही है, आपके पत्र से स्पष्ट होता है, कि आप साधनाओं के प्रति जागरूक व उत्सुक हैं। हम आपकी समस्या का समाधान शीघ्र ही करने जा रहे हैं।

— उपसम्पादक

★ आदरणीय सम्पादक जी, आपका अधिक समय न लेकर कुछ अपनी बात पत्रिका के बारे में कहना चाहूंगा— **अप्रैल-९५** अंक में **'गुरु तत्त्व और सद्गुरु रहस्य'** लेख ने मेरी आंखें खोल दीं और श्रीमती संतोष, शकूरपुर, **अगस्त-९५**, 'पाठकों के पत्र' में इनकी बात से पूर्णरूप से सहमत हूं।

बहादुर सिंह राजपूत, कानपुर

★ **मई-९५** अंक में ज्योतिष स्तम्भ में **'दाम्पत्य जीवन में गुरु और शुक्र का प्रभाव'** पढ़कर अत्यधिक प्रभावित हुआ। यह लेख सचमुच प्रशंसनीय और ज्ञानवर्द्धक है, और अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भी। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं, कि आप 'ज्योतिष स्तम्भ' में रत्न और उनके उपरत्न के विषय में अवश्य सामग्री प्रदान करते रहें।

बी.डी.सिंह, कानपुर

★ गुरुदेव! आपने मुझे आंखों की पीड़ा के लिए **'धन्वन्तरी यंत्र'** गले में धारण करने को दिया। जो रोग डॉक्टरी इलाज कराने पर भी नहीं ठीक हो पाया, वह आपके आशीर्वाद तथा इस यंत्र से ठीक हो गया है।

जितेन्द्र कुमार, सोलन, हि.प्र.

★ मुझे आपकी निकलने वाली **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** पत्रिका के **अप्रैल-९५** का **'विशिष्ट सिद्धि विशेषांक'** मिला। मुझे अपने जीवन में यह पहला विशेषांक पढ़कर ऐसा लगा, जैसे एक प्यासे पपीहे को अमृत बूंद मिली, वह बूंद जो एक जीवन जीने का मार्गदर्शन देती है।

श्री नागा बाबा, होशंगाबाद

★ आपकी कृपा से मेरा आज्ञा चक्र जाग्रत हो रहा है। इस प्रक्रिया को कैसे पूर्णता मिलेगी? मैं आपसे भेंट कर जानना चाहता हूं।

सुशील कुमार नायक, धरमजयगढ़

*— यह प्रसन्नता की बात है कि आप जीवन के परमोत्कर्ष **'कुण्डलिनी जागरण'** में आज्ञा चक्र पहुंच गये हैं। आप पूज्य गुरुदेव से मिलने के लिए पत्रिका में वर्णित 'दीक्षा तिथियों' पर आकर दिल्ली गुरुधाम में भेंट करें।*

— उपसम्पादक

सूचना

पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है, कि वे साधना-सामग्री से सम्बन्धित अपना ऑर्डर केवल जोधपुर टेलीफोन नं०-0291-32209 द्वारा लिखाएं, क्योंकि आपके द्वारा भेजा हुआ पत्र कार्यालय को 10 दिन बाद मिलता है, और कार्यालय द्वारा भेजी गई सामग्री आपके पास 10 दिन बाद पहुंचती है। इन 20 दिनों के चक्र में कभी-कभी साधना से सम्बन्धित विशेष दिवस बीत जाता है।

अतः आप इस प्रकार की असुविधा से बचने के लिए अपना ऑर्डर जोधपुर कार्यालय में 24 घंटे में कभी भी नोट करा सकते हैं।

जोधपुर : टेलीफोन नं० - 0291-32209
: फेक्स नं० - 0291-32010

पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है, कि ''गुरुधाम'' दिल्ली कार्यालय में लगा फेक्स नं० बदल गया है। अब आप नये नं० में फेक्स करें—

पहले फेक्स नं० : 011 - 7186700
वर्तमान फेक्स नं० : 011 - 7196700
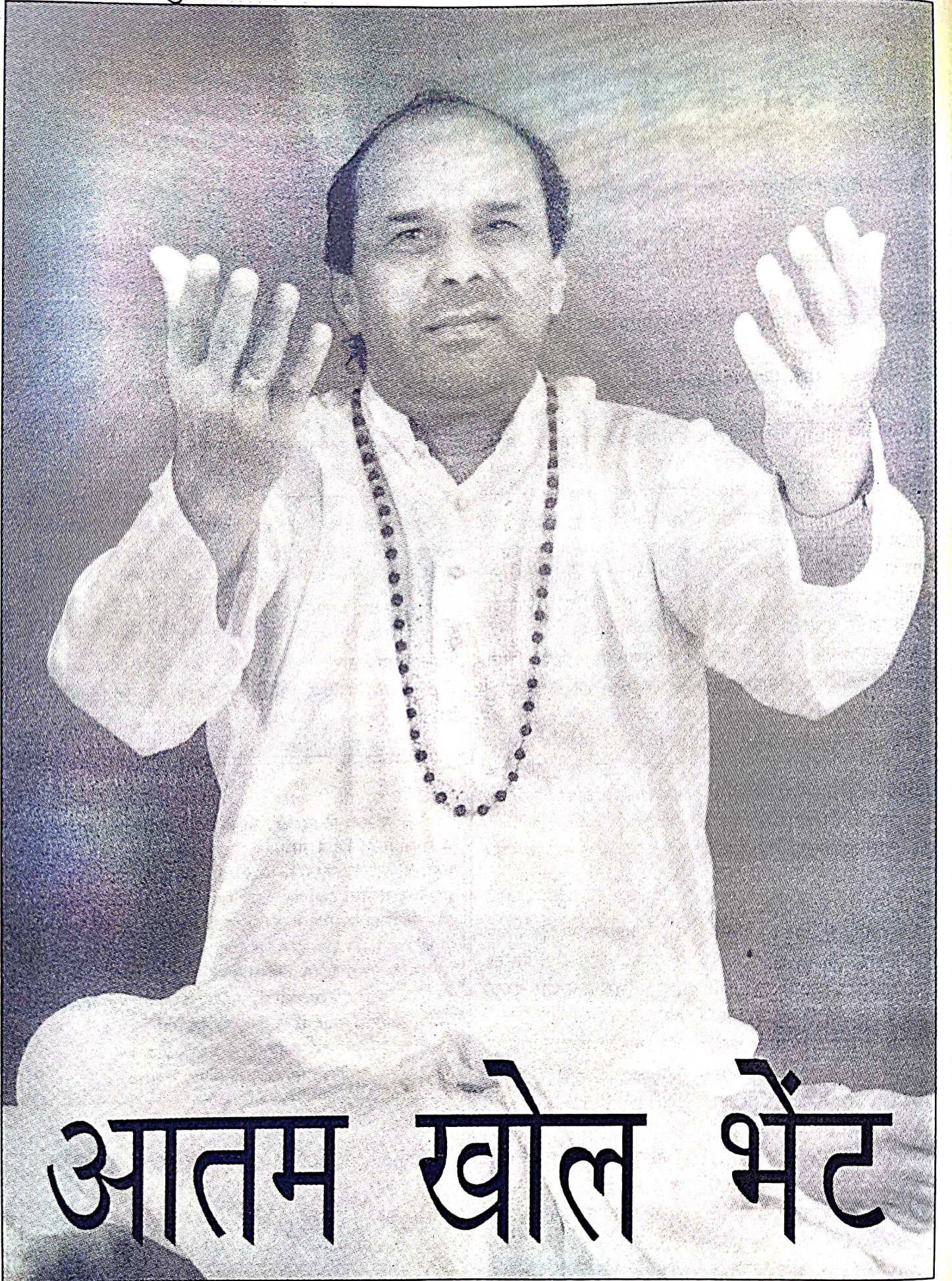
आतम खोल भेंट
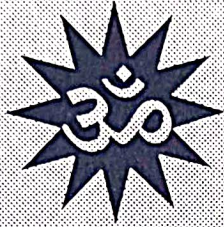
पांच तत्त्व– मिट्टी, जल, वायु, अग्नि और आकाश।

इन्हीं से तो रचा है यह सारा जग-प्रपंच, जो केवल मात्र एक खेल है नियति के हाथों में; क्योंकि इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसकी खोज में तुम रत हो, वह इन पंचतत्त्वों से परे है।

— वह तो तुम्हारे भीतर है।

मेरे आत्मांशों! मैंने हर बार तुम्हें पुकारा है, हर बार पुकारूंगा और तब तक पुकारता रहूंगा, जब तक कि तुम्हारा अपने-आप से मिलन न हो जाय, क्योंकि मैंने एक भी बूंद ऐसी नहीं देखी, जो दरिया न बन गयी हो, एक भी कली ऐसी नहीं देखी, जो फूल न बन गयी हो, एक भी अंश ऐसा नहीं देखा, जो अंशी न बन गया हो, एक भी खंड ऐसा नहीं देखा, जो अखंड न हो गया हो, तो फिर तुम तो मनुष्य हो और सबसे बड़ी बात, कि तुम मेरे शिष्य हो, मेरे आत्मीय हो, मेरे आत्मांश हो; फिर यह कैसे सम्भव हो जायेगा कि तुम ब्रह्म से एकाकार न कर सको, क्योंकि मैंने एक भी ऐसा मनुष्य, एक भी ऐसा अपना शिष्य नहीं देखा, जो ब्रह्म से, अपने लक्ष्य से वंचित रह जाय।

निश्चय ही तुम ब्रह्म बन जाओगे, क्योंकि यही तुम्हारी नियति है, जैसे कली का फूल बन जाना उसकी नियति है, वैसे ही ब्रह्म से एकीकृत हो जाना ही तुम्हारी नियति है. . . और जब यह नियति द्वारा निर्धारित है, तो फिर ऐसा क्यों नहीं हो रहा है. . . स्वाभाविक है मन में उठती यह जिज्ञासा।

समाधान भी तुम्हारे पास है, यदि तुम थोड़ा-सा श्रम करो, तो स्वयं समाधान पा लोगे, क्योंकि तुमने स्वयं अपने चारों तरफ एक ऐसी चारदीवारी खड़ी कर रखी है, जिसके भीतर फंस गये हो तुम।

— किससे भय लगता है, जो तुमने दीवार खड़ी कर ली है?

— तुम्हें भय बाहरी कारणों से नहीं लगता, तुम तो अपने अंदर बैठे ब्रह्म की पुकार से भयभीत

हो, क्योंकि वह तुम्हें बार-बार पुकारता है— "आओ, मेरे पास आओ"... लेकिन तुम उसकी पुकार सुन कर भी अनसुनी कर जाते हो, क्योंकि तुम उस पुकार को, उस आवाज को पहिचानने से कतराते हो, क्योंकि तुम्हें लगता है कि अगर मैंने इसकी आवाज सुनी, इसकी बात मान ली, तो मेरे पास जो कुछ भी धन-दौलत, माता-पिता, पत्नी और बच्चे हैं— सब कुछ खो जायेगा, तुमने स्वयं को सांसारिकता से बांध लिया है और आत्मा की आवाज सुनते ही घबरा उठते हो।

आत्मा हमेशा परमात्मा से मिलन के लिए तड़पती रहती है। इस मिलन की यात्रा पर वही निकलेगा, जिसे यह बात स्पष्ट हो गई हो, कि इस संसार में आनन्द मिलना असम्भव है— और यह तभी स्पष्ट होगा, जबं उसका मन इन सब चीजों से भर जायेगा, और भर जायेगा, तो ब्रह्म से एकाकार करने का मार्ग प्राप्त कर लेगा। लेकिन तुम्हारा मन जरा सा भी भरा नहीं है, कल भी अतृप्त था, आज भी अतृप्त है और कल भी अतृप्त रहेगा। उलझा दिया है तुमने अपने-आप को झूठा आश्वासन, झूठी आशायें देकर। इस संसार में कभी कोई तृप्त नहीं हुआ, क्योंकि उसके पास जो है, वह उससे परेशान नहीं है, उसके प्रति आसक्ति नहीं है; लेकिन जो नहीं है, उसके लिए जरूर परेशान है।

आज तक तुम एक कमरे के मकान में रहते आ रहे हो, लेकिन दूसरों को दो कमरे के मकान में रहता देख कर तुमने दो कमरों का मकान बनाने की इच्छा प्रकट की और उसे पूरा करने के चक्कर में उलझ गए। उस मकान के लिए पैसों की आवश्यकता तो होगी ही, और तुम्हारे पास पचास हजार हैं, लेकिन आवश्यकता एक लाख रुपये की है, जिसको पाने के लिए, तुमने अपना चैन, अपना सुख सब कुछ खो दिया है, उस एक लाख को पाने के लिए अपने परिवार से भी दूर हो गए हो,

—तुम वह बीज हो, जिसमें वृक्ष समाया हुआ है।

— तुम वह शिष्य हो, जिसमें ब्रह्म समाया हुआ है।

— आवश्यकता है, केवल अपनी क्षमता को पहिचानने की।

अपने-आप से भी दूर हो गए हो, एक मशीन, एक रोबोट की तरह कार्यरत हो गए हो।

इसीलिए तो मैं कह रहा हूं, कि तुम्हारे पास जो कुछ है, तुम उसमें उलझे नहीं हो; जो कुछ नहीं है, उसमें उलझे हो। यदि तुम यह कहो कि— लो, मैंने पचास हजार का मोह छोड़ दिया, तो भी कुछ नहीं होने वाला है, क्योंकि तुम एक लाख में उलझे हुए हो— छोड़ना है, तो एक लाख की चाहत छोड़ो... और जिस दिन तुम उसे छोड़ दोगे, उसी दिन तुम अखण्ड वन जाने की क्रिया प्राप्त कर लोगे। तब तुम स्पष्ट हो जाओगे, कि सांसारिक चीजों से मुझे सुख नहीं मिल सकता, मुझे अपने मूल उत्स से मिलन का सुख चाहिए, जिसके लिए मैं बराबर छटपटाता रहता हूं... और जब ऐसा सोच लोगे, तो तुम्हारी आन्तरिक यात्रा प्रारम्भ हो जायेगी, क्योंकि इसके पूर्व तुम बहिर्यात्रा पर थे, दिन-प्रतिदिन, पल-प्रतिपल अपने-आप से दूर चलते चले जा रहे थे, जितना ही तुम अपने से दूर हटोगे, उतना ही तड़पोगे, अशान्त बने रहोगे, क्योंकि तुम अपने स्वभाव के प्रतिकूल चल रहे हो।

अपने से प्रतिकूल चलते हुए तुम धन, पद, प्रतिष्ठा और पुत्र में अपने सुख को ढूंढते रहते हो, लेकिन सुख तो मिला नहीं, हां, दुःख के बादल जरूर दिन-प्रतिदिन गहराते जाते हैं। बहुत ही उलझन है इस संसार में— भाव में अभाव है, सुख में दुःख है, तृप्ति में अतृप्ति है।

तुम्हारी अतृप्ति, तुम्हारा दुःख इन सबने तुम्हें इतनी बुरी तरह से उलझा दिया है— इतनी बुरी तरह से, कि तुम कितना भी प्रयास कर लो, यह उलझन सुलझने की जगह और उलझती चली जाती है... ऐसे समय में आवश्यकता पड़ती है, एक ऐसे सशक्त व्यक्ति की, जो तुमको इस उलझन से बाहर निकाल ले, और वह व्यक्ति एकमात्र 'सद्गुरु' ही होते हैं।

सद्गुरु की क्रिया बहुत ही रहस्य

युक्त होती है, वे तुम से तुम्हारा अज्ञान छीन लेते हैं और वह ज्ञान देते हैं, जिसकी तुम्हें आवश्यकता है, इसीलिए तो सद्‌गुरु के चरणों में आने के बाद तुम तृप्त हो जाते हो।

लेकिन जब तक तुम उनसे दूर रहते हो, तब तक तो यही सोचते हो, कि सद्‌गुरु के पास जाऊंगा और उनसे कोई मंत्र प्राप्त कर एक-दो दिन में ही अथाह सम्पत्ति पा लूंगा और करोड़पति बन जाऊंगा. . . और जब तुम उनके पास पहुंचते हो, तो तुम कभी-कभी अज्ञानतावश निराश हो जाते हो, क्योंकि जो तुम दूर रहकर सोचते हो, वह वहां प्रत्यक्षतः प्राप्त होता नहीं दिखता। आकाश को धरा पर से निहारने से वह नीला दिखता है, लेकिन वास्तव में क्या उसका कोई रंग है? कभी सोचा है— ऐसा क्यों है?

— ऐसा इसलिए है, क्योंकि आकाश का अपना कोई रंग होता नहीं है, बस दिखाई देता है। इस आकाश के नीले रंग की तरह ही तुमने सद्‌गुरु की कल्पना कर रखी है, और एक-दो दिन में करोड़पति बनने का सपना संजो बैठते हो।

— वह तुम्हें करोड़पति बनाता है, लेकिन उस रूप में नहीं, जिस रूप में तुम चाहते हो। तुम रुपये-पैसे से करोड़पति बनना चाहते हो, बहुत अधिक धनराशि प्राप्त करना चाहते हो. . . और सद्‌गुरु तुम्हें तुम्हारे अन्दर निहित धनराशि को प्रदान कर करोड़पति बनाने का प्रयास करता है, क्योंकि उन्हें मालूम है, कि तुम वास्तव में किस धन के लिए तड़प रहे हो। वह तुम्हारे भ्रम को तोड़ता है, और तुम्हें वास्तविकता के धरातल पर लाकर खड़ा कर देता है, लेकिन तुम अपनी वास्तविकता को देखते हुए भी उसे पहिचानने से इंकार कर देते हो, इसीलिए तो तृप्त होकर भी अतृप्त रह जाते हो।

— अरे! बाहर तो सभी दौड़ते हैं और तुम भी दौड़ रहे हो, लेकिन गुरु का प्रयास सार्थक होने दो, अपने अन्दर की यात्रा प्रारम्भ करो। जिस दिन तुम अपने अन्दर की यात्रा प्रारम्भ करते हो, उसी दिन, उसी क्षण तृप्ति का भाव, आनन्द का भाव तुम्हें प्राप्त होने लगता है और तुम अपनी नजरों में हो जाते हो— गौरव-मण्डित, महिमा-मण्डित।

तुम इस धरा पर परमात्मा से मिलने आये हो, ठीक बूंद, नदी और सागर की तरह ही तो तुम्हारे जीवन की भी यात्रा है। जब तक बूंद नदी नहीं बनती और जब तक नदी सागर से नहीं मिलती, तब तक तड़पती रहती है, अपने उद्दाम वेग से पर्वतों को लांघती, बांधों को तोड़ती सागर से मिलने के लिए भागती रहती है. . . और जब वह सागर से जा मिलती है, पूर्ण शान्त हो जाती है; क्योंकि बूंद ने सागर तक की यात्रा पूरी कर ली है।

ऐसी ही तो तुम्हारी भी जीवन-यात्रा है— तुम ब्रह्म से मिलने के लिए बेताब हो और भागते जा रहे हो. . . और जब तुम अपने अन्दर लौटते हो, तब तुम शान्त हो जाते हो, क्योंकि सामने ही तुम्हारा ब्रह्म, तुम्हारा इष्ट, तुम्हारे गुरु तुमको दिखने लग जाते हैं।

यह अन्तर् मार्ग ही तो तुम्हारे जीवन में तृप्ति, आनन्द और पूर्णता का भाव प्रदान करने की क्षमता लिए हुए है, जिस पर 'सद्‌गुरु' तुम्हें चलाने के लिए बार-बार तुम्हारा हाथ पकड़ कर अपने पास खींचता है; उसके द्वारा बार-बार अपने पास बुलाना— इससे यह मत सोच लेना, कि उसे कोई स्वार्थ है, जिसे वह तुम्हारे द्वारा पूरा करना चाहता है। ऐसा नहीं है, वह तो अपनी सारी आवश्यकताओं को पूरा किये बैठा है; लेकिन उसे मालूम है, कि तुम क्यों अतृप्त बने संसार में भटक रहे हो. . . और तुम्हारा यह भटकाव, तुम्हारा दुःख वह सहन नहीं कर पाता, क्योंकि सद्‌गुरु को भी तो ब्रह्म ही कहा गया है और यथार्थतः देखा जाय तो, 'गुरु' ही 'ब्रह्म' है, इसमें कोई दो राय नहीं है।

— और जब गुरु ब्रह्म है, तो उसे अपने आत्मांशों को अपने में एकाकार कर लेने का दर्द बराबर टीसता रहता है, साथ ही वह तुम्हारी वेदना भी नहीं सहन कर पाता, इसीलिए तो बार-बार तुमको पुकारता है, तरह-तरह के प्रलोभन देता है, विविध साधनाएं, विविध दीक्षाएं प्रदान करता है, जिसके लिए तुम बहिर्यात्रा कर रहे हो, उसे पूर्ण करने का उपाय बताता है।

— ऐसा इसलिए कि तुम बार-बार उसके निकट आओ. . . और एक समय तो ऐसा आयेगा ही, जब तुम उस ब्रह्म को पहिचान जाओगे, जिससे तुम बिछुड़े थे। जिस क्षण तुम अपने मूल उत्स को पहिचान लोगे, उसी दिन तुम तृप्त हो जाओगे।

— हर बार की तरह इस बार भी मेरी बात सुन कर अनसुनी न कर देना। एक बार मेरी बात मान कर तो देखो, क्योंकि जिस क्षण तुम कली से फूल बनोगे, उस क्षण तुम खुद सौन्दर्य, सम्पन्नता और सुगन्ध से भरपूर हो ही जाओगे। इतना ही नहीं, अपने आस-पास के वातावरण को भी सुगन्ध से आप्लावित कर दोगे।

तभी तो कहता हूं, अपने अन्दर के मार्ग का अनुसरण करो, बाहरी मार्ग पर चलना तो स्वतः ही सुगम हो जायेगा और सारी इच्छाएं, कामनाएं भी स्वतः ही पूरी हो जायेंगी।

यह योजना मात्र ३० दिनों के लिए है. . .
गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान का
एक उपहार
सिद्धाश्रम प्राप्ति यंत्र 2" X 2"
दिव्यतम वस्तुएं अपनी उपस्थिति की पहिचान करा ही देती हैं. . . उन्हें प्रचारित व प्रसारित करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, इत्र स्वयं अपनी उपस्थिति का आभास दिला देता है. . . वैसे ही यह विशेष यंत्र जहां रहता है, वहां धन का मार्ग स्वतः ही खुल जाता है. . . धन का आगमन अपना मार्ग स्वतः बना लेता है. . . फिर यह सौभाग्य आपके द्वार आया है . . . निर्णय आपको करना है. . .
वर्ष १९९५ की सदस्यता प्राप्त कर . . . यदि आप सदस्य हों, तो अपने मित्र या रिश्तेदार को सदस्य बनावें और प्राप्त करें मुफ्त यह यंत्र उपहार स्वरूप. . . आप सिर्फ पोस्टकार्ड भर कर भेज दें. . . बाकी का कार्य हमारा . . .
वार्षिक सदस्यता शुल्क – १८०/-
डाक खर्च अतिरिक्त – १५/-
सम्पर्क
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209,फेक्सः 0291-32010
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोनः 011-7182248, फेक्सः 011-7196700

महालक्ष्मी साधना

लक्ष्मी पूजन मुहूर्त

२३-१०-९५ की रात्रि को लक्ष्मी पूजन है, राशि के अनुसार निम्न समयों पर लक्ष्मी पूजन किया जाय, तो ज्यादा उचित रहेगा–

राशि	समय
मेष	सायं ७.२० से ७.४५ तक
वृषभ	सायं ७.३१ से ८.४० तक
मिथुन	सायं ७.५० से ८.५१ तक
कर्क	सायं ८.३० से ९.१५ तक
सिंह	सायं १.४० से २.०० तक
कन्या	सायं ९.०० से १०.३० तक
तुला	सायं १०.०० से ११.१५ तक
वृश्चिक	सायं १.४८ से ४.०५ तक
धनु	सायं २.०० से ३.१५ तक
मकर	सायं ३.१५ से ४.०० तक
कुंभ	सायं ७.२५ से ८.२५ तक
मीन	सायं १.४८ से ४.०५ तक

यों वृषभ लग्न सायं ७.२० से ९.१६ तक तथा सिंह लग्न अर्द्ध रात्रि में १.४८ से ४.०५ तक है, जो सभी के लिए पूज्य है।

हमारे जीवन का प्रत्येक क्षेत्र लक्ष्मी से जुड़ा है, लक्ष्मी को छोड़कर उदात्त जीवन या पूर्ण जीवन की व्याख्या अधूरी ही रहेगी। जीवन के प्रारम्भ से अन्तिम समय तक सारा उपक्रम ही लक्ष्मीमय है। गृहस्थ जीवन का एकमात्र आश्रय ही लक्ष्मी है। समय के साथ-साथ समाज के रीति-रिवाज, मान्यताएं तथा व्यवस्था बदलती रहती है, आज से सौ साल पहले धन के लिए इतनी भाग-दौड़ नहीं थी, क्योंकि वे संग्रह पर विश्वास नहीं करते थे, अतः व्यर्थ की आवश्यकताओं को वे जीवन का अंग नहीं मानते थे।

किन्तु आज सभी मान्यताएं बदल गई हैं, लोगों की आवश्यकताओं के साथ-साथ उनकी भाग-दौड़ की गति तेज हो गई है, धन प्राप्ति की उधेड़बुन में ही जीवन का स्वर्णिम काल अनजाने में ही ढल जाता है। यदि किसी का बच्चा स्कूल में पढ़ता है, तो उसकी फीस समय पर जमा हो जाय, उसका बच्चा अच्छे कपड़े पहिने तथा पढ़ते समय उसे हर आवश्यक सुविधा मिले– सभी गाता-पिता यही चाहते हैं, कि उनका पुत्र अच्छी-से-अच्छी

सुविधा प्राप्त करे तथा भविष्य में कुछ बने, जो समाज के और देश के काम आये, यह तभी सम्भव है, जबकि उसके पास धन हो।

यदि घर में जवान लड़की बैठी है, पढ़ी-लिखी है, खूबसूरत है, आवश्यकतानुसार प्रत्येक कार्य में दक्ष है, परन्तु धन के अभाव में उसकी शादी नहीं हो पा रही है, तो ऐसी स्थिति में माता-पिता को कभी भी चैन की नींद नहीं आ सकती, वे सारी रात निश्चित ही जागकर या आंसू बहाकर बिताते होंगे. . . यह जीवन का अंधेरा पक्ष है, क्योंकि उस घर में विवाह के लिए धनाभाव है।

यदि कोई लाइलाज बीमारी से ग्रस्त हो गया है, तो उसका इलाज करना ही पड़ेगा, क्योंकि जीवन अमूल्य है, उसे बचाने के लिए अस्पताल में दाखिल होना पड़ेगा— उसके लिए धन चाहिए।

आज तो सब कुछ 'धन' में ही सिमट कर रह गया है, धन से अलग होकर जीवन एक पग भी नहीं सरक सकता। एक अच्छा पढ़ा-लिखा, स्वस्थ चिन्तन रखने वाला प्रबुद्ध वर्ग में पला हुआ, अपने प्रत्येक कर्त्तव्य के प्रति सजग और चेतनावान व्यक्ति, चाहे वह डॉक्टर हो, इंजीनियर हो या बड़ा भारी व्यवसायी हो अथवा कोई भी हो, यदि उसके पास धन नहीं है, तो उसके सभी प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं, क्योंकि व्यक्ति की प्रतिभा वर्तमान युग में पूर्णतः धन पर आधारित है। जीवन के प्रत्येक पग पर धन की आवश्यकता पड़ती ही है, अतः अपने जीवन को सुचारु रूप से गतिशील करने के लिए आवश्यक है, आप पहले लक्ष्मी प्राप्त करें, लक्ष्मी की उपासना करें, लक्ष्मी की आराधना करें, अन्यथा जीवन के दौर में पीछे रह जायेंगे।

धनवान या लक्ष्मीवान होना अपराध नहीं है, यह तो मानव जीवन की श्रेष्ठता है, श्री सम्पन्न होना सौभाग्य एवं श्रेष्ठता का प्रतीक है। इतना अवश्य सोचना चाहिए, कि धनागम अनैतिक कार्यों से न हों, किसी को कष्ट देकर या पीड़ित करके धन संचय न करें। इज्जत, मान एवं परिश्रम पूर्वक धनार्जन करने का प्रयास करें।

हमारे पूर्वज जिनके हम वंशज हैं, हमारे ऋषि-मुनि कभी भी अभाव में नहीं पले, लक्ष्मी उनके दरवाजे की चेरी बनी रही। 'वशिष्ठ' ऋषि थे, त्यागी थे, किन्तु अपार सम्पदा के स्वामी भी थे, वे दशरथ जैसे राजा को भी समय आने पर ऋण दिया करते थे; विश्वामित्र भी एक पक्ष हैं, लक्ष्मी यदि घर में न आना चाहे, तो फिर भी हठात् उसे घर में लाकर खड़ा कर दिया और जीवन भर उसे अपने पास रहने के लिए वाध्य कर दिया।

इसे क्षमता कहते हैं; यही पौरुषता, यही अदम्यता और यही ओजस्विता लक्ष्मी को अंग-संग करने के लिए, गले लगाने के लिए आप में भी है, किन्तु आप उस रहस्य को समझ नहीं पा रहे हैं। इसमें आपकी गलती नहीं है, आपको एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है, जो याद दिलाये कि आप लक्ष्मी पुत्र हैं।

लक्ष्मी स्वयं नहीं आती, उसे तो बलपूर्वक प्राप्त किया जाता है, पकड़ा जाता है, तभी वह स्थिर रह सकती है।

दरिद्रता दुर्भाग्य की सूचक है, अभिशाप है, जब लाख प्रयत्न करने पर भी दरिद्रता की गहरी रेखा, जो आपके भाग्य में ब्रह्मा ने खींच दी है, नहीं मिट पा रही हो, अभाव और चिन्ता के दो पाटों में आपका जीवन पिस रहा हो, लक्ष्मी को घर में लाने के लिए कोई भी उपाय सफल नहीं हो रहा हो, तब आप साधना का आश्रय लें।

— यही आपके लिए एकमात्र उपाय है, जिससे आप लक्ष्मीवान हो सकते हैं, क्योंकि अब आप मात्र अपने प्रयास से लक्ष्मी वशीकरण नहीं कर सकते, अतः किसी विश्वामित्र के चरण पकड़िये, श्रद्धापूर्वक नत होकर उनके चरणों में बैठिये, वे ही लक्ष्मी-लाभ के सुगम उपाय से आपको परिचित करा सकते हैं, उनके पास इसका रहस्य सन्निहित है, छुपा हुआ है— केवल श्रद्धा और सेवा के माध्यम से ही उस रहस्य को हस्तगत किया जा सकता है।

भगवान विष्णु की शक्ति "लक्ष्मी" सर्वव्यापिका हैं। त्रिगुणमयी पराशक्ति, परमेश्वरी महालक्ष्मी ही सृष्टि की आदिकारण एवं मूलाधार हैं।

— जो आनन्द और आनन्द रूपा हैं।

— जो ब्रह्म भी हैं और अब्रह्म भी।

— जो दृश्य और अदृश्य रूप से सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त करके स्थित हैं।

लक्ष्मी को प्राप्त करना, धनवान होना, आपका पहला कर्त्तव्य है, क्योंकि धन से ही जीवन का पहला पड़ाव शुरू होता है; ऋग्वेद में प्राप्त "श्री सूक्त" इसका स्पष्ट प्रमाण है, कि आर्य भी लक्ष्मी की साधना सम्पन्न कर ऐश्वर्यवान बनते रहे हैं और इसी से ही समृद्धि, सम्पत्ति, आयु, आरोग्य, पुत्र, पौत्र, धन-धान्य की प्राप्ति करते रहे हैं।

केवल परिश्रम से भी श्रीमान् बनना संभव नहीं है, अधिक पढ़ाई करके भी लक्ष्मीवान नहीं बना जा सकता— लोगों के मन में यह भ्रामक धारणा बैठ गई है, कि परिश्रम से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है; किन्तु कई व्यक्ति बहुत परिश्रम करते हैं, अपने खून को रात-दिन जलाते हैं, फिर भी उनके जीवन में अभाव बना ही रहता है।

परिश्रम के अलावा भाग्य का भी बहुत बड़ा हाथ है। इस स्थिति में एक ही उपाय शेष रहता है, जिससे भाग्य में परिवर्तन किया जा सकता है, यदि भाग्य में दरिद्रता लिखी है, तब भी उसे सौभाग्य में परिवर्तित कर श्री, सम्पन्नता लिखी जा सकती है, और वह तत्त्व है— 'साधना'।

साधक जिस दिन लक्ष्मी साधना को सम्पन्न करना चाहें, उस दिन प्रातःकाल उठकर शय्या पर बैठे हुए ही **'श्रीं ह्रीं श्रीं'** इस लघु बीज मंत्र का **ग्यारह बार उच्चारण** करें, फिर शय्या का त्याग करें।

दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर शुद्ध धौत वस्त्र पहिनें, पूजागृह में पीला आसन बिछा कर **पूर्व** या **उत्तर दिशा** की ओर मुख करके बैठ जायें। इस पूजन को सम्पन्न करते समय साधक अपनी पत्नी, बच्चों तथा परिवार के अन्य सदस्यों को भी अपने साथ सम्मिलित कर सकते हैं।

पूजन प्रारम्भ करने से पूर्व ही पूजा की सभी सामग्री को एकत्र कर अपने पास रख लें, जिससे बार-बार आपको उठना न पड़े। पूजन के लिए निम्न वस्तुओं की आवश्यकता पड़ेगी—शुद्ध जल, गंगाजल (यदि उपलब्ध हो तो), कुंकुम, गन्ध, अक्षत, पुष्प, दूर्वा, पंचामृत, दूध, दधि, घी, शक्कर, शहद, कर्पूर, दीप, अगरबत्ती, धूप, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, सिन्दूर, सुगन्धित तैल, पुष्पमाला, अबीर, गुलाल, नैवेद्य के लिए मिष्ठान्न, फल, पान, लौंग, इलायची, दक्षिणा हेतु द्रव्य, लक्ष्मी को अर्पित करने के लिए वस्त्र, मौली, यज्ञोपवीत, पंचपात्र-आचमनी, अर्घ्यपात्र, निर्माल्य पात्र, कलश, शंख, प्लेट, थाली, स्फटिक माला एवं महालक्ष्मी यंत्र व चित्र।

आसन पर शान्त चित्त बैठ कर पूजन क्रम प्रारम्भ करें—

पवित्रीकरण :

सर्वप्रथम अपने बायें हाथ में आचमनी से जल लेकर दाहिने हाथ से ढक लें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

मंत्रोच्चारण के बाद हाथ में लिए जल को अपने ऊपर छिड़क लें।

आचमन :

मन, वाणी तथा अन्तरात्मा की शुद्धि के लिए निम्न मंत्र को बोलते हुए तीन बार आचमनी से जल लेकर पीयें—

ॐ केशवाय नमः।
ॐ नारायणाय नमः।
ॐ माधवाय नमः।

आचमनी से जल लेकर हाथ को धो लें।

शिखाबन्धन :

अपनी शिखा को गांठ लगायें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

चिद्रूपिणि महामाये दिव्य तेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे।।

न्यास :

तत्पश्चात् निम्न मंत्रों का उच्चारण कर अपने शरीर के अंगों को पुष्ट होने की भावना करें—

कर न्यास

ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ श्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

अंग न्यास

ॐ श्रां हृदयाय नमः।
ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ श्रूं शिखायै वषट्।
ॐ श्रैं कवचाय हुम्।
ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ श्रः अस्त्राय फट्

आसन शुद्धि :

ॐ पृथ्वि! त्वया धृतालोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

इस मंत्र को बोलकर अपने आसन के दाहिने कोने को उठाकर, भूमि पर श्वेत चन्दन से त्रिकोण बनाकर गन्ध, अक्षत

पुष्प अर्पित करते हुए निम्न मंत्र बोलें—

ॐ आधारशक्तये नमः, ॐ कूर्मासनाय नमः
ॐ अनन्तासनाय नमः, ॐ विमलासनाय नमः
ॐ आत्मासनाय नमः।

दिग् बन्ध :

अपने दाहिने हाथ में थोड़ा-सा अक्षत ले लें और बायें हाथ से सभी दिशाओं में छिड़कते हुए निम्न मंत्रोच्चारण करें—

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूताः भूमिसंस्थिताः।
ये भूताः विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

तत्पश्चात् अपनी बायीं एड़ी से भूमि पर तीन बार आघात करें।

भूमि शुद्धि :

इस क्रिया को सम्पन्न करने हेतु भूमि पर दाहिना हाथ रखें और मंत्रोच्चारण करें—

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया
विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ
पृथिवीन्दृ (गूं) ह पृथिवीं मा हि (गूं) सीः।।

भूत शुद्धि :

भूत शुद्धि करना प्रत्येक पूजा में आवश्यक है, क्योंकि पवित्रीकरण आदि स्थूल शरीर को पवित्र करते हैं, किन्तु सूक्ष्म शरीर की पवित्रता भूत शुद्धि द्वारा ही सम्भव होती है, इसके लिए निम्न क्रिया करनी चाहिए—

''ॐ हंसः सोऽहं''

इस मंत्र का मन में उच्चारण करते हुए अपनी दायीं नासिका से सांस लेकर बायीं से निकाल दें। यह क्रिया तीन बार करें।

भैरव पूजन :

पूजा प्रारम्भ करने से पूर्व भैरव का ध्यान करें तथा हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें— ''आप मेरे इस पूजा क्रम को निर्विघ्न समाप्त होने में सहायक बनें''—

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।
ॐ भं भैरवाय नमः ।।

शंख पूजन :

एक प्लेट में कुंकुम से 'स्वस्तिक' अंकित कर उस पर शंख स्थापित करें और प्लेट को लक्ष्मी चित्र के बायीं ओर स्थापित कर पुष्प, अक्षत, गन्ध चढ़ाते हुए निम्न मंत्र बोलें—

ॐ शं पांचजन्याय नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः शंखस्थ देवतायै नमः ध्यायामि, आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे समर्पयामि, नमस्करोमि।

घंटा पूजन :

''ॐ घंटास्थ देवतायै नमः'' मंत्र का उच्चारण करते हुए गन्ध, अक्षत, पुष्प द्वारा घंटा का पूजन करें। लक्ष्मी को स्नान, धूप, दीप, नैवेद्य, द्रव्य व नीराजन अर्पित करते समय घंटा बजायें।

गणपति पूजन :

हाथ जोड़ कर भगवान गणपति का स्मरण करें—

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः, उमामहेश्वराभ्यां नमः, वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः, शची पुरन्दराभ्यां नमः, मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः, इष्टदेवताभ्यो नमः, ग्राम देवताभ्यो नमः, स्थान देवताभ्यो नमः, कुलदेवताभ्यो नमः, वास्तुदेवताभ्यो नमः, सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः।
शुक्लाम्बर धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजं।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।
ॐ गं गणपतये नमः।

गणपति के चित्र पर दूर्वा अर्पित करें।

स्वस्तिवाचन :

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्वदेवाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पति र्दधातु।
ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता आदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति र्वनस्पतयः शान्तिः विश्वेदेवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्व(गूं) शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

संकल्प

दायें हाथ में जल लेकर निम्न संदर्भ का उच्चारण करें—

ॐ तत्सत् नमः परमात्मने श्री प्रदाय पुरुषोत्तमाय श्री मद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तैक देशान्तरगते पुण्य क्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथम चरणे, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुकवासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नः, अमुक नाम (शर्माहं) धर्मार्थ काम मोक्ष प्राप्ति निमित्तं श्री महालक्ष्मी पूजनं करिष्ये।

जल भूमि पर छोड़ दें।

कलश पूजन :

कलश (ताम्र, पीतल या मिट्टी) को जल से भर कर अपनी बायीं ओर रखें और वरुण का ध्यान करें—

नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।
श्री वरुणदेवं ध्यायामि, आवाहयामि, पूजयामि।

तत्पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षय कारकाः।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदो सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशे तु समाश्रिताः।।

हाथ में रखे अक्षत को कलश के ऊपर चढ़ा दें, फिर पंचोपचार या षोडशोपचार से कलश का पूजन करके, कलश के ऊपर दायां हाथ रखकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदन्मसि वरुणस्य ऋत सदनमासीत्।
ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

इसके बाद कलश के जल में गन्ध, अक्षत एवं पुष्प डालकर तीर्थों का आवाहन करें—

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
पुष्पकराद्यानि तीर्थानि गंगाद्यास्सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदा मम।।

कुंकुम से कलश पर पांच बिन्दियां लगायें और मंत्रोच्चारण करें—

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः। पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः। कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः।।

तत्पश्चात् कलश में पांच पत्ते (आम, पीपल या अशोक वृक्ष के पत्ते प्रयोग कर सकते हैं) रखें। एक कटोरी को अक्षत से अच्छी तरह भर कर, उसके ऊपर कुंकुम से "अष्टदल कमल" या "स्वस्तिक" अंकित करें, कटोरी को कलश पर रखें और उस पर महालक्ष्मी यंत्र स्थापित कर दें।

कलश प्रार्थना :

दोनों हाथ जोड़ें—

देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयं।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा सपैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।
सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।
प्रसन्नो भव; वरदो भव; अनया पूजया वरुणाद्यावाहिता देवता प्रीयन्तां न मम।

ध्यान :

भगवती महालक्ष्मी का ध्यान करें—

उद्यदादित्य संकाशां बिल्वकाननमध्यगाम्।
तनुमध्यां श्रियं ध्याये अलक्ष्मी परिहारिणीम्।।

उदित होते हुए सूर्य की कान्ति जैसी प्रभाव वाली, बेल के वन के बीच में रहने वाली, निर्धनता आदि दुःखों को मिटाने वाली भगवती लक्ष्मी का अत्यन्त श्रद्धापूर्वक मैं ध्यान करता हूं।

आवाहन :

सर्वलोकस्य जननीं सर्वसौभाग्यदायिनीं।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम्।।

आसन :

आवाहन के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए भगवती को आसन प्रदान करें—

तप्तकांचनवर्णाभं मुक्तामणि विराजितं।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

पाद्य :

इसके बाद पाद्य देने हेतु पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

सर्वतीर्थ समुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतं।
मया दत्तं गृहाणेदं भगवति भक्त वत्सले।।

अर्घ्य :

निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्घ्य देने के लिए दायें हाथ में जल लेवें—

अष्टगंधां समायुक्तं स्वर्णपात्र प्रपूरितं।
अर्घ्यं गृहाण देवेशि महालक्ष्म्यै नमोऽस्तुते।।

आचमन :

अर्घ्य के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए आचमन के निमित्त जल का निक्षेप करें—

सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मा विष्णु शिवादिभिः।
स्तुता ददाम्याचमनं महालक्ष्म्यै मनोहरम्।।

स्नान :

आचमन के बाद स्नान हेतु निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए यंत्र पर जल चढ़ावें—

पंचामृत समायुक्तं जाह्नवी सलिलं शुभं।
गृहाण विश्व जननि स्नानार्थं भक्त वत्सले।।

वस्त्र :

स्नान के बाद निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए वस्त्र का जोड़ा समर्पित करना चाहिए—

दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वति मनोहरं।
दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके।।

उपवस्त्र :

निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए उपवस्त्र अर्थात् कंचुकी समर्पित करनी चाहिए—

कंचुकी उपवस्त्रं च नाना रत्नैः समन्वितं।
गृहाण त्वं मया दत्तं मंगलाः जगदीश्वरि।।

मधुपर्क :

निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए घी, शहद और दधि मिलाकर समर्पित करें—

कपिलं दधि कुन्देन्दु धवलं मधु संयुतं।
स्वर्ण पात्र स्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण मे।।

आभूषण :

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए आभूषण समर्पित करें—

रत्नकंकणवैदूर्य मुक्ताहारादिकानि च।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व मे।।

श्वेत चन्दन :

निम्न मंत्र बोलते हुए श्वेत चन्दन समर्पित करें—

श्री खण्डागरु कर्पूर मृगनाभि समन्वितं।
विलेपनं गृहाण त्वं नमोऽस्तु भक्तवत्सले।।

रक्त चन्दन :

निम्न मंत्र बोलते हुए रक्त चन्दन समर्पित करें—

रक्तचन्दन सम्मिश्रं पारिजात समुद्भवं।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्ध संयुतम्।।

सिन्दूर :

निम्न मंत्र बोलते हुए सिन्दूर समर्पित करें—

सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूर तिलक प्रिये।
भक्त्या दत्तं मया देवि! सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

कुंकुम :

निम्न मंत्र बोलते हुए कुंकुम समर्पित करें—

कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणं।
अखण्ड काम सौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम्।।

सुगन्धित तैल :

निम्न मंत्र बोलते हुए सुगन्धित तेल समर्पित करें—

तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरि।।

अक्षत :

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए अक्षत समर्पित करें—

अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणि समन्वितान्।
गृहाण त्वं महादेवि देहि मे निर्मलां धियम्।।

पुष्पमाला :

निम्न मंत्रोच्चारण के साथ पुष्पमाला समर्पित करें—

पद्मशंखजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रतां।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि।।

दूर्वा :

निम्न मंत्र बोलते हुए दूर्वा समर्पित करें—

विष्ण्वादि सर्वदेवानां प्रियां सर्व सुशोभनां।
क्षीर सागर सम्भूतां दूर्वां स्वीकुरुष्व तां।।

अबीर, गुलालः

निम्न मंत्र बोलते हुए अबीर, गुलाल समर्पित करें—

अबीरं च गुलालं च चोबा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चिता देवि ततः शान्तिं प्रयच्छ च।।

धूप :

निम्न मंत्र से धूप समर्पित करें—

वनस्पति रसोद्भूतो गंधाढ्यः गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दीपक :

निम्न मंत्र से दीप प्रदर्शित करें—

कर्पूरवर्ति संयुक्तं धृत युक्तं मनोहरं।
तमो नाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि।।

नैवेद्य :

निम्न मंत्र से नैवेद्य समर्पित करें—

नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्य भोज्य समन्वितं।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं महालक्ष्म्यै नमोऽस्तुते।।

ऋतुफल :

निम्न मंत्र से ऋतुफल समर्पित करें—

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरं।
तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।।

आचमन :

निम्न मंत्र से आचमनार्थ जल का निक्षेप करें—

शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितं।
आचम्यतामिदं देवि प्रसीद त्वं सुरेश्वरि।।

ताम्बूल :

निम्न मंत्रोच्चारण के साथ ताम्बूल समर्पित करें—

एला लवंग कर्पूर नागपत्रादिभिर्युतं।
पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

दक्षिणा :

निम्न मंत्र से दक्षिणा के रूप में द्रव्य समर्पित करें—

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्य फलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे।।

निम्न मंत्र की तीन माला **"स्फटिक माला"** से जप करें—

मंत्र :

।।ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी आगच्छ ॐ।।

नीराजन (आरती) :

मंत्र-जप के वाद "आरती" करें—

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हर विष्णू धाता।।
ॐ जय लक्ष्मी. . .

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुमहीं जगमाता।
सूर्य, चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।।
ॐ जय लक्ष्मी. . .

दुर्गारूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता।।
ॐ जय लक्ष्मी. . .

तुम पाताल निवासिनि, तुम हो शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भव निधि की त्राता।।
ॐ जय लक्ष्मी. . .

जिस घर तुम रहतीं, तहँ सव सद्गुण आता।
सव सम्भव हो जाता, मन नहीं घवराता।।
ॐ जय लक्ष्मी. . .

तुम विन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो राता।
खान-पान का वैभव, सव तुमसे आता।।
ॐ जय लक्ष्मी. . .

शुभ गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम विन, कोई नहीं पाता।।
ॐ जय लक्ष्मी. . .

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पार उतर जाता।।
ॐ जय लक्ष्मी. . .

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हर विष्णू धाता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता।।

पुष्पाञ्जलि :

आरती के पश्चात् खुले पुष्प लेकर निम्न मंत्रोच्चारण के साथ लक्ष्मी के चित्र व यंत्र पर अर्पित करें—

चरणकमलयुग्मं पंकजैः पूजयित्वा।
कनककमलमाला कंठदेशेऽर्पयित्वा।।
शिरसि विनिहितोऽयं मन्त्रपुष्पांजलिस्ते।
हृदयकमलमध्ये देवि हर्षं तनोतु।।
पुष्पांजलिं गृहाणेमां परब्रह्मस्वरूपिणि।
भक्त्या समर्पितं देवि प्रसन्नो भव सर्वदा।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि।।

नमस्कार—

अत्यन्त भक्ति-भाव से दोनों हाथ जोड़कर लक्ष्मी को प्रणाम करें—

नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्री पुरगते,
नमः पद्मातव्यां कुतुकिनि नमो रत्नगृहगके।
नमः श्रीचक्रस्थेऽखिलमयि नमो बिन्दुनिलये;
नमः कामेशांकस्थितिमति नमस्तेऽम्ब ललिते।।

जयतु जयतु देवि देवसंघात पूज्या
जयतु जयतु भद्रा भूमरूपा भवानि।
जयतु जयतु नित्या निर्मलज्ञानवेद्या
जयतु जयतु संवित् सच्चिदानन्दरूपा।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः नमस्करोमि।

क्षमा प्रार्थना :

साधक को चाहिए, कि अत्यन्त विनम्रता पूर्वक लक्ष्मी देवी से पूजा में अज्ञानतावश रह गई त्रुटियों के लिए क्षमा-याचना करें—

अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे।
कोऽपरः सहते लोके केवलं मातरं विना।।
भूमौ स्खलित पादानां भूमिरेवावलम्बनम्।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे।।

विशेषार्घ्य :

साधक अपने दाहिने हाथ में आचमनी से जल, अक्षत और पुष्प लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करें—

गोक्षीरेण युतं देवि गन्धपुष्पसमन्वितम्।
अर्घ्यं गृहाण वरदे वरलक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।।
अनया पूजया श्री वरलक्ष्मी प्रीयन्ताम्।
ॐ ब्रह्मार्पणमस्तु।।

प्रसाद वितरण :

लक्ष्मी का पूजन पूर्ण करने के पश्चात् नैवेद्य के रूप में अर्पित मिष्ठान्न को पूरे परिवार में, प्रसाद रूप में वितरित कर, स्वयं भी ग्रहण करें। कलश पर स्थापित यंत्र को पन्द्रह दिनों तक अपने भण्डार गृह में अथवा पूजागृह में ही रखा रहने दें। सोलहवें दिन यंत्र को पवित्र जल में प्रवाहित कर दें। कलश के जल को पूरे घर में तथा परिवारजनों पर छिड़कें। पूजन में प्रयुक्त पुष्प तथा अक्षत आदि को एक पोटली में बांध कर अगले दिन नदी में विसर्जित कर दें। दक्षिणा के रूप में समर्पित द्रव्य को किसी योग्य ब्राह्मण को दान में दे दें। लक्ष्मी को वस्त्र के रूप में अर्पित साड़ी गृहस्वामिनी स्वयं धारण करे। इस प्रकार पूर्ण भक्ति-भाव से सम्पन्न की गई पूजा से साधक के मन की इच्छा अवश्य पूर्ण होती है।

साधना-सामग्री (माला,यंत्र) न्यौछावर — ३४०/-

आपको गलतफहमी है, कि. . .

'मनुष्य' शब्द 'मन' से बना है, और मन का भ्रमित होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। अनेकों प्रकार के साधना विषयक प्रश्न मानव के अंतर्मन को उद्वेलित करते रहते हैं, यदि इन जिज्ञासामूलक प्रश्नों का हल उसको (साधक को) न मिल पाये, तो वह चिन्तन, वह धारणा, जो उसके अध्यात्म-पथ की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है, उसे पुनः माया के जाल में उलझा देती है. . . उसका बुद्धि पक्ष उसे एकनिष्ठ नहीं रहने देता और न ही मंत्र-जप, साधना, अनुष्ठान एवं गुरु के प्रति उसकी पूर्ण आस्था और विश्वास ही रह पाता है। आइये! आखिर सत्य क्या है, यह जानें. . .

– उपसम्पादक

आप सही साधक नहीं हैं

साधक का मतलब यह नहीं, कि पीली धोती पहिन ली, राम-नाम का पटका ओढ़ लिया, आंख बंद कर पूजा-पाठ किया और बन गये साधक। साधक का अर्थ है— जो अपने तन व मन को साध सके, ध्यान को एकाग्र कर सके, शांतचित्त हो अपने इष्ट का ध्यान-मनन कर सके। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते हैं, तो फिर आप साधक कहलाने योग्य नहीं हैं, आपको चाहिए कि सर्वप्रथम **'गुरु दीक्षा'** प्राप्त कर गुरु द्वारा प्रदत्त मंत्र का प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में नियमित रूप से, "विट्ठल माला" से एक माला मंत्र-जप करें तथा ५-१० मिनट तक उनके स्वरूप का ध्यान करें, धीरे-धीरे ध्यान व जप द्वारा आपको वह चेतना, वह तेजस्विता स्वतः प्राप्त होने लग जायेगी और आप सही अर्थों में साधक कहला सकेंगे।

न्यौछावर – १२०/-

आप साधना में सफल नहीं हो सकते

आप साधनात्मक प्रक्रिया को सही ढंग से नहीं अपना पाते, क्योंकि साधना की पूर्णता के लिए इष्ट के प्रति श्रद्धा, विश्वास और समर्पण आवश्यक है। आमतौर पर साधकों की यही धारणा बनी रहती है, कि मंत्र-जप समाप्त हुआ और साधना सम्पन्न हो गई; इसके बाद वे अपने-आप को शक्ति सम्पन्न समझ कर साधना का प्रयोग दूसरों पर क्रियान्वित करना प्रारम्भ कर देते हैं, इस तरह अपनी शक्ति का ह्रास करने से आप-अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की बजाय अधोगति की अवस्था में पहुंच जाते हैं और सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। फिर भी किसी साधना में यदि बार-बार असफलता मिल रही है, तो **"साफल्य माला"** से **"ॐ ह्रीं ॐ"** मंत्र का एक माला जप साधना प्रारम्भ करने से पूर्व अवश्य करें, सफलता मिलेगी।

न्यौछावर – ८०/-

आपके हृदय में गुरु स्थापित नहीं हैं

लम्बी-लम्बी साधनाएं करने के बाद भी कई साधकों ह । यह शिकायत रहती है, कि साधना में सफलता नहीं मिल रही है?

ऐसा कहना स्वाभाविक है, क्योंकि गुरु साक्षी रूप में उनके हृदय में स्थापित नहीं हैं, इसीलिए किसी भी साधना से पूर्व **"गुरु साधना"** अपेक्षित एवं अनिवार्य है। सभी साधनाओं के सूत्रधार तो गुरु ही होते हैं, ब्रह्म तक किसी जीव को पहुंचाने का माध्यम गुरु ही हैं, क्योंकि गुरु ही प्रत्यक्ष देवता हैं, जो दोनों तत्त्वों 'ईश्वर' और 'जीव' से परिचित हैं।

जब तक साधक का अन्तःकरण शुद्ध नहीं होता, तब तक गुरु स्थापन की प्रक्रिया नहीं बन पाती, हालांकि गुरु सदैव ही चैतन्य रूप में हर जगह व्याप्त हैं, जब चाहे उन्हें देखा जा सकता है; जिस प्रकार दर्पण साफ होने पर प्रतिबिम्ब स्पष्टतः दिखाई देने लगता है, उसी प्रकार मन शुद्ध होने पर गुरु की हृदय में सूक्ष्म रूप से उपस्थिति स्वयमेव हो जाती है, और साधक द्वारा थोड़ा-सा प्रयत्न करने पर साकार रूप में उनकी उपस्थिति भासित होने लगती है।

गुरु को हृदय में धारण करने के लिए आवश्यक है कि **''गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा''** प्राप्त की जाय तथा **''विशिष्ट मंत्राभिसिक्त पांच रुद्राक्ष के दाने''** किसी चेन अथवा लाल धागे में पिरोकर गले में पहिन लें।

न्यौछावर (पांच रुद्राक्ष) – ५०/-

आपके मनोवांछित कार्य नहीं हो रहे हैं

कई बार साधक साधना करते हुए विचलित हो उठते हैं, क्योंकि एक-दो साधनाएं करने के बाद वे पर्वत की तरह ऊंची-ऊंची धारणायें पाल लेते हैं, इस प्रकार अनेकों कामनाओं की पूर्ति की इच्छाएं मन में संजोकर परेशान हो जाते हैं, कि उन्हें सफलता क्यों नहीं मिल रही है? वे निराश हो जाते हैं और साधना ही छोड़ देते हैं।

ऐसा सोचना-विचारना, कल्पना में लम्बी उड़ान भरना साधक के लिए हानिकारक ही है, क्योंकि ऐसा सम्भव ही नहीं, कि आप साधना करें और सफलता नहीं मिले। महत्त्वपूर्ण इच्छा की पूर्ति कालान्तर में तो होती ही है, किन्तु समय की प्रतीक्षा अपेक्षित है।

मनोवांछित कार्य की पूर्णता के लिए **''पूरणा''** के सामने ५१ बार **''ॐ ह्रीं क्रीं ॐ फट्''** मंत्र का उच्चारण कर उसे नदी में प्रवाहित कर दें तथा नित्य पांच बार उपरोक्त मंत्र का पूर्ण श्रद्धा से उच्चारण करें।

न्यौछावर – ७५/-

आपको वातावरण सही नहीं मिल रहा है

कई बार साधकों को ऐसा भ्रम हो जाता है, कि वातावरण अनुकूल न मिल पाने के कारण साधना में सफलता नहीं मिल पा रही है, किन्तु ऐसा सोचना साधक का भ्रम मात्र है, कई बार वातावरण का निर्माण स्वयं ही करना पड़ता है, ऐसा नहीं कि जहां भी जायें या रहें, वहां वातावरण स्व निर्मित हो ही। वर्तमान जीवन जिसे आप जी रहे हैं, साधना के अनुकूल नहीं है, सभी भोगवाद में विश्वास रखते हैं; ऐसी स्थिति में जहां कहीं भी आप साधना करें, अपने-आप को तथा अपनी इन्द्रियों को संयमित करके वातावरण को अपने अनुकूल ढाल सकते हैं और उससे लाभ उठा सकते हैं।

वातावरण को अनुकूल बनाने के लिए ही यह एक दिवसीय लघु प्रयोग सम्पन्न करें। आप को मात्र इतना ही करना है, कि **''द्ररोह''** पर पीली सरसों चढ़ाते हुए दस मिनट तक **''ॐ श्रीं श्रीं ॐ नमः''** मंत्र का उच्चारण करें, फिर सरसों व द्ररोह को नदी में प्रवाहित कर दें। जहां भी और जब भी आप साधना करने बैठें, उसके पूर्व चारों दिशाओं में जल छिड़कते हुए उपरोक्त मंत्र का चार बार उच्चारण कर लें।

न्यौछावर – ६५/-

आप मंत्र-जप गलत कर रहे हैं

मंत्र-जप करते समय जब आपको किसी प्रकार की कोई अनुकूलता प्राप्त नहीं होती, तो आपके मन में यह भ्रम उत्पन्न होने लगता है, कि ''यह मंत्र सही है भी या नहीं।'' इसके लिए, मंत्र क्या है— यह जानना जरूरी है। अक्षर ही ब्रह्म होता है, और कुछ अक्षरों के द्वारा 'मंत्रों' का निर्माण होता है, 'मंत्र' कोई भी हो, किसी भी देवी-देवता का हो। यह भी सत्य है, जो सिद्ध पुरुष होते हैं, वे जो कह देते हैं, वही मंत्र हो जाता है; किन्तु किसी भी सिद्ध पुरुष से आपको मंत्र प्राप्त हुआ हो, उस मंत्र के प्रति जब तक आप पूर्ण श्रद्धा और विश्वास की भावना नहीं रखेंगे, तब तक आपको सफलता प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि वह तब तक प्रभावशाली नहीं होता, जब तक कि उसे एकाग्रचित्त हो पूर्ण भावना के साथ न जपा जाय।

श्रद्धा का अवलम्बन पाकर मंत्राक्षर ब्रह्माण्ड में परिभ्रमण करते हुए सम्बन्धित दैविक शक्ति की रश्मि से संवलित होता है, तब जिस दिव्य ज्योति का आविर्भाव होता है, वही 'सिद्धि' की संज्ञा पाती है। मंत्र वास्तव में मनन पूर्वक वर्णोच्चारण का घर्षण है, इसके मूल में लय ही सर्वोपरि होती है। फिर भी आप अपने मंत्र के संशय को दूर करने के लिए मंत्र-जप पूर्ण करने के पश्चात् **''वायजम् माला''** से एक माला **''ॐ ह्रीं काम्येश नमः''** मंत्र का जप कर लें, तो आपके मन का संशय दूर हो जायेगा और दोष-मुक्ति होगी।

न्यौछावर – ६६/-

इतनी साधनाएं करने से क्या लाभ

कोई भी मंत्र-जप व्यर्थ नहीं जाता, किन्तु जन्मांतरीय दोषों का शमन करने की प्रक्रिया धीरे-धीरे शुरू हो जाती है, जैसे किसी व्यक्ति ने १० हजार का कर्जा लिया हुआ है, २ हजार कमाता है, जिसमें घर खर्च मुश्किल से चलता है, उस कर्ज को उतारने के लिए उसे २० माह लगते हैं; साधनात्मक प्रक्रिया भी इसी तरह की है, जब तक मन में अंश मात्र भी दोष शेष रहेगा, तब तक साधना जनित लाभ शीघ्र प्राप्त नहीं हो पायेगा, इसीलिए शास्त्रों में निरन्तर साधकों को साधनाओं से जुड़े रहने के लिए पुनः-पुनः दीक्षा लेने या अनुष्ठान करने के लिए निर्देश दिया हुआ है— सुखी एवं सम्पन्न जीवन व्यतीत करने के लिए साधक को साधनाएं करते रहनी चाहिए, क्योंकि साधना सुखी जीवन का एकमात्र सम्बल है।

दोषों के शमन के लिए **''तरलित''** पर २५ लाल पुष्प चढ़ाते हुए **''ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं नमः''** मंत्र को उच्चरित करें।

न्यौछावर – ८०/-

सर्वेक्षण

अध्यात्म जगत की अग्रणी मासिक पत्रिका **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** का प्रकाशन **सन् 1981** से प्रारम्भ हुआ और **सन् 1991** तक पूरे ग्यारह वर्ष की यात्रा पूरी करते हुए यह भारत के सभी वर्गों की प्रिय पत्रिका बन गयी। इन ग्यारह वर्षों में पत्रिका के सीमित पाठक ही थे, किन्तु उन सभी लोगों के परामर्श से सर्व साधारण को सुलभ कराने के लिए इसे रेलवे बुक स्टॉलों व अन्य बुक स्टॉलों पर भी देने का विचार बनाया गया और सर्वसम्मति से **सन् 1992** के प्रथम माह जनवरी में पत्रिका को भारत के सभी बुक स्टॉलों पर उपलब्ध करा दिया गया।

सन् 1992 से लेकर **सन् 1995** इन चार वर्षों में पत्रिका के चाहने वालों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। प्रतिदिन पत्रिका कार्यालय को प्राप्त होने वाले सैकड़ों पत्रों से यह स्पष्ट आभासित होता है, कि पत्रिका अत्यधिक तीव्रता से लोकप्रियता प्राप्त कर रही है।

पाठकों के पत्र विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं, इन पत्रों के द्वारा पाठकों के विचार जान कर पत्रिका कार्यालय ने **सन् 1992** में "सर्वेक्षण टीम" बनाई और समय-समय पर पूरे भारतवर्ष के लोगों से सम्पर्क स्थापित कर, उनके विचारों को जानने का प्रयास किया।

गत माह सर्वेक्षण टीम को लगभग बारह हजार साधकों, शिष्यों, पाठकों एवं जनमानस के सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त परिणाम आप सभी पाठकों की जानकारी के लिए यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं। टीम ने सर्वेक्षण करने के लिए कुछ बिन्दु निर्धारित किये थे, उन्हीं बिन्दुओं के आधार पर प्राप्त सर्वेक्षणों की रिपोर्ट आप सभी के लिए—

सफलता का अनुपात	1992	1993	1994	1995
★ **साधनाओं के प्रति रुचि**				
गुरु साधना	42%	42%	55%	70.2%
अप्सरा साधना	30%	32%	36%	38.8%
लक्ष्मी साधना	40%	49.5%	73%	80%
उग्र साधनाएं	70%	71%	71%	31%
सौम्य साधनाएं	30%	35%	37%	78%
लघु साधनाएं	46%	76%	58%	75%
★ **दीक्षाओं के प्रति रुचि**	11%	34%	55%	71.5%
दो वर्ग की दीक्षाएं				
आध्यात्मिक व भौतिक	11%	42%	42%	83%
साधनात्मक (उग्र)	28.5%	27%	29%	30%
★ **साधना शिविर**	17%	31%	52%	78%
★ **पत्रिका की वार्षिक सदस्यता**	42.6%	43%	53%	81.7%
★ **कैसेट्स**	15%	37.9%	69%	76%
★ **ग्रंथों की मांग**	38%	61%	76%	77.5%
★ **गुरु के प्रति लगाव**	40%	43%	70%	87%

1. साधनाओं के प्रति रुचि—

पत्रिका में प्रकाशित होने वाली साधनाओं को पांच वर्गों में विभाजित किया गया और प्रत्येक वर्ग के प्रति लोगों के विचार निम्नवत् प्राप्त हुए—

क. गुरु साधना

गुरु साधना के प्रति लोगों की रुचि **सन् 1993** तक **42%** थी, जो **सन् 1994** में बढ़कर **55%** हुई और **सन् 1995** के प्रारम्भिक आठ माह में इस प्रतिशत में वृद्धि हुई और लोगों की अभिरुचि के कारण यह प्रतिशत बढ़कर **70.2%** हो गया।

ख. अप्सरा साधना

अप्सरा साधना करने वाले साधकों की सफलता का प्रतिशत **30%** से **36%** तक ज्ञात हुआ है, यह **सन् 1994** तक के सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार है। इस साधना के प्रति **सन् 1995** में लोगों की रुचि बढ़ी और यह प्रतिशत **30%** से बढ़कर **38.5%** हो गया।

ग. लक्ष्मी साधना

लक्ष्मी साधना के प्रति लोगों की रुचि का जो प्रतिशत ज्ञात हुआ, वह बहुत ही चौंकाने वाला है, **सन् 1995** में यह प्रतिशत **80%** ज्ञात हुआ है और सबसे बड़ी बात है, कि जिन लोगों ने विभिन्न लक्ष्मी साधनाओं को सम्पन्न किया, उसमें 73.5% लोगों को सफलता प्राप्त हुई।

घ. भैरव, कृत्या एवं उग्र साधनाएं

उग्र साधनाओं के प्रति पाठकों की रुचि का प्रतिशत **सन् 1994** तक **71%** रहा, जो **सन् 1995** के प्रथम आठ सप्ताह में कम हुआ और यह घटकर **31%** रह गया है, किन्तु सौम्य एवं सात्विक साधनाओं के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा है और **सन् 1994** के बाद **37%** से बढ़कर **78%** हो गया है।

च. लघु साधनाएं

लघु साधनाओं के प्रति **सन् 1994** तक लोगों की रुचि **58%** ही देखने को मिली, जो **सन् 1995** में अकस्मात् बढ़कर **75%** का आंकड़ा बताने लगी।

2. दीक्षाओं के प्रति रुचि

प्रारम्भिक आंकड़ों के अनुसार लोगों की रुचि दीक्षाओं के प्रति कोई विशेष नहीं दिखी, किन्तु **सन् 1991-95** के आंकड़ों के अनुसार विभिन्न दीक्षाओं के प्रति रुचि बढ़ी है। **सन् 1992** में लोगों की रुचि का प्रतिशत **11%** रहा है, **सन् 1994** में यह प्रतिशत बढ़कर **55%** हो गया। **सन् 1995** के प्रारम्भिक आठ महीनों में दीक्षाओं के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा और **71.5%** का आंकड़ा प्राप्त हुआ। विभिन्न दीक्षाओं

को प्राप्त करने वाले लोगों के अनुसार इसे दो वर्गों में विभाजित किया गया है। **प्रथम वर्ग** में उन लोगों के विचारों के अनुसार आंकड़ा है, जिन्होंने आध्यात्मिक और भौतिक दोनों रूपों में अपने जीवन को संवारने के लिए, अनेकों बाधाओं से मुक्ति पाने के लिए दीक्षाएं प्राप्त की हैं, वहीं **दूसरे वर्ग** में उन लोगों के विचारों के अनुसार आंकड़ा निर्धारित किया गया है, जो भौतिक जीवन से थोड़ा हटकर हैं अर्थात् साधनाओं (उग्र) से सम्बन्धित।

क. आध्यात्मिक व भौतिक दीक्षाएं

इस वर्ग में दीक्षा प्राप्त करने वालों का प्रतिशत **सन् 1994** में **42%** था, वहीं यह प्रतिशत **सन् 1995** में अगस्त माह तक **83 %** प्राप्त हुआ है। इस वर्ग में जो दीक्षाएं ली गयीं, उनमें से प्रमुख दीक्षाएं हैं— **1. कुण्डलिनी जागरण दीक्षा 2. अप्सरा दीक्षा 3. तंत्र दोष निवारण दीक्षा 4. महालक्ष्मी दीक्षा 5. गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा 6. शत्रु बाधा निवारण हेतु बगलामुखी दीक्षा 7. सर्वकार्य सिद्धि दीक्षा 8. मनोवांछित कामना पूर्ति दीक्षा 9. भाग्योदय दीक्षा 10. ऋण मुक्ति दीक्षा 11. गर्भस्थ शिशु चेतना दीक्षा 12. सरस्वती दीक्षा 13. रोग मुक्ति के लिए धन्वन्तरी दीक्षा 14. जीवन मार्ग दीक्षा 15. ज्ञान दीक्षा**

ख. साधनात्मक (उग्र) दीक्षाएं

इस वर्ग के अन्तर्गत वे दीक्षाएं हैं, जिन्हें मात्र कुछ लोगों ने ही लेने में रुचि दिखाई। इन दीक्षाओं में से कुछ प्रमुख दीक्षाएं हैं— **1. अघोर दीक्षा 2. कृत्या दीक्षा 3. वीर-वेताल दीक्षा 4. छिन्नमस्ता दीक्षा 5. धूमावती दीक्षा।** इन दीक्षाओं को प्राप्त करने में मात्र **30%** लोगों ने ही रुचि दिखाई।

3. साधना शिविर

सन् 1992 में किये गये सर्वेक्षण के अनुसार **17%** लोगों की रुचि साधना शिविरों के प्रति दिखाई दी, वहीं यह प्रतिशत **सन् 1993** में बढ़कर **31%** हो गया, **सन् 1994** में लोगों की रुचि साधना शिविरों के प्रति बढ़ी और **52%** पर आकर ठहर गयी और **मार्च 95** के शिविर में भी यही स्थिति रही, किन्तु **21 अप्रैल 95 इलाहाबाद में 70%** लोगों की रुचि साधना शिविरों के प्रति देखने को मिली। **जुलाई 95** में **लुधियाना** (पंजाब) में आयोजित "गुरु पूर्णिमा शिविर" में **78%** लोगों की रुचि साधना शिविर के प्रति दिखाई दी।

4. पत्रिका की वार्षिक सदस्यता

पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनने के लिए **सन् 1994** तक **53%** लोगों ने रुचि दिखाई, किन्तु इस वर्ष इस प्रतिशत में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई और **सन् 1995** के अगस्त माह तक **81.7%** लोगों में वार्षिक सदस्यता प्राप्त करने की रुचि उत्पन्न हुई।

5. राशिफल, शेयर मार्किट

पत्रिका के पाठकों की अभिरुचियों को ध्यान में रखकर जब लोगों से बातचीत की, तो पता चला कि पाठकों का **30%** वर्ग ऐसा है, जो राशिफल और शेयर्स की सही भविष्यवाणियों को जानने के लिए ही पत्रिका पढ़ता है।

6. बुक स्टॉल

लगभग सभी बुक स्टॉलों का सर्वेक्षण करने पर यह ज्ञात हुआ, कि पिछले चार वर्षों में इस पत्रिका ने अपना स्थान मार्किट में

This certificate is presented to
Manas Chetna Kendra
in appreciation of their participation in
DELHI BOOK FAIR
New Delhi
August 12 to 20, 1995

अन्य पत्रिकाओं की तुलना में काफी अच्छा बना लिया है। कुछ विशिष्ट शहरों के स्टॉलों से पता चला है, कि प्रारम्भ में लोग इस पत्रिका को खरीदने में हिचकते थे, वहीं माह के प्रारम्भ होने से एक सप्ताह पूर्व ही अब इसकी बुकिंग करा देते हैं।

7. कैसेट्स

पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों से सम्बन्धित कैसेट्स 76% लोगों ने बहुत अधिक रुचि दिखा कर खरीदी हैं।

8. ग्रन्थ

पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित विविध ग्रन्थों को बहुत बड़ी संख्या में लोगों ने सराहा है, इन ग्रन्थों में प्रमुख रहे हैं— **"ध्यान धारणा और समाधि", "हिप्नोटिज्म के 100 स्वर्णिम सूत्र", "कुण्डलिनी नाद ब्रह्म", "फिर दूर कहीं पायल खनकी", "दीक्षा संस्कार", "यज्ञ-विधान", Meditation** आदि। सभी ग्रन्थों को **71.5%** पाठकों द्वारा प्रशंसा प्राप्त हुई।

9. गुरु के प्रति लगाव

गुरु के प्रति लोगों में लगाव व श्रद्धा की भावना की वृद्धि हुई है, **सन् 1993** में **43%** लोगों ने गुरु साधना और गुरु कार्य किये हैं, वहीं **सन् 1994** में **70%** लोगों ने गुरु के प्रति श्रद्धा-भाव व्यक्त किया। **सन् 1995** के अगस्त माह में **87%** लोगों ने गुरु के प्रति समर्पण का भाव प्रदर्शित किया।

10. आल इण्डिया बुक फेयर "1995"

दिल्ली के प्रगति मैदान में सम्पूर्ण भारत के प्रमुख संस्थानों से प्रकाशित पुस्तकों के विशाल भव्य मेले का आयोजन **11 अगस्त 1995 से 20 अगस्त 1995** तक चला। इस पुस्तक मेला में हमारे संस्थान द्वारा लगाये गये स्टॉल को बहुत बड़े दर्शक समूह ने पसन्द किया। लोगों ने पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा कैसेट्स के प्रति बहुत रुचि दिखाई। अधिकांश लोगों का यह मत रहा, कि पुस्तक मेला के आयोजकों ने बहुत अच्छा कार्य किया है, जो **"मनस चेतना केन्द्र"** को स्टॉल दिया, क्योंकि इस स्टॉल से हमें जो साहित्य प्राप्त हुआ, वह बहुत ही उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक है।

उपरोक्त आकलन से यह स्पष्ट होता है, कि लोगों की रुचि पत्रिका, लघु साधनाएं, कैसेट्स व दीक्षाओं के प्रति बढ़ी है; वहीं जटिल, कठिन व तामसिक साधनाओं के प्रति रुचि में न्यूनता आई है, अतः इस सर्वेक्षण से यह पूर्णतया स्पष्ट हो गया है कि इस भौतिक एवं तनाव भरे समाज में इस प्रकार के ज्ञान के प्रति लोगों का रुझान काफी बढ़ा है।

प्रचण्ड वज्र की तरह प्रहार करने वाली

✿ ✿ ✿

एक बार पार्वती ने भगवान शिव से अपनी क्षुधा का निवारण करने के लिए कहा, तो उन्होंने ध्यान नहीं दिया, क्रोधित पार्वती ने भगवान महादेव को ही निगल लिया, और उनके शरीर से जो धूमराशि निकली, उसे ही भगवान शिव ने ''धूमावती'' का रूप दे दिया. . .

. . . ऐसी क्षुधामयी मां धूमावती अत्यन्त ही शक्तिमयी हैं, जो शत्रुओं का भक्षण करने तथा दुःखों की निवृत्ति करने वाली हैं।

दस महाविद्याओं की साधना करना जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि मानी जाती है, ये दस प्रकार की शक्तियों की प्रतीक होती हैं, और महत्त्वपूर्ण अवसर पर जीवन में जिस शक्ति तत्त्व की कमी होती है, उस कमी को पूरा करने के लिए महाविद्या की साधना-उपासना करना जीवन का सौभाग्य माना जाता है।

''धूमावती'' दस महाविद्याओं में से एक हैं, जिस प्रकार 'तारा' बुद्धि और समृद्धि की, 'त्रिपुर सुन्दरी' पराक्रम एवं सौभाग्य की सूचक मानी जाती हैं, इसी प्रकार 'धूमावती' शत्रुओं पर प्रचण्ड वज्र की तरह प्रहार करने वाली मानी जाती हैं। यह अपने आराधक को अप्रतिम बल प्रदान करने वाली

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे।

केवल **7777/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल 3,000/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209 फेक्सः0291-32010
गुरुधाम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34 फोनः011-7182248, फेक्सः011-7196700

देवी हैं, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में सहायक सिद्ध होती ही हैं, यदि पूर्ण निष्ठा व विश्वास के साथ 'धूमावती साधना' को सम्पन्न कर लिया जाय तो।

सांसारिक सुख भी अनायास ही प्राप्त नहीं हो जाते, उनके लिए भी साधना का बल और मंत्र की सिद्धि आवश्यक है, सुख प्राप्त करना महत्त्वपूर्ण है, किन्तु उन सुखों का उपभोग करना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण होता है। आज के इस प्रतिस्पर्धावादी युग में यह कहां सम्भव है, कि व्यक्ति कुछ क्षण सुख से, आनन्द से व्यतीत कर सके, उसे तो आये दिन कोई न कोई समस्या घेरे ही रहती है, और उन्हीं से जूझते हुए उसकी शक्ति समाप्त होती जाती है, ऐसी परिस्थिति में उसे शारीरिक शक्ति के साथ-साथ दैविक बल की भी आवश्यकता पड़ती है। यह मानव मात्र का स्वभाव है, कि जब चारों ओर परेशानियों के, बाधाओं के, अड़चनों के बादल मंडरा रहे होते हैं, तभी व्यक्ति ईश्वर की अभ्यर्थना करने के लिए, समय निकालने के लिए विवश हो ही जाता है।

शारीरिक शक्ति अच्छे खान-पान और योग द्वारा प्राप्त की जाती है, किन्तु दैविक शक्ति को साधना के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष सभी के लिए साधना का द्वार खुला है। प्रत्येक गृहस्थ व संन्यासी के लिए शक्ति-साधना विशेष महत्त्वपूर्ण होती है, इसके बिना तो जीवन अभावपूर्ण ही होता है।

शक्ति-साधना की तीन श्रेणियां होती हैं– पशु, वीर और दिव्य। घृणा, लज्जा, भय, शंका, जुगुप्सा, कुल, शील और जाति इन आठ पाशों से आबद्ध जीव "पशु" होता है, परन्तु शक्ति-साधना को सम्पन्न कर वह जीव पाशमुक्त हो "पशुपति" हो जाता है।

दस महाविद्याओं के क्रम में "धूमावती" सप्तमी महाविद्या हैं, ये शत्रु का भक्षण करने वाली महाशक्ति और दुःखों की निवृत्ति करने वाली हैं। बुरी शक्तियों से पराजित न होना और विपरीत स्थितियों को अपने अनुकूल बना देने की शक्ति साधक को इनकी साधना से प्राप्त होती है।

कहते हैं कि समय बड़ा बलवान होता है, और उसके आगे सबको हार माननी पड़ती है, किन्तु जो समय पर हावी हो जाता है, वह उससे भी ज्यादा बलशाली कहलाता है।

शक्ति सम्वलित होना और शक्तिशाली होना तो केवल शक्ति-साधना के माध्यम से ही सम्भव है, जिसके माध्यम से दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित किया जा सकता है।

जो भयग्रस्त, दीन-हीन और अभावग्रस्त जीवन जीते हैं, वे कायर और बुजदिल कहलाते हैं; किन्तु जो बहादुर होते हैं, वे सब कुछ अर्जित कर, जो कुछ उनके भाग्य में नहीं है, उसे भी साधना के बल पर प्राप्त करने की सामर्थ्य रखते हैं. . .और यदि साधना हो किसी महाविद्या की, तो उसके भाग्य के क्या कहने, क्योंकि दस महाविद्याओं में से किसी एक महाविद्या को सिद्ध कर लेना भी जीवन का अप्रतिम सौभाग्य कहलाता है।

आज समाज में जरूरत से ज्यादा द्वेष, ईर्ष्या, छल, कपट, हिंसा और शत्रुता का वातावरण बन गया है, फलस्वरूप यदि व्यक्ति शांतिपूर्वक रहना चाहे, तो वह नहीं रह सकता, अतः जीवन की असुरक्षा समाप्त करने की दृष्टि से यह साधना विशेष महत्त्वपूर्ण एवं अद्वितीय है।

धूमावती "दारुण विद्या" हैं, सृष्टि में जितने भी दुःख हैं, व्याधियां है, बाधायें हैं, इनके शमन हेतु इनकी साधना श्रेष्ठतम मानी जाती है। जो व्यक्ति या साधक इस महाशक्ति की आराधना-उपासना करता है, ये उस साधक पर अति प्रसन्न हो उसके शत्रुओं का भक्षण तो करती ही हैं, साथ ही उसके जीवन में धन- धान्य, समृद्धि की कमी नहीं होने देतीं, इसीलिए इन्हें "अलक्ष्मी" के नाम से भी पूजित किया जाता है, अतः लक्ष्मी प्राप्ति के लिए भी साधक को इस शक्ति की आराधना करते रहनी चाहिए।

महाविद्याओं में धूमावती की साधना बहुत ही क्लिष्ट मानी जाती है। इसके लिए साधक को बहुत ही पवित्रता का ध्यान रखना चाहिए। इस साधना से पूर्व तत्सम्बन्धित दीक्षा लेने का प्रयास करना चाहिए, इससे साधना काल में किसी प्रकार का भय आदि होने की सम्भावना नहीं रहती।

साधना विधि :

१. इस प्रयोग में निम्न सामग्री अपेक्षित होती है– **'प्राणश्चेतना युक्त धूमावती यंत्र'**, **'दीर्घा माला'** तथा **'अघोरा गुटिका'**।
२. **१७.११.९५ मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष, शुक्रवार** के दिन इस महाविद्या साधना को सम्पन्न करें या फिर किसी भी **रविवार** को।
३. यह रात्रिकालीन साधना है, इसे **९ बजे से १२ बजे के मध्य** सम्पन्न करें।
४. साधक को स्नान आदि से पवित्र होकर, साधना कक्ष में **पश्चिम दिशा** की ओर मुख कर, ऊनी आसन पर बैठकर साधना करनी चाहिए।
५. लाल वस्त्र, लाल धोती और गुरु चादर का प्रयोग करें।
६. यह साधना शून्य स्थान में, श्मशान में, जंगल में, गुफा में या किसी भी एकात स्थल पर, जहां कोई विघ्न उपस्थित न हो, करना श्रेयस्कर रहता है।
७. अपने सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर धूमावती चित्र स्थापित करें, फिर किसी प्लेट में 'यंत्र' को स्थापित करें।

८. यंत्र को जल से धोकर उस पर कुंकुम से तीन विन्दु लाइन से लगा लें, जो सत्व, रज एवं तम गुणों के प्रतीक स्वरूप हैं।

९. धूप व दीप जला दें और पूजन प्रारम्भ करें—

विनियोग :

दाहिने हाथ में जल, अक्षत और पुष्प लें, निम्न संदर्भ को पढ़ें-
अस्य धूमावती मंत्रस्य पिप्पलाद ऋषि, निंवृच्छन्दः, ज्येष्ठा देवता, "धूं" बीजं, स्वाहा शक्तिः, धूमावती कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

हाथ में लिए हुए जल को भूमि पर या किसी पात्र में छोड़ दें।

कर न्यासः

ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों तर्जनी उंगलियों से दोनों अंगूठों को स्पर्श करें)

ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः (दोनों अंगूठों से दोनों तर्जनी उंगलियों को स्पर्श करें)

ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः (दोनों अंगूठों से दोनों मध्यमा उंगलियों को स्पर्श करें)

ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः (दोनों अंगूठों से दोनों अनामिका उंगलियों को स्पर्श करें)

ॐ तीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः (दोनों अंगूठों से दोनों कनिष्ठिका उंगलियों को स्पर्श करें)
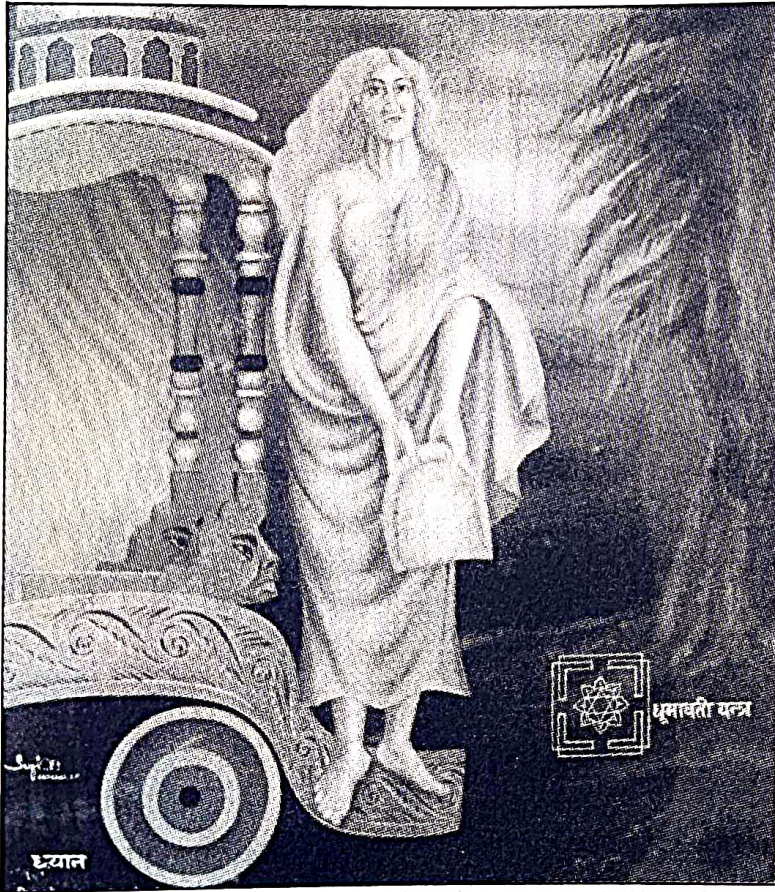
शक्ति-साधना प्रवृत्ति और निवृत्ति उभय मार्ग के लिए विहित है. . . जिसमें शरीर के गौरव का ही नहीं, अपितु शक्ति के संचार का महत्त्व है, वस्तुतः शक्ति-साधना प्रत्येक गृहस्थ के लिए अनिवार्य है. . .

जीवन में, भाग्य में जो कुछ न हो, उसे प्राप्त कर लेना ही शक्ति-साधना का प्राप्तव्य है।

ऋष्यादि न्यासः

ॐ पिप्पलाद ऋषये नमः शिरसि (दायें हाथ से सिर को स्पर्श करें)

ॐ निवृच्छन्द से नमः मुखे (मुख को स्पर्श करें)

ॐ ज्येष्ठादेवतायै नमः हृदि (हृदय को स्पर्श करें)

ॐ धूं बीजाय नमः गुह्ये (गुह्य स्थान को स्पर्श करें)

ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयो (पैरों को स्पर्श करें)

ॐ धूमावती कीलकाय नमः नाभौ (नाभि को स्पर्श करें)

ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे (सभी अंगों को स्पर्श करें)

ॐ स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः (परस्पर दोनों हाथों को स्पर्श करें)

१०. यंत्र, गुटिका और माला को दोनों हाथों की अंजलि में ले लें, एकाग्रचित्त होकर दीपक की लौ पर मूल मंत्र का **५१ बार जप करते हुए "त्राटक" करें।**

११. इसके बाद सामग्री को दोनों नेत्रों से स्पर्श करायें, सामग्रियों को यथास्थान चौकी पर रख दें, 'गुटिका' को यंत्र के सामने रखें।

१२. **संकल्प–**

दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि अमुक मासे (महीने का नाम बोलें) अमुक दिने (दिन का नाम बोलें) अमुक गोत्रोत्पन्नोहं (अपने गोत्र का नाम बोलें) अमुक शर्माहं (अपना नाम बोलें) समस्त शत्रु भय, व्याधि निवारणार्थाय दुःख दारिद्रय विनाशाय च श्री धूमावती साधना करिष्ये।

हाथ में लिए जल को भूमि पर छोड़ दें।

१३. **ध्यान-**

दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए भगवती धूमावती का ध्यान करें–

अत्युच्चा मलिनाम्बराखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना,
रुक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्योदरी चंचला।
प्रस्वेदाम्बुचिता क्षुधाकुलतनुः कृष्णातिरुक्षाप्रभा;
ध्येया मुक्तकत्चा सदाप्रिय कलिर्धूमावती मन्त्रिणा।।

अर्थात् "मलीन वस्त्र पहिने हुए सबको भयभीत करने वाली, मन में विकार को उत्पन्न करने वाली, रूखे बाल वाली, भूख और प्यास से व्याकुल, बड़े-बड़े दांतों वाली, बड़े पेट वाली, पसीने से भरी हुई, बड़ी-बड़ी आंखों वाली, कांतिहीन, खुले बालों वाली, सदा अप्रिय व्यवहार को चाहने वाली भगवती धूमावती का मैं ध्यान करता हूं, कि वे मेरे जीवन की समस्त विघ्न-बाधाओं का नाश करें।"

१४. इस प्रकार भगवती धूमावती के स्वरूप का चिन्तन करते हुए बायें हाथ में गुटिका को लेकर मुट्ठी बांध लें और 'दीर्घा माला' से निम्न मंत्र का **५ माला** नित्य तीन दिन तक जप करें–

मंत्र : ॐ धूं धूं धूमावती स्वाहा

१५. जप समाप्ति के बाद सभी सामग्रियों को चौकी पर बिछे कपड़े में ही लपेट कर चौथे दिन शाम को किसी जन-शून्य स्थान में जाकर, गड्ढा खोदकर दबा दें और पीछे मुड़कर न देखें।

१६. घर आकर हाथ-पैर धो लें।

यह साधना दुर्भाग्य की गूढ़ रेखाओं को मिटाकर सौभाग्य में बदलने की दिव्य क्रिया है। इस साधना के बाद निश्चय ही जीवन में सौभाग्य का सूर्योदय होगा और सम्पन्नतायुक्त एवं सुखी जीवन का प्रादुर्भाव सम्भव होगा।

साधना-सामग्री (यंत्र, माला, गुटिका) न्यौछावर– ३००/-

गूंजत बोल जियरा बिसरायो

गुरु पूर्णिमा 1995, लुधियाना

- गुरु साधना चिन्तन
- सहस्राक्षी लक्ष्मी विवेचना एवं प्रयोग
- ब्रह्माण्ड भेदन प्रयोग
- शरीरस्थ देवता स्थापित सिद्धि प्रयोग
- मनोकामना पूर्ति प्रयोग
- प्राणतत्त्व जागरण प्रयोग
- गुरु पूजन
- संध्या आरती
- दुर्लभ गुरु भजन

कौस्तुभ जयन्ति 1995, इलाहाबाद

- पूर्ण पौरुष प्राप्ति प्रयोग
- कालज्ञान विवरण
- कालज्ञान प्रयोग
- पूर्णत्व सिद्धि
- पूर्णत्व ब्रह्म दीक्षा
- षोडशी त्रिपुर साधना
- सशरीर सिद्धाश्रम प्राप्ति प्रयोग
- राजयोग दीक्षा
- मनोकामना पूर्ति प्रयोग एवं गुरु पूजन

अन्य ऑडियो कैसेट्स

- शिव सूत्र
- पारदेश्वरी लक्ष्मी प्रयोग
- हिप्नोटिज्म रहस्य
- निखिल स्तवन
- मैं अपना पूर्व जीवन देख रहा हूं
- शिव पूजन
- पारद विज्ञान
- पराविज्ञान
- लक्ष्मी मेरी चेरी
- मैं खो गया तुम भी खो जाओ
- निखिलेश्वर महोत्सव (६ भाग)
- पाशुपतास्त्रेय प्रयोग (३ भाग)
- कुण्डलिनी योग
- पारदेश्वर शिवलिंग पूजन तथा रसेश्वरी दीक्षा

वीडियो कैसेट

- नवरात्रि शिविर 1995
- कौस्तुभ जयन्ति 1995
- शिव पूजन
- कुण्डलिनी
- शक्तिपात
- हिप्नोटिज्म रहस्य
- साधना, सिद्धि एवं सफलता
- लक्ष्मी मेरी चेरी
- सिद्धाश्रम
- पाशुपतास्त्रेय प्रयोग
- अक्षय पात्र साधना
- तंत्र के गोपनीय रहस्य
- लक्ष्मी मेरी चेरी
- मन मयूर नाचे
- जीवन पग-पग साधना है
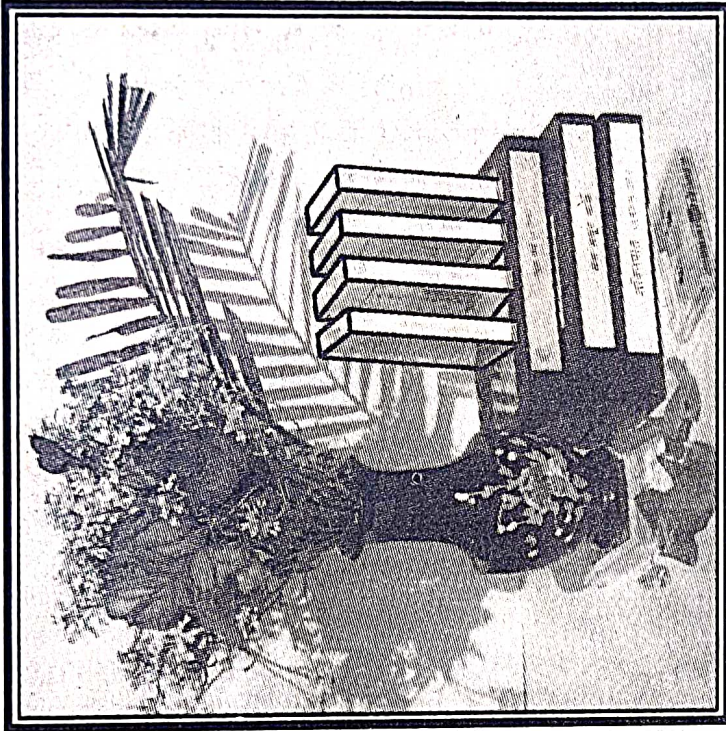
ऑडियो प्रति कैसेट : 30/-

वीडियो प्रति कैसेट : 200/-

नवीनतम कैसेट्स (जो नये रूप में अभी-अभी तैयार हुई हैं।)

गुरु वाणी भाग १	गुरु वाणी भाग २	गुरु वाणी भाग ३	गुरु वाणी भाग ४	गुरु वाणी भाग ५
ध्यान योग	साधना सूत्र	अष्ट सिद्धि	तन्त्र रहस्य	मैं सिद्धाश्रम में सशरीर विचरण कर सकता हूं
महालक्ष्मी साधना	अक्षय पात्र साधना	कायाकल्प	ॐ मणि पद्मे हुं	ध्यान, धारणा और समाधि

पूज्य गुरुदेव की वाणी में साधना के एक-एक रहस्य को उजागर करते ये अद्वितीय कैसेट्स. . . जिनके माध्यम से हजारों साधकों ने साधना में सफलता प्राप्त की है. . . . यह मात्र कैसेट ही नहीं, आपके जीवन की धरोहर है, आने वाली पीढ़ियों के लिये धरोहर है।

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

दिव्यं ज्ञानं यतो दद्यात् कुर्यात् पापक्षयं यतः।
तेन दीक्षेति लोकेऽस्मिन् कीर्तिता तन्त्रपारगैः॥

इस अनन्त आकाश में वह मेघखण्ड, जिसका एक ही लक्ष्य है, एक ही ध्येय है, जो वायु के संग-संग इधर से उधर बहुत ही उल्लसित मन से तलाश करता है, उस स्थान को, जहां वह अपने अन्दर संजो कर रखे हुए निर्मल जलराशि को किसी को प्रदान कर सके, इसके लिए वह अनेक जंगलों में, पहाड़ों में, गांव-गांव और नगर-नगर में भटकता है, फिर भी निराश नहीं होता, आशा की डोर से बंधा हुआ चलता जाता है अनथक, उसे उम्मीद रहती है, कि कहीं-न-कहीं, कभी-न-कभी वह अपने लक्ष्य तक पहुंच ही जायेगा, वह बहुत ही चौकन्ना रहता है, कि कहीं उससे कोई चूक न हो जाय, बहुत बारीकी से निरीक्षण करता हुआ वह आसमान के लम्बे रास्ते को चीरता चला जाता है।

एक दिन हिमालय ने उसे पहिचान लिया, दोनों गले मिले और उस तलहटी को, जो दीर्घकाल से प्यासी और तृषित थी, अपनी शीतल तथा पयस्वनी धारा से उसे सराबोर कर दिया, धन्य हो उठी वह धरती, सारा वातावरण महक गया, माटी की भीनी-भीनी खुशबू ने सबको मस्त बना दिया, सभी जंगली जीव खुशी से भरे हुए कुलाचें भरने लगे, चिड़ियों की चहचहाट सुखद लगने लगी, कृषक अपने कार्य में व्यस्त हो गए, सभी पेड़-पौधे पल्लवित, पुष्पित होने की कामनाओं से पुलकित हो गए, जंगलों में कहीं एकान्त में छिपकर बैठे शेर तथा हाथी आदि जानवर जल से भरे पल्वलों के समीप आकर मचलने से लगे, सभी जीवन की नई आशाओं से बन्ध से गए, वह मेघ छिपकर यह सब कुछ देख रहा था, यही तो उसकी नितान्त अभिलाषा थी, यही तो उसकी अंतिम खोज थी, इतना ही चाहता था वह मेघ, कि मेरे इस कल्याणकारी प्रयास को, मेरे उदात्त कार्य की महत्ता को लोग समझें, जानें, जहां कोई स्वार्थ
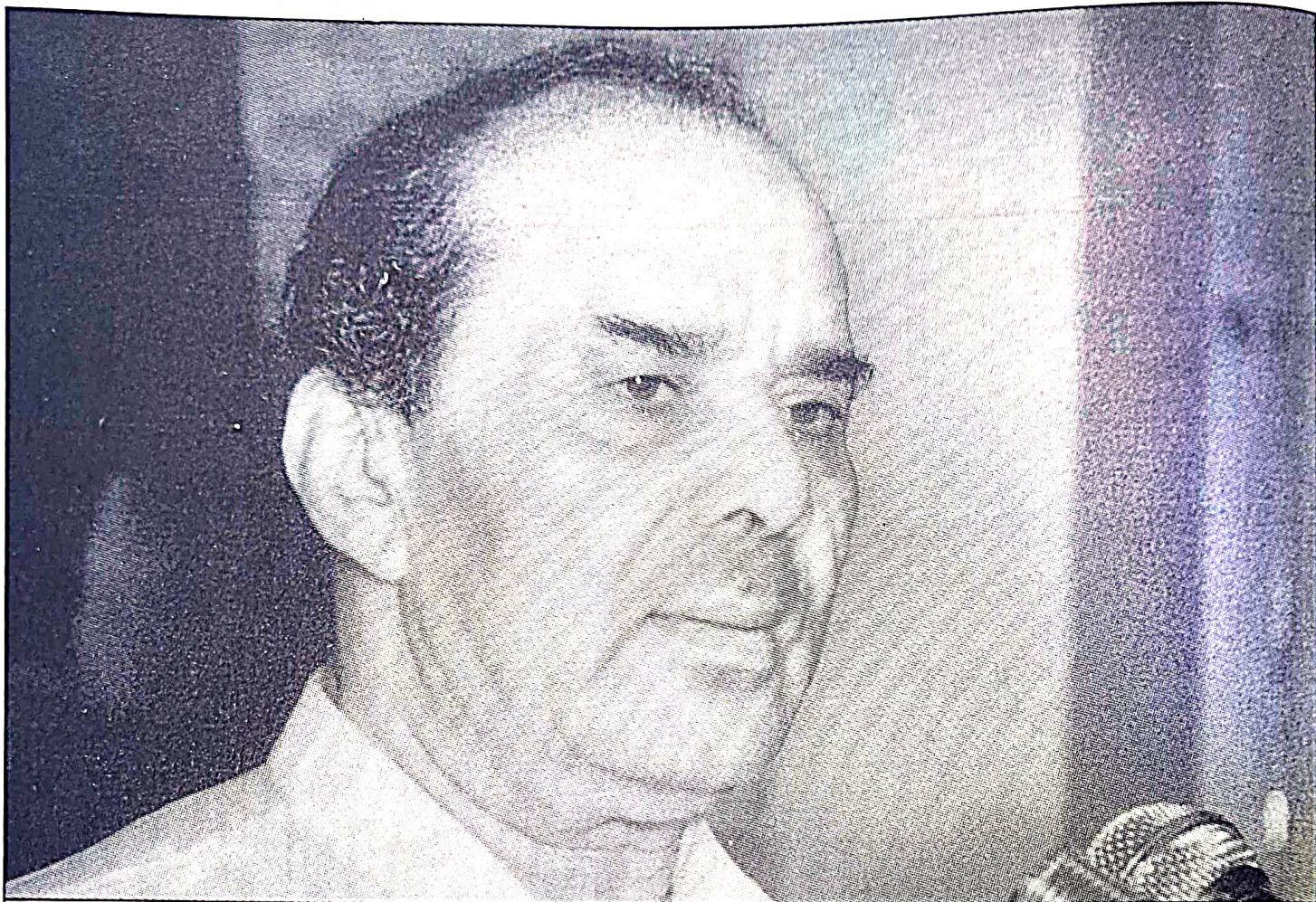
पूज्य गुरुदेव

नहीं है, देना ही जिसके मूल में है; मेघ देता ही है, किसी से कुछ भी नहीं लेता, ठीक उसी प्रकार संसार में कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते हैं, जो केवल देने के लिए ही आते हैं।

गुरु की निरन्तर तलाश भी इसी तरह सुयोग्य और सुपात्र को पाने की रहती है, उसके मन में यह चिन्तन रहता है, कि कोई ज्ञान ग्राही मिले, जिससे संजो कर रखे हुए इस अनन्त ज्ञान-राशि को उस सुपात्र में स्थापित कर दूं, जो कल्याणप्रद प्रयास से प्रत्येक जन को शांति प्रदान कर सके, इस ज्ञान की चेतना से, अनन्त काल से सोये हुए उन जीवों को असत् से सत् की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जा सके।

लोगों को इस विषय में बहुत ही भ्रम है, कि शिष्य गुरु की खोज में प्रयासरत रहता है, शिष्य में तो वह क्षमता ही नहीं है, कि वह गुरु को पहिचान सके, उसकी तो अज्ञानता से आंखें ढकी हुई रहती हैं, उस समय गुरु और शिष्य में काफी फासला तय करना शेष रहता है, दोनों नदी के अलग-अलग छोर पर खड़े होते हैं, शिष्य आकंठ पापों से रचा-पचा रहता है, गुरु पावनतम होता है, फिर एकात्म भाव की संभावना कैसे हो सकती है! मात्र गुरु ही करुणावश उसके हाथों को उस पार ले जाने के लिए पकड़

उच्चकोटि की साधनाओं के वेग को अपने अन्दर समाहित करने के लिए बहुत ही अधिक तपस्यात्मक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, और मैं दीक्षा के माध्यम से तुम्हारे अन्दर अपनी दिव्यता, अपनी ओजस्विता, अपनी तपस्या के अंश को प्रदान करता हूं और मुझे प्रसन्नता है . . . जब मैं तुम लोगों को देखता हूं. . . कि उच्चकोटि की दीक्षाओं को प्राप्त कर इन साधनाओं के कितने निकट पहुंच चुके हो. . . तो सोचने लगता हूं, कि निश्चय ही तुम्हारा भाग्य, विधाता ने सोने की कलम से लिखा है।

लेता है। गुरु को मालूम होता है, कि इस हीरे में अभी मिट्टी के बहुत से कण मिले हैं, यह अभी गन्दा है, इसे पावन बनाना पड़ेगा, तभी इसके मूल्य का आकलन संभव हो सकेगा।

''दीक्षा'' के माध्यम से शुद्ध करता हुआ, वह उसे निर्मल बनाता ही रहता है— ''जिस प्रकार हीरे को कई बार तराशने के बाद ही उसमें चमक आती है, ठीक उसी प्रकार बार-बार दीक्षा क्रम से शिष्य को गुजरना पड़ता है, बहुत दिनों से मैले कपड़ों को बार-बार साबुन से धोना पड़ता है. . . तभी उसमें वह शुभ्रता आ पाती है।''

कभी भी ऐसा नहीं सोच लेना चाहिए, कि एक बार दीक्षा ले ली और इतिश्री हो गई। दीक्षा की प्रक्रिया ही यही है, कि साधक अपनी क्षमतानुसार विभिन्न दीक्षाओं के माध्यम से गुरु के उस दिव्यतम ज्ञान-समूह को अपने भीतर समाहित करता चला जाय। जहां कहीं भी साधना के मार्ग में रुकावट आती है, सद्यः गुरु अपनी अन्यतम दीक्षाओं के माध्यम से शिष्य को अग्रसर कर देता है। आज दीक्षा ही उस परम तत्त्व तक पहुंचने का सशक्त स्रोत है।

सात वर्ष की **''काली साधना''** से **विवेकानन्द** को क्या मिला, निराशा और उदासीनता, वहां गुरु की आवश्यकता उस शिष्य को हुई, फिर रामकृष्ण ने **''चैतन्य दीक्षा''** से उन्हें दीक्षित किया, अपने समस्त ज्ञान, तप और साधना के प्रतिफल को विवेकानन्द के रूप में रूपान्तरित करके अपनी खोज को वहीं स्थगित कर दिया।

दीक्षा अध्यात्म जीवन का मुख्य पाथेय है, इसके बिना तत्त्व-प्राप्ति की, ज्ञान-लाभ की संभावना ही नहीं बनती। दीक्षा के हजारों तरंगित प्रवाह हैं, किसी भी प्रवाह में तैरते हुए आप समुद्र तक पहुंच सकते हैं, पर डूब नहीं सकते, क्योंकि आपके सामने जीवित-जाग्रत और चैतन्य गुरु सुरक्षा के लिए तथा सशक्त हाथों का सहारा देने के लिए निरन्तर आपके साथ हैं।

दीक्षा वर्तमान में आपके लिए संजीवनी है, क्योंकि जिस वातावरण में आप रह रहे हैं, वह साधना का प्रतिगामी है। आज साधना करने के लिए आपके पास समय ही नहीं है, लम्बी-लम्बी इन साधनाओं को आप कर ही नहीं सकते, आपके मन में, शरीर में वह क्षमता ही नहीं है, इसलिए दीक्षा एकमात्र उपाय है, जो आपको सक्षम, तेजस्वी एवं ओजस्वी बना सकती है, जिससे कि आप-अपने लक्ष्य-प्राप्ति में सफल हो सकें।

नवार्ण दीक्षा

''ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'' की उदात्तम शक्ति से समन्वित यह दीक्षा, जो अगले माह में सम्पन्न होगी, शीघ्र ही साधक के व्यक्तित्व को तेजस्विता से पूर्ण कर देती है।

जब जीवन का प्रत्येक पक्ष विघ्न-बाधाओं से घिर जाय, शत्रु पग-पग पर चोट पहुंचाने लगें, अपने कहे जाने वाले लोग भी जब जीना मुश्किल कर दें, हर स्थिति में जब वंचना की ही स्थिति दिखाई दे, तब यह दीक्षा आपके लिए सम्बल होगी, जो नई स्फूर्ति और शक्ति प्रदान करके जीवन के प्रति आशा की नई किरण प्रस्फुरित करेगी, जीवन में आनन्दपूर्वक जीने की नई विधि उजागर हो सकेगी तथा साधना के क्षेत्र में भी शीघ्र सफलता दृष्टिगोचर होगी।

पूर्वजन्मकृत दोष निवारण दीक्षा

साधना के क्षेत्र में त्वरित गति से आगे बढ़ने के लिए साधक वर्तमान में किये गए दोषों और पापों के शमन के उपाय प्रायः करते ही रहते हैं तथा हवन, मंत्र-जप आदि कई उपायों से अपने को परिशुद्ध कर लेते हैं, किन्तु कुछ अज्ञात दोष ऐसे होते हैं, जिनके प्रबल अवरोध के कारण साधनाओं में विघ्न आ जाते हैं, ऐसे दोषों के प्रशमन हेतु, जिन्हें साधक जान नहीं पाते, किन्तु दोष प्रबल हैं, अन्य उपायों से शान्त नहीं होते, उस स्थिति में उपरोक्त दीक्षा ही शेष रह जाती है।

पूर्वजन्मकृत दोष इतने अधिक होते हैं, जिसके निवारण के लिए पुनः-पुनः दीक्षा लेते ही रहनी चाहिए। ऐसी दीक्षा, जो देव दुर्लभ है, लेने के बाद वह आपके लिए सौभाग्यप्रद हो सकती है।

विजय दीक्षा

हर प्रबुद्ध व्यक्ति का कोई न कोई एक सुनहरा स्वप्न होता है, कि मुझे जीवन में क्या बनना है— डॉक्टर, इंजीनियर, मंत्री या व्यवसायी आदि, इसके लिए वह प्रयास भी करता है, तदनुकूल शिक्षा को भी ग्रहण करता है, अन्त में वह जीवन के उस मोड़ पर आकर खड़ा हो जाता है, जहां और अधिक इंतजार के लिए उसके पास समय नहीं होता, वह शीघ्रता से अपनी मंजिल तय करना चाहता है, वह हर दृष्टि से सफल होना चाहता है, किन्तु दुर्भाग्यवश अनेक ग्रहादि दोषों के कारण अपना मन्तव्य नहीं छू पाता, तब वह कुण्ठाग्रस्त हो जाता है, हीन भावनाओं का शिकार होकर जीवन के प्रति अनास्था आ जाती है।

फिर कोई उत्साह और उमंग किसी कार्य के प्रति नहीं रहती, तब वह समाज में अपमानित होता है, जीवन उसके लिए भार स्वरूप हो जाता है, वह या तो अपराधी हो जाता है अथवा आत्महत्या आदि जघन्य कृत्य की ओर प्रवृत्त होने लगता है। उस स्थिति में उसके लिए ''विजय दीक्षा'' रामबाण सिद्ध होती है, जो शीघ्र ही उस व्यक्ति को ईप्सित लाभ की ओर प्रेरित करती है, और पुनः उसे सम्मानजनक जीवन प्रदान करके सौभाग्यशाली व्यक्तित्व का धनी बना देती है।

गृहस्थ प्रयोग

भ्रं भ्रं भ्रं भैरवाय नमः

दक्षिणोन्मुखी भैरव प्रयोग

जो सम्पूर्ण जीवन की सुदर्शन चक्र की तरह रक्षा करता है
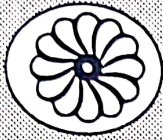
मंगलकारक देव भैरव अग्र-पूज्य देव के रूप में सर्वपूजित हैं. . . जो कलियुग में रक्षाकारक, विघ्नविनाशक देव के रूप में जन-जन में विख्यात हैं. . .
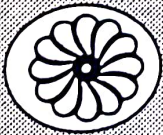
किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व जिस प्रकार गणपति का स्मरण किया जाता है, उसी प्रकार भैरव भी अग्रपूज्य देव के रूप में पूजित हैं। यदि आप किसी गांव में चले जायें, वहां भैरव का मंदिर तो आपको अवश्य ही दिखाई दे जायेगा, क्योंकि भैरव विघ्नविनाशक देव के रूप में जन-जन में विख्यात हैं।

कैसा भी संकट हो पल भर में ही भैरव अपने भक्त को उससे उबार देते हैं, तभी तो हजारों लोगों का विश्वास उनसे जुड़ा है। आज शहरों में भी जगह-जगह भैरव मंदिरों की स्थापना की जा रही है।

कैसा भी कार्य हो—भवन निर्माण, व्यापार-वृद्धि, यज्ञ आदि इनको करने से पूर्व भैरव पूजन अवश्य किया जाता है, जिससे कि उस कार्य में किसी भी प्रकार की कोई बाधा या विघ्न उपस्थित न हो सके, क्योंकि भैरव रक्षाकारक देव माने जाते हैं।

जब जीवन ज्यादा कठिन और दुर्बोध बन जाय, पग-पग पर कठिनाई आने लगे, अकारण ही शत्रु पैदा होने लगें, शरीर रोग ग्रस्त हो जाय, ऋण नहीं उतर पा रहा हो—समस्त प्रकार के उपद्रवों की शान्ति के लिए यह ''भैरव प्रयोग'' इस कलियुग में अत्यंत महत्त्वपूर्ण और आवश्यक माना गया है, जो शीघ्र फलप्रद होता ही है।

हम जिस युग में सांस ले रहे हैं, वह संघर्ष, स्वार्थ, छल, प्रतिस्पर्धा तथा येन-केन-प्रकारेण अपने अस्तित्व को बनाये रखने का युग है, मनुष्य के पास इतना भी समय नहीं है, कि वह कुछ सोच-विचार कर सके, कुछ क्षणों के लिए मानस में यह चिन्तन आता भी है, कि क्या हमारे जीवन का यही ज्ञेय-प्रेय है, क्या इसी तरह दुःखों को भोगते हुए मृत्यु की गोद में सो जाना है?

इन्हीं प्रश्नों का समाधान है— **''दक्षिणोन्मुखी भैरव साधना''**, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन में आने वाली हर बाधा या अड़चन का सामना दृढ़ता के साथ कर पाता है, वह समय की चुनौती को स्वीकार कर ऊर्ध्वगामी जीवनयापन करता है, क्योंकि जब किसी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होगा और न ही किसी प्रकार का उपद्रव या बाधा आयेगी, तो साधक को हर कार्यक्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त होगी ही, अतः जो बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं, वे भैरव प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करते हैं और अपने

जीवन का भाग्योदय कर लेते हैं तथा निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होते रहते हैं।

शत्रु और बाधा कोई भी छोटी या बड़ी नहीं होती, वह तो हर रूप में विशालकाय ही होती है, परन्तु भैरव प्रयोग सम्पन्न कर आत्मविश्वास द्वारा उस पर विजय प्राप्त की जा सकती है। जीवन ज़ीना वास्तव में तलवार की धार पर चलने के समान है और गृहस्थ व्यक्ति के लिए तो परेशानियों का अंत ही नहीं रहता, इन परिस्थितियों से गुजरते हुए यदि व्यक्ति कुछ विशेष करके दिखाता है, तो वास्तव में ही उसका जीवन धन्य है। कहते हैं — आपदाएं-विपदाएं कभी निमंत्रण देकर नहीं आतीं, इनसे छुटकारा पाने का सर्वोत्तम उपाय दक्षिणोन्मुखी भैरव प्रयोग ही है।

गुरु गोरखनाथ, शंकराचार्य, अवधूतानन्द आदि ने इस प्रयोग को सम्पन्न किया था और वे अपने जीवन को सुरक्षित रख पाये, जब भयंकर से भयंकर स्थिति में भी किसी कार्य की पूर्णता हेतु कोई मार्ग नहीं दिखता, तो इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर वे अवरोध समाप्त हो जाते हैं, जो उस कार्य की सिद्धि के लिए बाधक होते हैं; इस प्रकार चौबीसों घंटे उनकी सुरक्षा बनी रहती है।

यह दक्षिणोन्मुखी भैरव प्रयोग सुदर्शन चक्र की भांति ही रक्षक बनकर साधक के जीवन को सुरक्षा प्रदान करता है, यह प्रयोग अपने-आप में अत्यंत अद्‌भुत एवं शीघ्र फलदायक है।

कलियुग में जितना तीव्र प्रभावकारी यह प्रयोग है, उतना कोई दूसरा है ही नहीं। इसके द्वारा जीवन का प्रत्येक पहलू आसानी से सुलझाया जा सकता है, यदि किसी व्यक्ति का व्यापार नहीं चल रहा हो, नौकरी नहीं लग रही हो, कर्जा उतारना हो, रोग से मुक्ति नहीं मिल रही हो, मुकदमे में हार का सामना करना पड़ रहा हो, कोई यज्ञ या अनुष्ठान कार्य सम्पन्न करना हो इत्यादि समस्याओं के समाधान हेतु यह प्रयोग अत्यंत सहायक एवं लाभकारी है। यह प्रयोग समस्याओं और विपत्तियों से छुटकारा पाने के लिए अमोघ औषधितुल्य है, इसलिए घर के प्रत्येक कलह, द्वन्द्व, लड़ाई-झगड़े आदि को दूर कर सुख-शांति का साम्राज्य स्थापित करने के लिए इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए; चाहे वह व्यक्ति वृद्ध हो, बालक हो, स्त्री हो, पुरुष हो; कोई भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर जीवन भर सुरक्षित बना रह सकता है।

बड़े-बड़े तांत्रिकों, अघोरियों, साधु-संन्यासियों, योगियों ने इस प्रयोग को किया है और बार-बार करते रहते हैं, जिससे
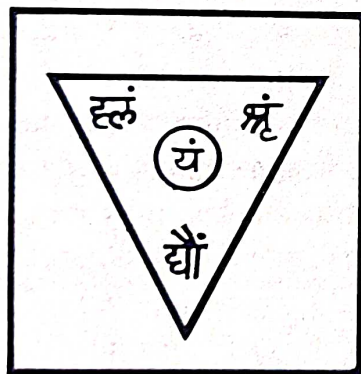
भैरव यंत्र

''भयमीरयित्वा अवतीति भैरवः''

यह ''दक्षिणोन्मुखी भैरव प्रयोग'' सुदर्शन चक्र की भांति ही जीवन को सुरक्षा प्रदान करने वाला अद्वितीय एवं तीव्र प्रभावकारी है, जो. . .
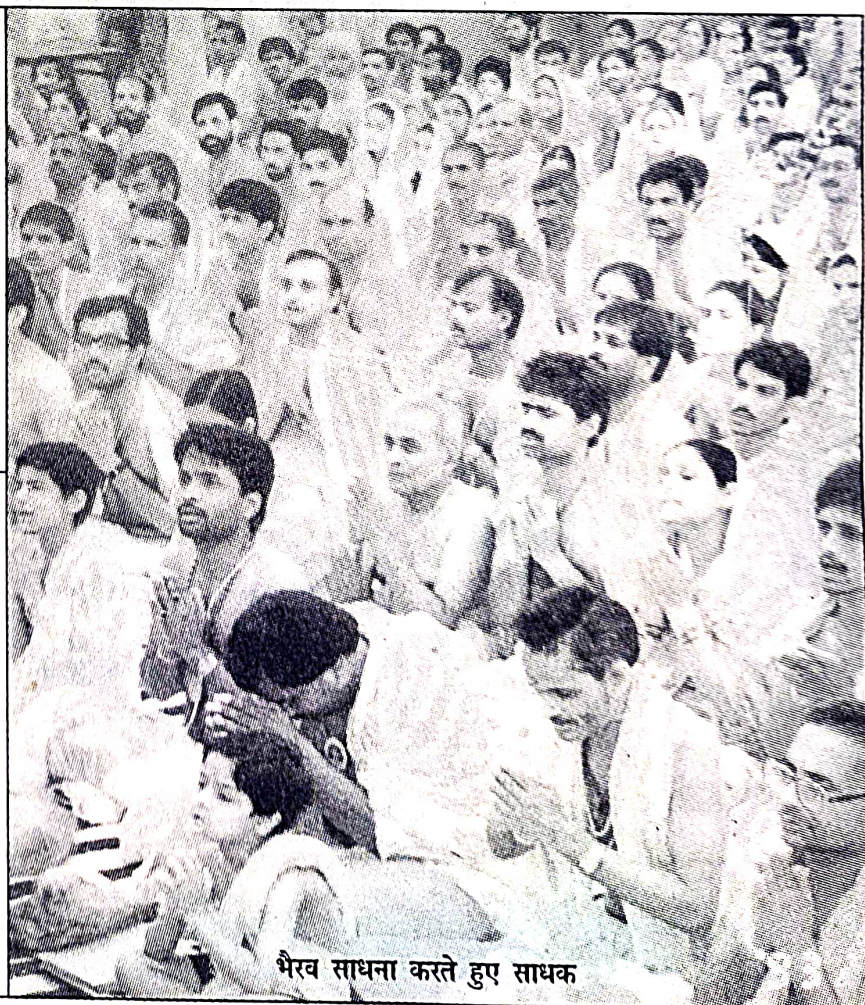
भैरव साधना करते हुए साधक

कि कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की बाधा से जूझना न पड़े, अड़चनों का मुंह न देखना पड़े। सर्वथा पहली बार यह प्रयोग गृहस्थ साधकों के लिए यहां दिया जा रहा है, जिससे कि वे भी इसके महत्त्व को भली प्रकार समझकर अपनी सुरक्षा आप कर सकें।

साधना विधि :

१. इस प्रयोग के लिए **'महाभैरव यंत्र'** जो भैरव तंत्र के दिव्य मंत्रों से अनुप्राणित हो, **'तांत्रोक्त नारियल'**, तीन **'काल गुटिका'** तथा सरसों के दाने, काली मिर्च, आम की सूखी लकड़ी, घी, सिन्दूर, हवन-सामग्री साधना से पूर्व ही एकत्रित करके रख लें।

२. **बुधवार, मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष १५.११.९५ काल भैरवाष्टमी** के दिन इस प्रयोग को करें, यदि किसी कारणवश इस अवसर पर प्रयोग न कर पायें, तो किसी भी **सिद्धि योग** के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकते हैं।

३. **रात्रि १०.०० से १२.०० बजे के मध्य** प्रयोग करें।

४. इस साधना में **दक्षिण दिशा** की ओर मुंह करके काले आसन पर बैठें, काली धोती पहिन कर गुरु चादर ओढ़ लें, सामने एक छोटी-सी चौकी पर चावल की ढेरी बनाकर ''महाभैरव यंत्र'' स्थापित कर दें।

५. यंत्र स्थापित करने के बाद उसके सामने ही चावलों की तीन ढेरी और बनायें, उस पर तीनों ''काल गुटिकाओं'' को स्थापित कर दें, ये गुटिकायें 'अकाल मृत्यु', 'राज्य भय' और 'शत्रु भय' निवारक हैं।

६. फिर **''ॐ सर्व भयनाशय भें नमः''** इस मंत्र का उच्चारण करके यंत्र पर तथा उन तीनों गुटिकाओं पर कुंकुम का तिलक करें।

७. अक्षत

निम्न संदर्भों को बोलकर यंत्र पर धीरे-धीरे चावल छिड़कें—

ॐ अकाल मृत्युहराय नमः

ॐ सर्वविघ्नोपशान्ताय नमः

ॐ दुरित नाशाय नमः

ॐ भवभीतिहराय नमः

ॐ शान्तोपद्रवाय नमः

इसके बाद हाथ के सभी चावलों को यंत्र पर चढ़ा दें।

८. पुष्प

इसके बाद यंत्र पर पुष्पों की वर्षा करें और अपने सुख-सौभाग्य की कामना करें—

**ॐ भैरवाय नमस्तुभ्यं सर्वसौभाग्यदायिने।
पुष्पांजलिर्मया दत्ता स्वीकुरुष्व दयार्णव।।**

९. नमस्कार

दोनों हाथ जोड़ कर भैरव को नमस्कार करें—

**ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं सर्व कायार्थ सिद्धिदः।।**

१०. इसके बाद एक छोटा-सा हवन-कुण्ड बनाकर उसमें आम की सूखी लकड़ी जलायें। हवन-सामग्री में घी मिला दें तथा निम्न मंत्र बोलकर १०८ **आहुति** भैरव के नाम से दें—

''ॐ भं भैरवाय नमः''

११. अन्त में ५ आहुति काली मिर्च की तथा ११ आहुति सरसों की दें, फिर ''तांत्रोक्त नारियल'' को सिन्दूर से रंग कर उस पर मौली बांध दें तथा **२१ बार मूल मंत्र** को पढ़कर आहुति दें।

१२. इसके बाद **दस मिनट** तक मूल मंत्र का खड़े होकर एकाग्रचित्त व शुद्ध मन से जप करें—

मूल मंत्र :

।।ॐ भ्रं भ्रं भ्रं भैरवाय नमः।।

१३. मंत्र-जप के पश्चात् यंत्र एवं गुटिकाओं तथा अक्षत, पुष्प आदि को नदी में विसर्जित कर दें।

१४. घर आकर हाथ-पैर अच्छी तरह से धो लें तथा किसी काले कुत्ते को एक रोटी खिला दें।

मृत्यु भय, राज्य भय, भूत-प्रेत भय तथा अन्य किसी प्रकार के भय को समाप्त करने के लिए यह प्रयोग अपने-आप में अद्वितीय एवं प्रामाणिक है। गृहस्थ होने के कारण इस प्रयोग को यथा अवसर करते रहना चाहिए, क्योंकि विघ्न जीवन में आपाततः कभी भी आ सकते हैं, और आते ही हैं; जिनको आप इस प्रयोग के माध्यम से दूर कर विजय श्री प्राप्त कर सकते हैं।

साधना-सामग्री (यंत्र, नारियल, गुटिका) न्यौछावर— ३६०/-

प्रिय बन्धुओं . . .

''साधक साक्षी हैं'' स्तम्भ आपका-अपना ही स्तम्भ है, इसमें हम उन पत्रों को सम्मिलित करते हैं, जिनमें साधना-जीवन में घटी उन अनुभूतियों का समावेश हो, जिसे व्यक्ति सहज एक संयोग नहीं मानता, वह उसे दैव कृपा या अपने इष्ट की कृपा मानता है, इस स्तम्भ के अन्तर्गत हमें अनेकों पत्र प्राप्त होते हैं, जिन्हें हम समय-समय पर आपके समक्ष रखते हैं, जिससे आप भी इन साधनाओं, दीक्षाओं को प्राप्त कर अपने जीवन को ऊर्ध्वगामी बना सकें। यों तो आप कुछ भी नहीं करेंगे, तब भी समय का चक्र आपको श्मशान की यात्रा तक धीरे-धीरे पहुंचा देगा, इसके लिए आपको कुछ करने की जरूरत नहीं है . . . पर जीवन में किसी समय, किसी मोड़ पर यदि गुरु मिलें, जिनके पास ज्ञान हो, तो जीवन क्रम में से इतना समय अवश्य निकाल लेना, कि वह ज्ञान प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बना सको। कृपया आप लोग अपनी अनुभूतियों को लिख कर भेजने के साथ-साथ अपना फोटो भी भेजा करें, जिससे कि आपकी अनुभूतियों के साथ-साथ आपका फोटो भी प्रकाशित किया जा सके।

– उपसम्पादक

समय परीक्षा का सहारा गुरुदेव का

मैं अपनी इस वर्ष की परीक्षा के दिनों का अनुभव कुछ शब्दों में प्रेषित कर रहा हूं। **मैंने कक्षा १२वीं की परीक्षा दी, परीक्षा के प्रथम दिन का प्रथम प्रश्न-पत्र बिगड़ गया था,** जिससे आगे की परीक्षा देने में मुझे बेचैनी-सी होने लगी थी। परीक्षा के बाद मैं घर वापिस आया, आने पर पिताजी प्रश्न-पत्र के विषय में पूछने लगे, पर मैं क्या उत्तर देता, जो सही बात थी, बता दी। इस पर पिताजी, जो परम गुरुदेव जी के शिष्य हैं, कहा कि– ''घबराने की कोई बात नहीं है, गुरुदेव जी का सहारा है, सब ठीक हो जायेगा।''
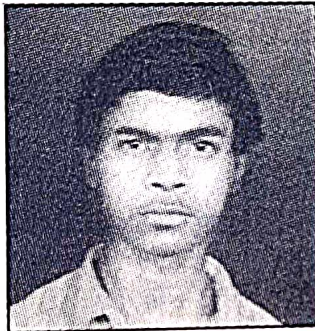
अगले दिन प्रातः पूजन के वक्त पिताजी भोपाल शिविर में मिले ''श्री गुरु चित्र-यंत्र'' साथ रखने को व गुरु चरणामृत दिया। मैंने मन ही मन गुरुदेव जी की प्रार्थना की व पैर पड़ कर परीक्षा देने चला गया। परीक्षा भवन में प्रश्न-पत्र व कॉपी मिलने के बाद प्रश्नों के उत्तर मेरे मन में अपने-आप आने लगे, जिससे मेरी कलम चलती रही, मेरा प्रश्न-पत्र अच्छा गया। फिर क्रमशः बाकी दिनों के भी प्रश्न-पत्र इसी प्रकार अच्छे गये।

परीक्षा फल आने पर मुझे पता चला, कि मैं द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गया, यह सब परमपूज्य गुरुदेव जी की कृपा से ही संभव हुआ।

मैं ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका का पाठक हूं, जो मुझे काफी अच्छी लगती है और मुझे इस पत्रिका से अपार ज्ञान की प्राप्ति होती है। मेरा भविष्य आपकी ही कृपा पर निर्भर करता है।

दीपक कुमार दाहिया
शहडोल, म.प्र.

पूर्ण चैतन्य पुस्तिका– यज्ञ-विधान

मैं कैलाश निषाद आरंग से। हमने उज्जैन के शिविर में भाग लिया था तथा वहीं से आते समय हमने यज्ञ-विधान की पुस्तक स्टॉल से खरीदी।

दिनांक १४.५.९५ को रविवार, बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर गुरुदेव को साक्षी मान कर **''दैनिक साधना विधि''** पुस्तक के अनुसार गुरु-पूजन सम्पन्न कर **''यज्ञ-विधान''** पुस्तक के अनुसार यज्ञ सम्पन्न किया। यज्ञ कर्ता के रूप में मेरा बड़ा भाई भोलाराम निषाद, रायपुर से आया था। यज्ञ कार्य पूर्ण विधि-विधान से सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ के सम्पन्न होने से हमारे घर में असीम शांति आ गई है।

अतः गुरुदेव ने यह ग्रंथ रचकर बहुत ही समाजोपयोगी एवं कल्याणकारी कार्य किया है। इस ग्रंथ को पाकर हम पूरे परिवार के साथ आपके ऋणी हैं। हे गुरुदेव! हमसे यज्ञ कार्य में बहुत सी गलतियां हुई हैं, आप हमारी गलतियों को क्षमा कर, हमें आशीर्वाद प्रदान करें।

कैलाश निषाद
शीतल पारा, आरंग

यह तो गुरु कृपा ही है

मुझे दीक्षा लिए करीब डेढ़ वर्ष हुआ है। दीक्षा से पूर्व मेरी आर्थिक हालत खराब चल रही थी, और मैं काफी घाटे में जा चुका था। मैंने फरीदाबाद (सूरज कुण्ड), इलाहाबाद और पानीपत के शिविर में भाग लेकर गुरु-चरणों में रहने का सौभाग्य प्राप्त किया तथा मैं गुरुधाम, दिल्ली में भी नियमित आता-जाता रहता हूं।

बात कराला शिविर (१ से ८ अप्रैल-९५) के समय की है, मैं दीन-दुनिया से बेखबर शिविर में बैठा हुआ था। मेरी लड़की की शादी पांच साल से कहीं तय नहीं हो रही थी। मैं और मेरा परिवार अत्यन्त परेशान व अर्थाभाव से ग्रस्त था।

कराला शिविर के समय घर के सदस्यों ने एक अच्छे घर से सम्बन्ध आने की सूचना दी, परन्तु पैसे का इन्तजाम न होने से चिन्ता जतायी। मैंने पूर्ण आत्मविश्वास से कहा, कि– "मेरे जीवन के आधार गुरुदेव की कृपा से शादी धूमधाम से होगी, सारा इन्तजाम वे ही करेंगे", और हुआ भी यही, २२ अप्रैल-९५ को पूज्य गुरुदेव अपनी सूक्ष्म, किन्तु स्पष्ट उपस्थिति में मेरी लड़की की शादी में उपस्थित हुए और शादी सम्पन्न कराई।

अब मैंने अपना सारा शेष जीवन इन्हीं के चरणों में सादर समर्पित कर दिया है। अब प्रभु से एक ही प्रार्थना है, कि मुझ निर्बल की ऐसी परीक्षा न लें, कि उसमें खरा न उतर सकूं, क्योंकि मेरी कुछ भी सामर्थ्य नहीं है। मुझे अपने चरणों से कभी दूर न करें।

आर.सी. गुप्ता "निखिल"
रोहिणी, नई दिल्ली

परीक्षा में प्रथम स्थान : गुरु कृपा

मैंने अपने माता-पिता के साथ भोपाल शिविर में **"गुरु दीक्षा"** ली थी, दीक्षा के कुछ दिनों बाद ही मेरी परीक्षा होने वाली थी। इसलिए मेरे पापा जी ने जोधपुर कार्यालय से "होली के अवसर पर १०८ सिद्ध सचोट सफल प्रयोग" के अंतर्गत परीक्षा में अच्छे नम्बर से पास होने के लिए होली के महापर्व पर "अंखूर" का पूजन कर उसे ताबीज के रूप में मेरे गले में धारण करा दिया।

मैं पांचवीं कक्षा की छात्रा हूं, और बोर्ड परीक्षा के समय मेरी तबियत खराब थी, फिर भी मैंने परीक्षा दी। उस समय हमारी खुशी का ठिकाना न रहा, जब मैंने पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा से पूरे भैसदेही ब्लाक के १३० स्कूलों में ८४ प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया, यह सब आप ही की कृपा दृष्टि का फल है गुरुदेव!

कु० सरोजबाला
बैतूल, म० प्र०

गुरु मंत्र की महिमा

मैं साधक के रूप में गुरु-चरणों में पूर्णरूप से एक वर्ष से जुड़ा हूं। मैं नेहरू प्लेस दूरभाष केन्द्र दिल्ली में दूरभाष निरीक्षक के पद पर हूं।

दिनांक ०२/०८/९५ बुधवार का दिन समय ४ बजे मुझे लाइन मैन का फोन आया, कि प्रेमशंकर नाम के व्यक्ति की हालत अचानक दर्द उठने से बिगड़ गयी है। मैं तुरन्त वहां पहुंचा, उपचार के रूप में गुरुदेव से मानसिक आदेश लेकर, 'गुरु मंत्र' पढ़कर जल छिड़का, कुछ जल उसे पिला दिया। इस क्रिया से पूर्व वह हल्की बेहोशी में पहुंच कर उखड़ी-उखड़ी सांसें लेने लगा था।

गुरु मंत्र से अभिमंत्रित जल पीकर वह कुछ समय बाद उठ बैठा और अब वह बिलकुल स्वस्थ है। उसका भाई मनु हमारे साथ तथा कम-से-कम पचास आदमी सड़क पर चारों ओर खड़े थे, सब-के-सब आश्चर्यचकित रह गये। सभी को मैंने बताया, कि यह करिश्मा हमारे पूज्य गुरुदेव के द्वारा ही हुआ है, सभी ने आश्चर्य व्यक्त किया, और मुझसे आग्रह किया, कि– "हमें भी उनसे दीक्षा व मंत्र दिलाइये व हमें पत्रिका का सदस्य बनवा दीजिए।"

और उसी समय कम-से-कम दस व्यक्तियों ने पत्रिका की सदस्यता हेतु मुझे शुल्क दे दिया। पत्रिका के प्रचार-प्रसार के लिए यह घटना मेरे लिए प्रेरणा व ऊर्ध्वमुखी विकास का स्रोत साबित हुई है।

त्रिलोक चन्द त्यागी
दूरभाष केन्द्र, नई दिल्ली

निखिल स्तवन तो गुरु चेतना है

आपके द्वारा भेजी हुई अप्रैल-मई-जून की पत्रिका मिली, आपका भेजा हुआ **"निखिल स्तवन"** एवं **"व्यापारवर्द्धक यंत्र"** भी मिल गया और आशीर्वाद पत्र भी प्राप्त हुआ। अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मैं आपकी कृपा से उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा हूं और मैं आगामी शिविरों में अवश्य आऊंगा।

हे गुरुदेव! "निखिल स्तवन" पढ़कर तो ऐसा लगा, जैसे मेरे सारे शरीर में विद्युत धारा सी बहने लगी हो, मेरी सारी समस्याएं धीरे-धीरे हल होने लगी हैं, यह स्तवन मेरे जीवन की अनमोल धरोहर है। शेष आप तो सर्वज्ञानी हैं। निश्चय ही यह "निखिल स्तवन" आने वाली पीढ़ी के लिए, आने वाले युग के लिए 'दुर्लभोपनिषद' अर्थात् 'गुरोपनिषद' सिद्ध होगा। इस ग्रन्थ को पढ़कर आने वाली पीढ़ियां 'गुरु' शब्द का अर्थ और जीवन में सही रूप से गुरु के महत्त्व को समझ पायेंगी।

जगरनाथ रोटीवाला, दिल्ली

अनिन्द्य अद्वितीय जगमगाता

ऊर्जस्वतं सुदीप्तत्वं, तेजस्वं सुमनोहरम्।
आह्लादकत्वं माधुर्यं, सौन्दर्यं जीवनोद्भवम्।।

"ऊर्जस्विता, सुदीप्तत्व, तेजस्विता, आह्लाद और माधुर्य ही जीवन का वास्तविक सौन्दर्य है।"

जीवन में हास्य, विनोद, आनन्द व तृप्ति प्राप्त हो जाना कोई सामान्य सी बात नहीं होती, यह तो जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है, जिसे प्राप्त करने के लिए बड़े-बड़े योगियों और ऋषि-मुनियों ने कठिन-से-कठिन तप किये हैं, तब जाकर वे पूर्ण कहलाये और यह दिखा दिया, कि यदि व्यक्ति दृढ़ निश्चयी और आत्मविश्वासी हो, तो वह तप व साधना के बल पर क्या कुछ नहीं कर सकता; और जब ऐसा होगा, तो उसके चेहरे पर एक ओज, एक उमंग, एक आह्लाद, एक प्रसन्नता स्वतः ही झलकने लग जायेगी. . . और यही तो वास्तविक सौन्दर्य है।

सौन्दर्य किसी नारी, अप्सरा या प्रकृति का नाम नहीं है, वे तो केवल सौन्दर्य के प्रतिमान हैं। **"जिसे देखकर आप अपने-आप को चिंतामुक्त अनुभव करने लगें और आनन्द की स्थिति उत्पन्न होने लगे, सही अर्थों में वही सौन्दर्य है।"**

आज सौन्दर्य प्रसाधनों के माध्यम से व्यक्ति सौन्दर्यशाली बने रहने का प्रयारा करता है, तरह-तरह के विटामिन्स खाता है। सौन्दर्य विशेषज्ञ भी सौन्दर्य का स्थायी हल ढूंढने के प्रयास में रत हैं, किन्तु आज तक स्थायी उपाय प्राप्त करने में असफल ही हैं। हां, यह जरूर है कि सर्जरी

सौन्दर्य

जिसे अप्सराएं भी सिद्ध करती हैं

के माध्यम से चेहरे व शरीर की झुर्रियों को समाप्त करने में डॉक्टर सफल हुए हैं, किन्तु यह चिकित्सा अत्यन्त महंगी है और अत्यन्त कष्ट साध्य भी; जिसे अपनाना प्रत्येक व्यक्ति के सामर्थ्य की बात नहीं है।

यदि हम अपना थोड़ा-सा ध्यान ऋषि परम्परा द्वारा अविष्कृत उपायों पर डालें, तो हमें पता चलेगा कि सौन्दर्य का स्थायी उपाय उन लोगों ने बहुत पहले ही ढूंढ निकाला है। हमारे प्राचीन ऋषियों धन्वन्तरी, अश्विनी, च्यवन आदि ऐसे व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने पूरे जीवन को इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु लगा दिया, कि–

– आखिर जीवन का वास्तविक तथ्य क्या है?

– कैसे अपने-आप को ओजस्वी, यौवनवान और सौन्दर्यवान बनाया जा सकता है?

– किस प्रकार बुढ़ापे को जवानी में बदला जा सकता है?

– किस प्रकार अपने पूर्ण शरीर का कायाकल्प किया जा सकता है?

''कायाकल्प'' का तात्पर्य उस सदाबहार तरोताजगी, अद्वितीय सौन्दर्य और उस मस्ती से है, जो जीवन में आनन्द का बीज बो दे, ६० वर्ष के वृद्ध को भी १६ वर्षीय पूर्ण सौन्दर्य प्रदान कर दे, क्योंकि व्यक्ति तन से भी अधिक मन पर थोपे गये विचारों से बूढ़ा हो जाता है और उसका सारा सौन्दर्य ही ढल जाता है. . . जीवन में इस आनन्द का होना ही सौन्दर्य-वृद्धि है।

अनिन्द्यं अद्वितीयं च सौन्दर्यं यान्ति निश्चितम्।
साधनां सौन्दर्याख्याय कांक्षन्त्यप्सरोऽपि यत्।।

"निश्चित रूप से साधना के द्वारा अनिन्द्य सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है, अप्सराएं भी सुन्दरतम बनने के लिए सौन्दर्य साधना करती हैं।"

"सौन्दर्य साधना" ऐसी ही अद्वितीय साधना है, जिसे अप्सराओं ने भी सिद्ध किया, वैसे तो पूर्ण यौवनवान और सौन्दर्यवान बनने के लिए १६ प्रकार की अप्सराओं की साधनाओं का ही महत्त्व पुराणों में प्रतिपादित किया गया है, किन्तु जिसे प्राप्त करने के लिए स्वयं अप्सरायें भी लालायित हों, उस सौन्दर्य की तो मात्र कल्पना ही की जा सकती है और ऐसे अद्वितीय सौन्दर्य का प्राप्त होना जीवन का सौभाग्य है, जीवन की श्रेष्ठता है, जीवन की सम्पूर्णता है।

इस साधना को स्त्री व पुरुष दोनों ही सम्पन्न कर अपने शरीर का पूर्ण कायाकल्प कर सकते हैं, जहां पुरुष यह साधना कर ऊंचा कद, उन्नत ललाट, अत्यधिक दिव्य और तेजस्वी आंखें, उभरा हुआ वक्षस्थल, लम्बी भुजाएं और इसके साथ-ही-साथ दृढ़ता, पौरुषता, साहस प्राप्त कर ऐसे सौन्दर्य का मालिक बनता है, जो दर्शनीय हो, शौर्य और साहस का प्रतिबिम्ब हो; वहीं स्त्रियां भी सांचे में ढला हुआ भरा-पूरा शरीर, गोरा रंग, अण्डाकार चेहरा, उन्नत उरोज और मुट्ठी में आने लायक कमर– एक ऐसा शरीर, जो खिले हुए गुलाब के पुष्प की याद दिलाता हो, जिसे देखकर बहते हुए झरने का लुभावना नृत्य दिखाई दे, जिसके एहसास से ही जीवन में आनन्द की अनुभूति होती हो, प्राप्त कर लेती हैं।

"सौन्दर्य का अर्थ है– जो अच्छा लगे, जिसे देखने का मन करे, ऐसा रूप, सौन्दर्य ही वास्तविक सौन्दर्य है. . . सुन्दर होना, सुन्दर दिखना, सुन्दरता का सम्मान करना, उसकी प्रशंसा और सराहना करना मानव का धर्म है, चाहे वह "प्राकृतिक सौन्दर्य" हो या "नारी सौन्दर्य". . . क्योंकि सौन्दर्य ही सृष्टि का आधार है।"

सौन्दर्य तो आधार है जीवन का, ईश्वर का दिया हुआ वरदान है, जिसका प्राप्त होना जीवन की श्रेष्ठता, पूर्णता कही जाती है। जितने भी ग्रन्थ, वेद, पुराण लिखे गये हैं, उन सब में सौन्दर्य का विस्तृत विवेचन हुआ है।

सुन्दर होना, सुन्दर दिखना, सुन्दरता का सम्मान करना, उसकी प्रशंसा और सराहना करना मानव का धर्म है। मैंने अपने जीवन में सिद्धाश्रम में अनिन्द्य सुन्दर साधिकाओं और संन्यासियों को देखा है, एक से बढ़कर एक सुन्दरियों व अप्सराओं को भी साधनारत होते देखा है, जो अपनी देहयष्टि को पूर्ण यौवनवान, सौन्दर्यवान और चैतन्यवान बनाये रखने के लिए साधनारत रहती हैं।

साधना विधि :

१. कामदेव के मंत्रों से प्रतिष्ठित **'सौन्दर्य यंत्र'**, **'रूपा माला'** और **'नीलकर्ण मुद्रिका'** इन तीनों सामग्रियों को साधना से पूर्व साधक प्राप्त कर लें।
२. यह साधना **१०.११.६५ मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष, शुक्रवार** के दिन प्रारम्भ करें या फिर माह के किसी भी **शुक्रवार** के दिन इस साधना को प्रारम्भ करें।
३. रात्रि को **६.३५ से १२.०० बजे के मध्य** यह साधना करें।
४. साधना करने से एक दिन पूर्व ही अपने साधना कक्ष को अच्छी तरह धोकर साफ-सुथरा कर लें। साधना काल में प्रत्येक सामग्री में नूतनता स्पष्ट होनी

चाहिए, क्योंकि सौन्दर्य साधना के लिए यह सब आवश्यक है।

५. स्वयं भी स्वच्छ व सुरुचिपूर्ण वस्त्र धारण करें।

६. **पूर्व** या **उत्तर दिशा** की ओर मुख कर, **सफेद आसन** पर बैठकर यह साधना सम्पन्न करें।

७. अपने सामने एक चौकी बिछा कर, उसके ऊपर एक कपड़ा बिछा लें, पानी से भरा एक सुन्दर-सा 'कलश' रखें, उसके ऊपर पीला चावल हल्दी से रंगकर एक प्लेट में, जो उस कलश पर रखी जा सके, रख दें।

८. इसके बाद 'यंत्र' को जल से धोकर पोंछ लें और यंत्र पर इत्र छिड़क दें तथा अपने ऊपर भी इत्र छिड़कें। धूप व दीप से वातावरण को सुगन्धमय बनायें।

९. यंत्र को पीले चावलों के ऊपर स्थापित करें, इसके बाद यंत्र पर केसर से ५ बिन्दी लगायें, जो पांच प्राणों की प्रतीक हैं, क्योंकि सौन्दर्य का प्रतिस्फुरण इन्हीं प्राणों के माध्यम से शरीर में अभिव्यक्त होता है।

१०. 'मुद्रिका' को भी यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें।

११. **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं।**
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम्।।

इस मंत्र को बोलते हुए यंत्र पर पांच बिन्दियां लगायें तथा मुद्रिका पर भी एक बिन्दी लगायें।

१२. **अक्षत चढ़ायें–**

अक्षतान् धवलान् देवि शालीयांतन्दुलांस्तथा।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वरि।।

यंत्र, कलश तथा मुद्रिका पर चावल छिड़कें।

१३. इसके बाद धूप और दीप दिखाकर दोनों हाथों में खुले पुष्प लेकर **पुष्पांजलि अर्पित करें–**

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद् भवानि च।
पुष्पांजलिर्मयादत्ता गृहाण परमेश्वरि।।

यंत्र के ऊपर पुष्प चढ़ा दें।

१४. इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर **प्रार्थना करें**– "हे देवी! आपके भीतर समाहित सभी गुण मुझमें अनुप्राणित हों।"

सौन्दर्य भवतीरहोके, माधुर्य ओजमं तेजस्तथेदं।
रूपोज्ज्वला, रूपदिव्या प्रपन्ना, याचे य नित्यं त्वं देहि मातः।।

"हे मां! आप सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी हैं, ओज और तेज सभी दिव्य गुण आप में समाहित हैं, मैं आप से इसी रूपराशि की प्राप्ति की कामना करता हूं।"

१५. इसके बाद निम्न मंत्र का दो दिन तक 'रूपा माला' से **५४ माला मंत्र-जप** करें–

मंत्र :

"ॐ श्रीं सौन्दर्याभिवाप्तये श्रीं नमः"

१६. जप समाप्ति के बाद **गुरु-पूजन** करें व इच्छानुसार गुरु मंत्र-जप करें।

१७. दो दिन तक इसी प्रकार मंत्र-जप करें, इसके बाद समस्त सामग्री को नदी या कुएं में प्रवाहित कर दें।

यह साधना अत्यंत ही प्रभावोत्पादक एवं शीघ्र लाभप्रद है। साधना के थोड़े दिन बाद ही आप-अपने भीतर विशिष्ट गुणों का आविर्भाव अनुभव करेंगे तथा शनैः-शनैः सौन्दर्य-वृद्धि अनुभव होने लगेगी और दूसरों के साथ-साथ स्वयं को भी इस बात का एहसास होने लगेगा। इस साधना को गम्भीरता पूर्वक, पूर्ण श्रद्धा से करें।

साधना-सामग्री (यंत्र, माला, मुद्रिका) न्यौछावर –२५०/

ईश्वर दर्शन

☆ "लज्जा, घृणा और भय – इन तीनों के रहते हुए दर्शन लाभ नहीं होता।"

☆ "अत्यन्त व्याकुल होकर ईश्वर को पुकारो और देखो ईश्वर कैसे दर्शन नहीं देता।"

☆ "पानी में डुबो दिये जाने पर जैसे ऊपर आने के लिए प्राण व्याकुल हो उठते हैं, उसी तरह जब ईश्वर-दर्शन के लिए हृदय में व्याकुलता हो, तभी उसके दर्शन होते हैं।"

☆ "सती का पति के प्रति प्रेम, माता का बालक के प्रति प्रेम और भक्त का भगवान के प्रति प्रेम – इन तीनों प्रेमों को एकत्र करके ईश्वर की ओर लगाने से उसके दर्शन पाये जा सकते हैं।"

– श्री रामकृष्ण

सुखमय, आनन्दमय जीवन के क्षणों में जब विष घुल जाता है और
समस्याओं के हल सही नहीं सूझते. . . यदि किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग करवा दिया जाय

या फिर झगड़े- झंझटों में बार-बार फंस जाना, मुकदमेबाजी जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं। **मंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।** संस्थान के योग्य विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्रसिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास. . .

(न्यौछावर - 11000/- मात्र) **जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।**

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन: 0291-32209,फेक्स: 0291-32010
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट-एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन: 011-7182248, फेक्स: 011-7196700

कनकधारा स्तोत्र

लक्ष्मी का ही साकार और आभामयी स्वरूप है **"कनकधारा"**, जिसकी स्तुति मात्र ही जीवन को आलोकित कर देने वाली है। **सितम्बर अंक ६५** में प्रकाशित **"साधना सफलता"** लेख के अन्तर्गत **"निर्धनता को एक हजार मील दूर भगाइये"** में जिस स्तोत्र की चर्चा की गई थी, वह इस प्रकार है—

कनकधारा स्तोत्र –

अंगं हरे पुलकभूषणमाश्रयन्ती, भृंगांगनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अंगीकृताखिलविभूतिरपांग लीला, मांगल्यदास्तु मम मंगलदेवतायाः।१।
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः, प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीय महोत्पले या, सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः।२।
विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष, मानन्दहेतुरधिकं मधुविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धं, मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः।३।
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द, मानन्दकन्दमनिमेषमनंगतन्त्रम्।
आकेकरस्थितिकनीनिमपक्ष्म नेत्रं, भूत्यै भवेन्मम भुजंगशयांगनायाः।४।
बाह्यन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या, हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्ष माला, कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।५।
कालाम्बुदालितलिसोरसि कैटभारे, र्धाराधरे स्फुरति या तु तडंग दन्यै।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिं, र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः।६।
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्, मांगल्यभाजि मधुमाथिनी मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थम मीक्षणार्द्धं, मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः।७।
दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा, मस्मिन्न वि किंचनविहंगशिशौ विषाणे।
दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरं, नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः।८।
इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र, दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां, पुष्टि कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः।६।
गीर्तेवतेति गरुडध्वजभामिनीति, शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै, तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै।१०।
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै, रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै, पुष्ट्यै नमोस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै।११।
नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै , नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्म भूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै, नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै।१२।
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि, साम्राज्यदान विभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्द्वनानि दुरिताहरणोद्यतानि, मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम्।१३।
यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः , सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः।
सन्तनोति वचनांगमानसैः स्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे।१४।
सरसिजनिलये सरोजहस्ते, धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे, त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्।१५।
दिग्धहस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट, स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुतांगीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष, लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्।१६।
कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं, करुणापूरतरंगितैरपाङ्गैः।
अवलोकय मामकिंचनानां, प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः।१७।
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं , त्रयोमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभामिनी, भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः।१८।

इसका नियमित पाठ करने से दरिद्री से दरिद्री व्यक्ति का दुर्भाग्य भी सौभाग्य में बदल जाता है, जहां इसका श्रद्धा पूर्वक पाठ किया जाता है, वहां लक्ष्मी का आगमन होता ही है। यह स्तोत्र तीक्ष्ण प्रभावकारी है, जिसका फल साधक को आर्थिक उन्नति और सफलता के रूप में मिलता ही है।

राशिफल

मेष -

चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

रुके हुए अथवा बिगड़ते कार्यों से तनाव रहेगा। शत्रु आपके पक्ष में होकर विश्वासघात करेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह माह आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। मित्रों का साथ छूट जाने से खिन्नता होगी। दाम्पत्य सुख अनुकूल रहेगा। यात्रा में अथवा वाहन प्रयोग के समय उतावली न करें, दुर्घटना के सामान्य योग। संतान की उपेक्षा न करें। समाज में मान-सम्मान को हानि होगी। राज्य पक्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। स्वास्थ्य की ओर से किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। सभी प्रकार से अनुकूलता प्राप्ति हेतु "भैरव साधना" सम्पन्न करें। प्रेम-प्रसंगों में उतावली न करें, प्रेम विवाह के योग बनेंगे।

वृषभ -

इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वु, वे, वो

जो कार्य आप करना चाहते थे, उसका किसी भी प्रकार से योग बनता दिखाई न देने से खिन्नता होगी। परिवार के किसी सदस्य को लेकर के भी चिंताएं रहेंगी। ग्रह बाधा दोष से उत्पीड़न होगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। आर्थिक दृष्टि से यह माह हल्का ही रहेगा। दो लाभ तीन खर्च से स्थिति तनावदायक। जीवनसाथी एवं मित्रों से अनुकूलता प्राप्त होगी। परिवार के किसी भी व्यक्ति को लेकर लापरवाही न बरतें। प्रेम-प्रसंगों के प्रति सावधानी बरतें। प्रेम विवाह के योग क्षीण। यात्रा-योग सामान्य। अधिकारियों से मतभेद होगा।

मिथुन -

का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

यह माह आपके लिए विवादों से भरा होगा। साधनाओं की दृष्टि से यह अनुकूलता प्रदान करने वाला श्रेष्ठ माह सिद्ध होगा। रुका हुआ धन प्राप्त होने के योग सामान्य। आकस्मिक दुर्घटना से सावधानी बरतें। व्यर्थ के वाद-विवादों को लेकर सावधानी बरतें। अदालती मामलों को लेकर परेशानी बढ़ेगी। क्रोध पर नियंत्रण रखें, जल्दबाजी से सभी कार्य बिगड़ सकते हैं। सम्बन्धियों से सहयोग प्राप्त होगा। भूमि सम्बन्धी मामलों को लेकर लापरवाही न बरतें। प्रेम विवाह के मामलों में अनुकूलता प्राप्त होगी। प्रेम सम्बन्धों में सावधानी बरतें। नवीन कार्यों हेतु शुभ योग। वाहन से दुर्घटना का योग।

कर्क -

ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

जो कार्य आप करना चाहते हैं, अपनी मौलिक सूझ-बूझ के साथ प्रारम्भ करें। पुराने अनुबन्धों में लाभ होगा। नये सम्पर्क भविष्य में लाभप्रद सिद्ध होंगे। मित्रों के साथ छोड़ जाने से खिन्नता होगी। मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे। आने वाली अड़चनों से सावधान रहें। गृह बाधा निवारण करने का प्रयास करें। शत्रु आपके पक्ष में होकर विश्वासघात कर सकते हैं, सचेत रहें। अधिकारी वर्ग आपके लिए अनुकूल सिद्ध होंगे। राज्य पक्ष से बाधाकारी योग। यात्रा में सावधानी बरतें। वाहन प्रयोग दुर्घटना योग से भरा रहेगा। कला जगत में आर्थिक न्यूनताएं रहेंगी।

सिंह -

मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टू, टे

जो कार्य चल रहा है, उसे रुचि पूर्वक पूरा करें, आपको लाभ होगा, वहीं स्वास्थ्य को लेकर तनाव रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। विवादों को लेकर सतर्कता बरतें। जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद की स्थिति में शांति बरतें। संतान पक्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता प्राप्त होगी। मांगलिक कार्यों में अड़चनों से सावधान रहें। आर्थिक दृष्टि से अनुकूलता प्राप्त होगी। व्यर्थ के धन व्यय से बचें। अपने कार्य को परिश्रम पूर्वक पूरा करें। यात्रा-योग अनुकूल रहेंगे, फिर भी सावधानी अपेक्षित रहेगी। स्वास्थ्य नरम रहेगा। सामाजिक कार्यों में व्यस्तता बनेगी।

कन्या -

टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कारोबारी मामलों में सहयोग प्राप्ति की संभावनाएं न्यून। आपके अपने प्रयास से ही रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। रुका धन प्राप्त होने के योग प्रबल। मांगलिक कार्यों के अवसर बनेंगे। संतान की ओर से लापरवाही न बरतें। सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाये रखें। साधनात्मक दृष्टि से समय अनुकूल चल रहा है। अधिकारी वर्ग आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। इधर-उधर की चुहलबाजी से दूर रहें। तनाव की स्थिति में संयम बरतें। पुरानी इच्छाएं पूरी होने से प्रसन्नता होगी। प्रेम-प्रसंगों मे सावधानी बरतें।

तुला -

रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

स्वास्थ्य नरम रहने से आलस्य छाया रहेगा। अपने-आप पर नियंत्रण रखें। पारिवारिक मामलों की उपेक्षा न करें। सम्बन्धियों को सहयोग करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से यह माह सामान्यतः अनुकूल सिद्ध होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ रहेगी। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। यात्रा में अनुकूलता प्राप्त होगी। मित्रों से अनबन होगी, शत्रु आपके पक्ष में होंगे। राज्य कार्यों को लेकर शिथिलता न बरतें। विवाद बढ़ने की सम्भावनाएं प्रबल। क्रय-विक्रय के योग बनेंगे। मांगलिक कार्यों के सामान्य योग।

धनु -

ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

रुका हुआ धन प्राप्त होने के योग क्षीण, फिर भी प्रयास कर सकते हैं। साझेदारी के मामलों में सतर्क रहें। पुराने एवं नवीन अनुबंध लाभप्रद सिद्ध होंगे। आपकी थोड़ी-सी लापरवाही बनते हुए कार्य को बिगाड़ सकती है। स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता न बरतें। धार्मिक स्थलों की यात्राएं रुचिप्रद रहेंगी। अध्यात्म भाव प्रबल होगा। जीवनसाथी से अनुकूलता प्राप्त होगी। संतान पक्ष की बाधाओं को लेकर उदासीनता न बरतें। कला जगत के व्यक्ति उदासीनता त्याग कर अपने कार्यों में रुचि लें। प्रेम-प्रसंग सामान्य रहेंगे।

कुंभ -

गू, गे, गो, सा, सू, से, सो, दा

जो कार्य करना चाहते हैं करें, परन्तु उतावली एवं हड़बड़ाहट में न करें। मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाये रखें। संतान की ओर से प्रतिकूलता प्राप्त होगी। स्वास्थ्य को लेकर तनाव रहेगा। चिकित्सा व्ययभार में वृद्धि होगी। सामान्यतः यह माह आर्थिक दृष्टि से कमजोर ही रहेगा। किसी से लिये धन को चुकाने से आर्थिक स्थिति चिन्ताजनक होगी। यात्रा-योग अनुकूल, परन्तु सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। अदालती मामलों को लेकर उदासीनता न बरतें। विवाद उलझ सकते हैं।

वृश्चिक -

तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू

गृह-बाधा दोष निवारण का प्रयास करें। साधनात्मक दृष्टि से एवं आध्यात्मिक दृष्टि से यह माह आपके लिए अनुकूल रहेगा। किसी प्रिय व्यक्ति को लेकर चिंता रहेगी। सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाये रखें। बिगड़ते हुए मामलों को सुधारने का प्रयास करें। आर्थिक दृष्टि से यह माह कमजोर ही रहेगा। प्रेम-प्रसंगों में संयम बरतें। मांगलिक कार्यों को लेकर चिंता रहेगी। मित्रों के सहयोग से अनुकूलता प्राप्त होगी।

मकर -

भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

आर्थिक दृष्टि से यह माह सामान्य ही रहेगा। रुका हुआ धन प्राप्त होने के योग। तंत्र बाधा आदि से सचेत रहें। साधनात्मक दृष्टि से यह माह आपके लिए अनुकूल रहेगा। अधिकारी वर्ग आपके प्रतिकूल। मित्रों के साथ छोड़ जाने से खिन्नता होगी, शत्रु उभर कर हानि पहुंचायेंगे। राज्य पक्ष आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। यात्रा में सावधानी बरतें। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। संतान पक्ष आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

मीन -

दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

समाज में सम्मान की स्थिति बनेगी। आपके सहयोग से किसी के जीवन में आशा की किरण जाग्रत होगी। धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। कटु आलोचनाओं का सामना करना पड़ेगा। बेरोजगार व्यक्ति नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय की ओर आकर्षित होंगे। कारोबारी यात्रा फलप्रद सिद्ध होगी। जमीन-जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें। संघर्ष के पश्चात् सफलताएं प्राप्त होंगी। प्रेम-प्रसंगों में लापरवाही न बरतें।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०१.१०.९५	आश्विन शुक्ल पक्ष ७	दुर्गाष्टमी
०३.१०.९५	**आश्विन शुक्ल पक्ष १०**	**विजया दशमी**
०४.१०.९५	आश्विन शुक्ल पक्ष ११	पापांकुशा एकादशी
०८.१०.९५	आश्विन शुक्ल पक्ष १५	शरद पूर्णिमा
१०.१०.९५	कार्तिक कृष्ण पक्ष २	सर्वार्थ सिद्धि योग
१२.१०.९५	**कार्तिक कृष्ण पक्ष ४**	**करवा चौथ, गणेश चतुर्थी**
१६.१०.९५	कार्तिक कृष्ण पक्ष ७	अहोई अष्टमी
२०.१०.९५	कार्तिक कृष्ण पक्ष ११	रमा एकादशी
२१.१०.९५	**कार्तिक कृष्ण पक्ष १२**	**धन त्रयोदशी**
२३.१०.९५	**कार्तिक कृष्ण पक्ष १४**	**दीपावली, लक्ष्मी पूजन**
२४.१०.९५	**कार्तिक कृष्ण पक्ष ३०**	**सूर्य ग्रहण**
२५.१०.९५	**कार्तिक शुक्ल पक्ष १**	**गोवर्धन पूजा**
३१.१०.९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष ८	गोपाष्टमी
०१/११/९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष ९	अक्षय आंवला नवमी
०३/११/९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष ११	एकादशी व्रत
०४/११/९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष १२	प्रदोष व्रत
०५/११/९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष १३	वैकुण्ठ चतुर्दशी
०६/११/९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष १४	पूर्णिमा व्रत
०८/११/९५	मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष १	अमृत सिद्धि योग
१४/११/९५	मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष ७	सर्वार्थ सिद्धि योग
१५/११/९५	मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष ८	काल भैरवाष्टमी
२६/११/९५	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष ४	सर्वार्थ अमृत योग

पहली बार गोपनीय रहस्य उजागर

जिसे सिद्ध करने पर किसी को देखते ही उसका पूरा भविष्य आंखों के सामने साकार हो उठता है।
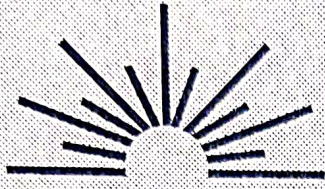
पाश्चात्य विद्वान्
'कीरो'
ने भी
''पंचांगुली साधना''
की थी,
जिससे उसे
फलकथन में अपूर्व
सिद्धि प्राप्त हुई. . .
उसने
भारत में आकर
इस ज्ञान को
प्राप्त किया
और
पंचांगुली साधना
के कारण ही
उसकी पुस्तक
पूर्ण प्रामाणिक मानी जाती है।

मनुष्य स्वभावतः इसी बात के लिए उत्सुक रहता है, कि वह अपने भविष्य को जान सके। अनेकों रहस्यमय प्रश्न उसके मानस में उठते रहते हैं— क्या ऐसी कोई शक्ति ब्रह्माण्ड में है, जिसका सम्बन्ध हमसे स्थापित हो? क्या ऐसी कोई युक्ति है, जिसके माध्यम से हम अपना भूत, भविष्य और वर्तमान स्पष्ट रूप से देख सकें? ऐसे अनेकों प्रश्न उसके मानस पटल पर अंकुरित होते रहते हैं।

आज ऐसी कई पद्धतियां बन चुकी हैं, जिनके द्वारा अपने अतीत और भविष्य का आकलन किया जा सकता है— हस्त रेखा विज्ञान, नेपोलियन थ्योरी, फलित ज्योतिष, ताश के पत्तों के माध्यम से आदि-आदि।

इनमें से सबसे ज्यादा प्रचलित विधि है— ''हस्त रेखा विज्ञान'', जिसके माध्यम से हाथ की लकीरों का, जो देखने में तो कुछ लाइनें ही दिखाई देती हैं, किन्तु सैकड़ों सूक्ष्म तन्तुओं को अपने अन्दर समेटे रहती हैं, जिनका सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन एक अच्छा हस्त विशेषज्ञ ही कर सकता है।

संसार में जितने भी पुरुष या स्त्रियां हैं, उनके हाथों की लकीरें कभी एक जैसी नहीं होतीं और उन लकीरों में ही उनका भूत, भविष्य और वर्तमान छिपा होता है, आवश्यकता होती है उस शक्ति के माध्यम से, उन सूक्ष्म रेखाओं को पढ़कर ब्रह्माण्ड से सम्पर्क स्थापित करने की, क्योंकि जब तक ब्रह्माण्ड में व्याप्त अणुओं से हमारी आत्म-शक्ति का सम्बन्ध नहीं होगा, तब तक हम कालज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते. . . तभी हमें पहले की, अब की और आने वाले समय की घटनाओं का पूर्णतः ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

मंत्र और यंत्र ही ऐसी दो अक्षय निधियां हैं, जिनके माध्यम से अपने जीवन में परिवर्तन लाया जा सकता है और सुखी, सफल एवं सम्पन्नता युक्त जीवनयापन किया जा सकता है।

आज साधना और सिद्धि, कालज्ञान आदि विधाएं केवल साधु-सन्तों तक ही सिमट कर नहीं रह गई हैं। कोई भी इन्हें सम्पन्न कर
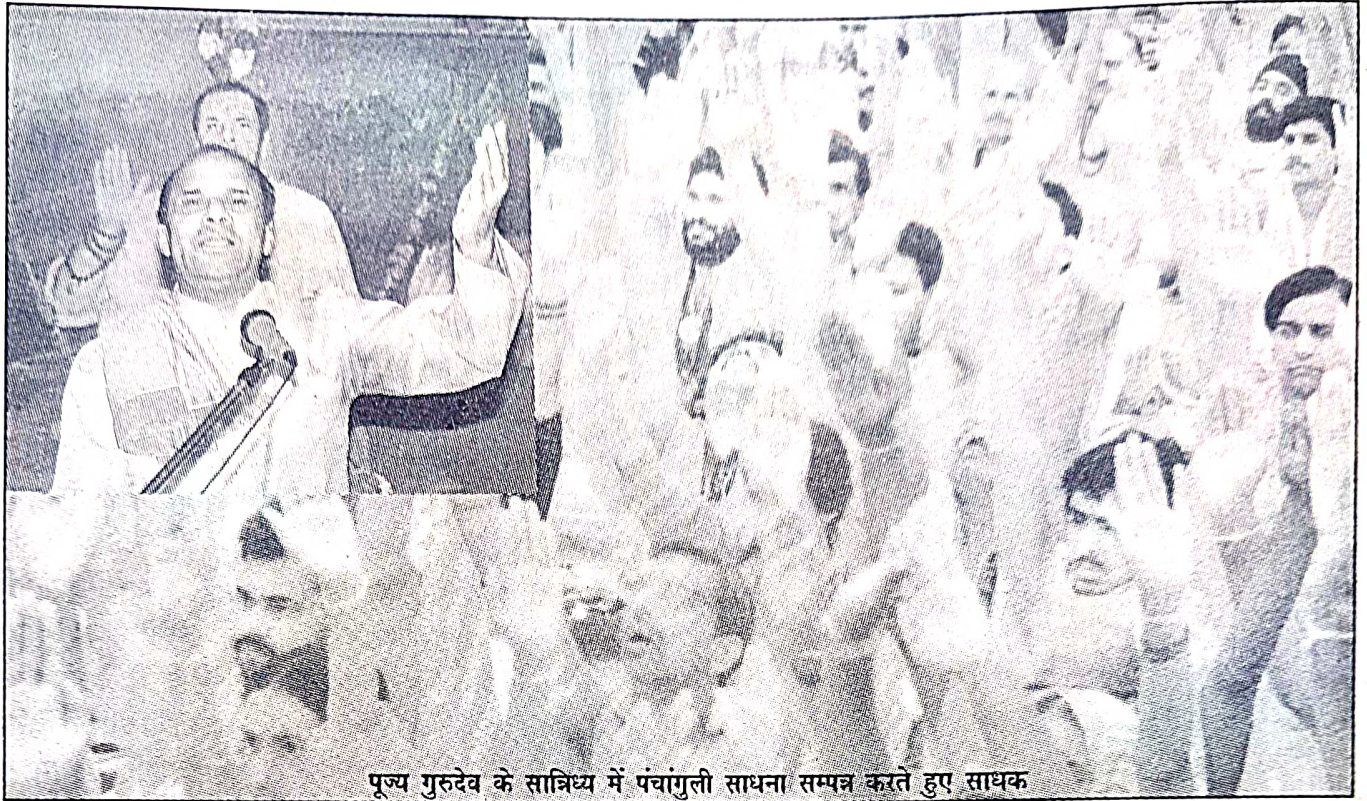
पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में पंचांगुली साधना सम्पन्न करते हुए साधक

सफलता तक पहुंच सकता है।

सभी की उत्सुकता का केन्द्र 'भविष्य' का ज्ञान अर्जित करने के लिए 'पंचांगुली साधना' सर्वश्रेष्ठ मानी गई है, जिसके माध्यम से अपने या किसी भी व्यक्ति के भूत, भविष्य और वर्तमान को आसानी से जाना जा सकता है।

पंचांगुली देवी कालज्ञान की देवी हैं, जिनकी साधना कर साधक को होने वाली धटनाओं व दुर्घटनाओं का पूर्वानुमान हो जाता है तथा इसी साधना के द्वारा हस्त विज्ञान में पारंगत हुआ जा सकता है और भविष्यवक्ता बना जा सकता है।

प्राचीन काल के योगी, साधु, संन्यासी इस साधना को सिद्ध कर लोगों को भविष्य के बारे में बताया करते थे और यश, कीर्ति, वैभव सब कुछ प्राप्त कर लेते थे, धीरे-धीरे कुछ लोगों की चालाकी और कायरता की वजह से, जो ये समझते थे कि यदि किसी को साधना की पूर्ण जानकारी हो गई, तो हमें कौन पूछेगा? इसलिए यह ज्ञान एक छोटे-से दायरे में ही सिमट कर रह गया; समय ने पलटा खाया और बहुत बड़ा जन समुदाय इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हो गया, जिसके कारण इस साधना का प्रचार-प्रसार होने लगा, जो उन ढोंगी साधु-सन्तों पर एक तीव्र प्रहार ही था, क्योंकि वे इस विद्या का लाभ उठाकर, दूसरों को आसानी से मूर्ख बनाकर उन्हें अपने अधीन कर लेते थे।

इस साधना को सम्पन्न कर ऐसे ढोंगियों-पाखण्डियों का पर्दाफाश कर, स्वयं के साथ-साथ समाज का भी कल्याण किया जा सकता है।

पंचांगुली साधना के माध्यम से सामने वाले को देखकर उसका भविष्य पूर्णरूप से ज्ञात हो जाता है; वह स्वयं भी अपने आपातकालीन संकटों का पूर्वाभास कर अपने जीवन की रक्षा आप कर सकता है, किसी भी व्यक्ति के भविष्य के प्रत्येक क्षण को अक्षरशः जान सकता है, और घटित होने वाली दुर्घटनाओं की पूर्व जानकारी देकर उन्हें सावधान कर सकता है।

इस साधना को सिद्ध करना जीवन की श्रेष्ठता है तथा किसी भी साधना को करने से पूर्व इस साधना को अवश्य ही कर लेना चाहिए, जिससे कि साधना के अन्तर्गत रह गई त्रुटियों और आने वाली अड़चनों को सुगमता से दूर किया जा सके।

महाभारत युद्ध में धृतराष्ट्र नेत्रहीन होने की वजह से उस युद्ध को नहीं देख सकते थे, किन्तु संजय की दिव्य दृष्टि ने उन्हें कौरवों और पांडवों के बीच हुए युद्ध का अक्षरशः विवरण कह सुनाया, लोग उसे दिव्य दृष्टि का ज्ञान कहते थे, किन्तु वास्तव में कुछ भी देख लेने की शक्ति उस दृष्टि के माध्यम से नहीं, अपितु उस शक्ति के माध्यम से प्राप्त हुई थी, जिसे उन्होंने साधना के बल पर प्राप्त किया था, क्योंकि मात्र दृष्टि के माध्यम से भूत, भविष्य एवं

वर्तमान का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त होना कठिन-सी प्रक्रिया है, ज्ञान तो चैतन्य शक्ति के माध्यम से ही प्राप्त होता है, जिसे अपने अन्दर से प्रस्फुटित करना पड़ता है। यदि पंचांगुली मंत्र के साथ-साथ काल ज्ञान मंत्र को भी सिद्ध कर लिया जाय, तो संजय के समान ही दिव्य दृष्टि प्राप्त की जा सकती है, फिर यह जरूरी नहीं, कि जिस व्यक्ति का भूत-भविष्य जानना हो, वह सामने ही हो। पंचांगुली साधना की उच्चतम स्थिति दिव्य दृष्टि सम्पन्न होना है। यहां प्रस्तुत 'पंचांगुली कल्प' साधना की उसी भावभूमि को अपने में समेटे हुए है।

साधना विधिः

१. इस साधना को करने के लिए **''पंचांगुली यंत्र व चित्र''** तथा **''स्फटिक माला''**, जो प्राण-प्रतिष्ठा युक्त एवं मंत्र-सिद्ध हों, प्रयोग करना आवश्यक होता है।

२. यह साधना शुक्ल पक्ष की किसी भी **द्वितीया, पंचमी, सप्तमी या पूर्णमासी** को की जा सकती है।

३. यह साधना प्रातःकालीन है, इसे **ब्रह्म मुहूर्त** में ही करना चाहिए।

४. इस साधना को किसी एकांत स्थल या पूजा कक्ष में ही, जहां शोर न हो, सम्पन्न करना चाहिए। यह सात दिन की साधना है।

५. **पीले आसन** पर **पूर्व दिशा** की ओर मुख करके, पीले वस्त्र धारण कर तथा गुरु चादर ओढ़ कर बैठ जायें।

६. फिर एक बाजोट पर 'पंचांगुली देवी का चित्र व यंत्र' स्थापित कर दें। यंत्र को किसी ताम्र प्लेट में रखें।

७. यंत्र पर कुंकुम से 'स्वस्तिक' का चिन्ह बनायें।

८. सबसे पहले गणपति का ध्यान करें, फिर संक्षिप्त गुरु-पूजन करें।

९. पूजन के पश्चात् षोडशोपचार विधि से यंत्र का विधिवत पूजन करें—

ध्यान

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री पंचांगुलीं देवीं ध्यायामि।

आवाहन

ॐ आगच्छागच्छ देवेशि त्रैलोक्य तिमिरापहे।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तमे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री पंचांगुली देवताभ्यो नमः आवाहनं समर्पयामि।

मेरे पास जितनी भी मंत्र साधनाएं हैं भविष्य कथन की, उन सभी में 'पंचांगुली कल्प' सर्वश्रेष्ठ साधना है— जब भी मैंने इस साधना का प्रयोग किया है— आशानुकूल फल मिला है।

— योगमाया

आसन

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व सौख्य करं शुभम्।
आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री पंचांगुली देवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि।

स्नान

गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः।
स्नापिताऽसि मया देवि तथा शान्तिं कुरुष्व मे।।

पयस्नान

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

दधिस्नान

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।।

मधुस्नान

तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।।

घृतस्नान

नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।।

शर्करास्नान

इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।।

वस्त्र

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रति गृह्यताम्।।

गन्ध

श्री खण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठि चन्दनं प्रति गृह्यताम्।।

अक्षत

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठि कुकुमाक्ता सुशोभिता।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।

पुष्प

ॐ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै विभे।
मयोपनीतानि पुष्पाणि प्रीत्यर्थं प्रति गृह्यताम्।।

दीप

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्य तिमिरापहे।।

नैवेद्य

नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचला कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्रेह परां गतिम्।।

दक्षिणा

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्य फलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे।।

विशेषार्घ्य

नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते धारणीधरे।
नमस्ते जगदाधारे अर्घ्यं च प्रति गृह्यताम्।
वरदत्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थदं।
अनेन सफलार्घेण फलादऽस्तु सदा मम।
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च।
आगता सुख सम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात्।।

१०. हाथ में जल लेकर मंत्र-जप करने का संकल्प करें।

११. निम्नलिखित पंचांगुली मंत्र का 'स्फटिक माला' से **७ दिन तक एक-एक माला मंत्र-जप करें।**

मंत्र

ॐ टं टं टं पंचांगुलि भूत भविष्यं
दर्शय टं टं टं स्वाहा

१२. मंत्र-जप करने का समय निर्धारित होना चाहिए।

१३. साधना-समाप्ति के पश्चात् समस्त सामग्री को किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें।

१४. जप काल में ध्यान रखने योग्य बातें–

- ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।
- नित्य साधना से पूर्व स्नान करें।
- भूमि शयन करें।
- शुद्धता एवं पवित्रता का ध्यान रखें।
- अधिक-से-अधिक मौन रहने का प्रयत्न करें।
- मांस-मदिरा का त्याग करें।
- सात्विक भोजन ही ग्रहण करें।
- मंत्र-जप पूरी निष्ठा के साथ करें। मंत्र-जप के समय ज्यादा हिले-डुलें नहीं और न ही जप के बीच में उठें।
- दीपक का साधना काल में जलते रहना अनिवार्य है।

इस प्रकार पूर्ण विश्वास के साथ की गई साधना से मंत्र की सिद्धि होती ही है तथा उस साधक को भूत, भविष्य एवं वर्तमान की सिद्धि हो जाती है।

साधना-सामग्री (यंत्र, माला) न्यौछावर– ३००/-

आप अपने बुढ़ापे को यौवन में बदलिये . . .

जांचें परखें ये विशिष्ट प्रयोग

बुढ़ापा दो प्रकार का होता है. . . शारीरिक और मानसिक। प्रकृति के नियमानुसार शरीर का विकास एक निश्चित सीमा तक होने के बाद धीरे-धीरे उसका ह्रास होने लगता है . . . यदि उस अवस्था में तन और मन दोनों पर नियंत्रण रखा जाय, तो वृद्धावस्था को भी यौवनावस्था में बदला जा सकता है. . .

जीवन परिवर्तनशील है, गतिमान है— आज जो नया है, कल वह पुराना होगा ही, आज जो बालक है, कल वह युवा होगा ही, और फिर धीरे-धीरे वृद्धावस्था को प्राप्त हो जायेगा, यही जीवन का सत्य है, नई सृष्टि के निर्माण के लिए यह आवश्यक भी है।

बुढ़ापा जीवन का अंत है, मृत्यु है। सम्पूर्ण विश्व में पिछले ५० हजार वर्षों से प्रत्येक व्यक्ति इस बात के लिए प्रयत्न कर रहा है, कि उसके जीवन में वृद्धावस्था नहीं आये, हर व्यक्ति इसी कोशिश में रहता है, कि वह यौवनवान हो. . .और पूर्णरूप से जीवन भर वह यौवनवान बना रह सके, बुढ़ापा आये ही नहीं।
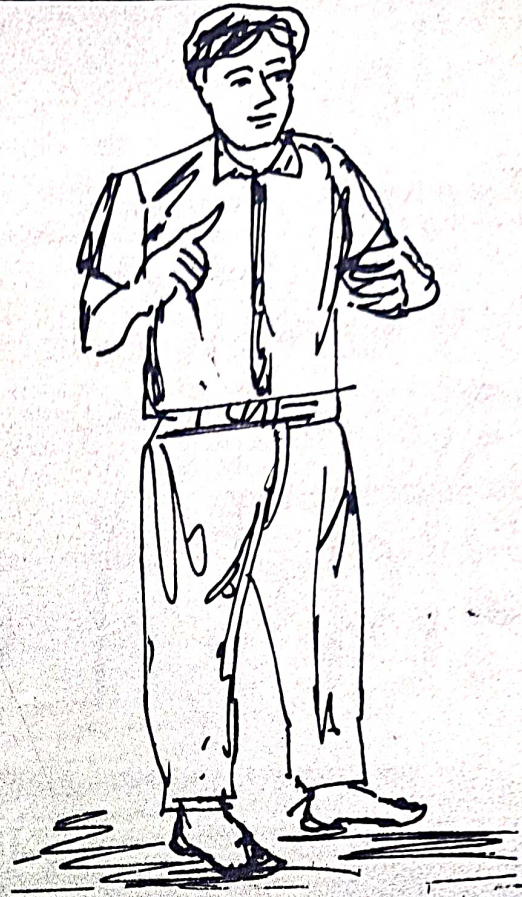
मानव शरीर धीरे-धीरे बाल्यावस्था से यौवनावस्था की ओर अग्रसर होता है, बाल्यावस्था निरन्तर वर्धमान अवस्था है, और युवावस्था तक शरीर की वृद्धि पूर्णता को प्राप्त कर चुकी होती है। फिर प्रकृति के क्रमानुसार पूर्ण यौवनवान शरीर की शक्ति का धीरे-धीरे ह्रास होने लगता है और बलिष्ठ शरीर वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है, क्योंकि शरीर के तन्तु धीरे-धीरे क्षीण होने लगते हैं और यह मानव शरीर समाप्ति की ओर अग्रसर होता दिखाई देने लगता है, जिसके चिन्ह मानव शरीर पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगते हैं— **शरीर का कमजोर हो जाना, झुर्रियां पड़ जाना, आंखों की रोशनी कम होना, बाल सफेद हो जाना, अशक्तता पैदा हो जाना आदि ऐसे चिन्ह होते हैं, जिन्हें देखकर ही यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि बुढ़ापे ने दस्तक देकर मृत्यु के आने की सूचना भेज दी है।**

यदि भारतीय इतिहास के कुछ पृष्ठों को उलट कर देखा जाय, तो ज्ञात होगा कि कुछ ऐसे व्यक्तित्व, ऐसी विभूतियों ने इस देश में जन्म लिया, जिन्होंने शरीर-संरचना को नये ढंग से समझने का प्रयत्न किया— धन्वन्तरी, च्यवन, नागार्जुन आदि ऐसी अद्वितीय विभूतियां हैं, जिन्होंने जीवन के तथ्य को विचारने का प्रयास किया. . .हमारे देश के ऋषियों-मुनियों, योगियों और यतियों ने ही नहीं, अपितु संसार के प्रत्येक व्यक्ति ने इस पर विचार किया और प्रयत्नशील रहे, कि बुढ़ापे की ओर अग्रसर न हों, क्योंकि इसके बाद तो जीवन का कोई सारभूत तथ्य ही नहीं रह जाता।

—महात्मा बुद्ध ने वृद्ध को देखा और उन्हें संसार से विरक्ति हो गई।

क्या कोई ऐसा उपाय या तरीका है, जिससे बुढ़ापे को यौवन में बदला जा सकता है?

— ''हां'' मात्र सात विशिष्ट प्रयोगों द्वारा शरीर का पूर्ण कायाकल्प कर बुढ़ापे को यौवनावस्था में परिवर्तित किया जा सकता है।

यौवन का तात्पर्य है— वेग, ओज, साहस, शक्ति, स्फूर्ति, चेहरे की चमक, आभा, नूर, लावण्यता।

इन सभी का समापन होने लगता है वृद्धावस्था के आगमन के साथ ही साथ, किन्तु यदि अपने मन पर नियंत्रण रख लिया जाय, तो जो कुछ समाप्त हो रहा है, उसे रोक कर पुनः प्राप्त किया जा सकता है, और मौत को भी चेतावनी दी जा सकती है।

रोग और शोक ये दो शत्रु ऐसे हैं, जो मौत को दावत देते हैं, और व्यक्ति को असमय ही बूढ़ा बना देते हैं, क्योंकि रोग सीधा शरीर पर हमला करता है और शोक मन पर। स्वास्थ्य का सम्बन्ध केवल हमारे शरीर से न होकर मन से भी होता है। रोग ग्रस्त शरीर का प्रभाव हमारे मानसिक विचारों पर पड़ता है। इसी प्रकार शारीरिक रूप से भले ही हम स्वस्थ, सुन्दर व बलिष्ठ हों, किन्तु मन चिन्ताग्रस्त है, स्वस्थ नहीं है, तो उसका प्रभाव शरीर पर पड़ता ही है, तात्पर्य यह है कि स्वास्थ्य का क्षेत्र केवल शरीर तक ही सीमित न होकर मन तक विस्तृत होता है।

जीवन का सृजन ही तन और मन की एकरूपता से हुआ है, अतः तन का प्रभाव मन पर और मन का प्रभाव तन पर पड़ना स्वाभाविक है। "योग शास्त्र" के अनुसार– लोभ, मोह, काम, क्रोध ये चार अवस्थाएं मन को कमजोर बना देती हैं, और मन की यही कमजोरी तन को क्षीण कर देती है, अतः मजबूत मांसपेशियों के साथ दृढ़ मन का होना मनुष्य के लिए आवश्यक है।

इसीलिए हमारे प्राचीन तपस्वियों ने सर्वप्रथम अपने व्यक्तित्व को निखारने तथा अपने तन और मन दोनों पर नियंत्रण रखने के लिए "योग" का सहारा लिया। योग के माध्यम से आसानी से वृद्धावस्था को यौवनावस्था में परिवर्तित किया जा सकता है, और तन के साथ-साथ मन को भी निरोगी एवं तनावमुक्त बनाये रखने का प्रयत्न किया जा सकता है।

आज चिकित्सक भी इस तथ्य को जान चुके हैं, कि किस प्रकार योग साधना अर्थात् व्यायाम द्वारा निरोगी जीवन प्राप्त कर तनावमुक्त हो यौवनवान बना जा सकता है।

मानव जीवन भौतिक सुख-सुविधाओं को हस्तगत कर लेने की भाग-दौड़ में बहुत ही अव्यवस्थित व अनियंत्रित हो गया है, परिणामस्वरूप जीवन का प्रत्येक पल तनाव में ही बीतता है, जो बुढ़ापे का प्रमुख कारण है, अतः पुरातन युग की प्रचलित पद्धति– 'योग को अपने जीवन का अंग बना लेना' प्रत्येक के लिए आवश्यक हो गया है। इस तथ्य को वैज्ञानिक भी परख चुके हैं, कि तनाव मुक्त जीवन के लिए योग की विविध पद्धतियां अत्यधिक लाभदायक सिद्ध होती हैं। यही कारण है कि आज अधिकांश लोग अपने शारीरिक रोगों का निदान भी योग के माध्यम से ही करना पसन्द कर रहे हैं। योग के माध्यम से व्यक्ति न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थता प्राप्त करता है, अपितु मानसिक रूप से भी उसको स्वास्थ्य लाभ होता ही है।

यह आवश्यक नहीं है कि आप बीमार पड़ें तभी योग को अपनायें। आप अगर स्वस्थ हैं, तब भी योग को अपनायें, क्योंकि देखा जाय तो स्वस्थ व्यक्तियों को तो अवश्य ही योग को अपने जीवन का अंग बना लेना चाहिए, जिससे भविष्य में भी वे स्वस्थ बने रह सकें। इसलिए प्रतिदिन अपने कीमती समय में से थोड़ा-सा समय यौगिक क्रियाओं में लगा दें, तो वुढ़ापा कभी आ ही नहीं सकता, वह व्यक्ति हमेशा ही यौवनवान बना रह सकता है तथा आई हुई वृद्धता को भी धीरे-धीरे प्रयत्न पूर्वक यौवन में रूपांतरित कर सकता है।

यौगिक क्रिया को अपनाने से पूर्व आपके लिए आवश्यक है, कि आप इसके प्रारम्भिक नियमों को जान लें और उनका पालन करें–

यौगिक नियम

– प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठने की आदत डालें, सूर्योदय के बाद उठने से व्यक्ति शारीरिक व मानसिक दोनों रूपों से अस्वस्थ व निर्बल बना रहता है।

– व्यक्ति को प्रातः शुद्ध वायु-सेवन के लिए थोड़ी दूर भ्रमण अवश्य करना चाहिए। अपनी शारीरिक क्षमतानुसार कम-से-कम एक से तीन किलोमीटर तक टहलने के लिए अवश्य जायें, जिससे कि शुद्ध वायु फेफड़ों में प्रवेश कर शीतलता प्रदान कर सके।

– पूरे दिन में कम-से-कम व्यक्ति को तीन लीटर जल अवश्य पीना चाहिए, इससे पाचन शक्ति ठीक रहती है और पेट साफ रहता है, भूख भी खुल कर लगती है तथा गहरी नींद आती है।

– एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए ६ घण्टे की नींद पूर्ण मानी जाती है। पूरी नींद लेने से उसकी शारीरिक कार्यक्षमता बढ़ जाती है तथा शरीर को पूर्ण ऊर्जा प्राप्त होती है। दिन भर हम जो भी कार्य करते हैं, उसमें शारीरिक ऊर्जा का व्यय होता ही है, और ऊर्जा अणु-विखण्डन की क्रिया द्वारा ही उत्पन्न होती है, अतः शरीर के कुछ घटक विखण्डित होते ही हैं, इनका सुचारु रूप से शरीर में निर्माण होता रहे, इसलिए आवश्यक है, कि आप पूरी नींद लें।

भोजन और मनुष्य

भोजन का सीधा प्रभाव मनुष्य के शरीर और मन पर पड़ता है, इसका असर मनुष्य के स्वभाव, आचरण और विचार पर पड़ता है, यदि व्यक्ति चिड़चिड़ा, अशांत और अस्थिर विचार वाला है, तो समझ लें, कि उसका भोजन संतुलित नहीं है।

हल्का व सादा भोजन करने वाला व्यक्ति हमेशा प्रसन्नचित और अच्छी मनःस्थिति में दिखाई देगा, अतः जितनी आवश्यकता हो, केवल उतना ही भोजन करें। तली-भुनी चीजों का सेवन न करें, ताजे फल, हरी सब्जियां, अंकुरित दालें, अनाज आदि के साथ-साथ कम चर्बी वाले पदार्थ, दूध, दही, पनीर आदि का भी प्रयोग यथोचित करें तथा सलाद अधिक मात्रा में लें।

प्राणायाम करें

प्राणायाम करने से **एन्डोक्राईन सिस्टम** की विभिन्न कोशिकाएं पोषित होती हैं, इससे रक्त संचार व श्वास प्रक्रिया से सम्बन्धित कमियां दूर हो जाती हैं।

प्राणायाम करने के लिए रेचक, पूरक और कुम्भक इन तीनों चरणों का प्रयोग किया जाता है।

रेचक का अर्थ है – सांस को छोड़ना।

पूरक का अर्थ है – सांस को लेना।

कुम्भक का अर्थ है– सांस को रोकना।

योग शास्त्रों का अध्ययन किया जाय, तो इतने अधिक योगासनों तथा व्यायामों की जानकारी होती है, कि उन सभी व्यायामों को किसी एक व्यक्ति द्वारा सम्पन्न करना सम्भव नहीं है, अतः उन सभी ग्रन्थों में से यौवन प्रदान करने तथा स्थिर बनाये रखने वाले व्यायामों में से विशिष्ट आसनों को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। इन योगासनों के साथ ही ''मंत्र'' भी दिया जा रहा है, जिसका उच्चारण आप मन ही मन सम्बन्धित आसन को करते हुए करें। योग के माध्यम से आपके शरीर की मांसपेशियां पुष्ट होंगी, वहीं इनका प्रभाव मन पर भी पड़ेगा और वह भी स्वस्थता अनुभव करेगा। ''मंत्र'' को इसलिए साथ में दिया जा रहा है, जिससे व्यक्ति के शरीर की आन्तरिक दैविक शक्ति भी सक्रिय हो जाय। इस प्रकार योग और मंत्र के सम्मिलित प्रयोग को अपना कर आप स्वयं अनुभव करेंगे, कि आपका यौवन आपके पास सुरक्षित है।

बुढ़ापे को कोसों दूर भगाने के सात विशिष्ट आसन

यहां प्रस्तुत सात विशिष्ट आसनों की प्रामाणिकता परख कर उन्हें आपके लिए लिखा जा रहा है। वैसे तो ये सातों आसन क्रमवार रूप से नित्य करने चाहियें, किन्तु आपकी व्यस्तता देखकर अलग-अलग आसनों को सप्ताह के अलग-अलग दिवसों पर निर्धारित किया गया है, अतः आपकी व्यस्तता आपको योगासन करने से रोक नहीं सकेगी। जब भी आपको अवसर मिले, आप इन सारे आसनों को उस दिन क्रमवार रूप में अवश्य करें।
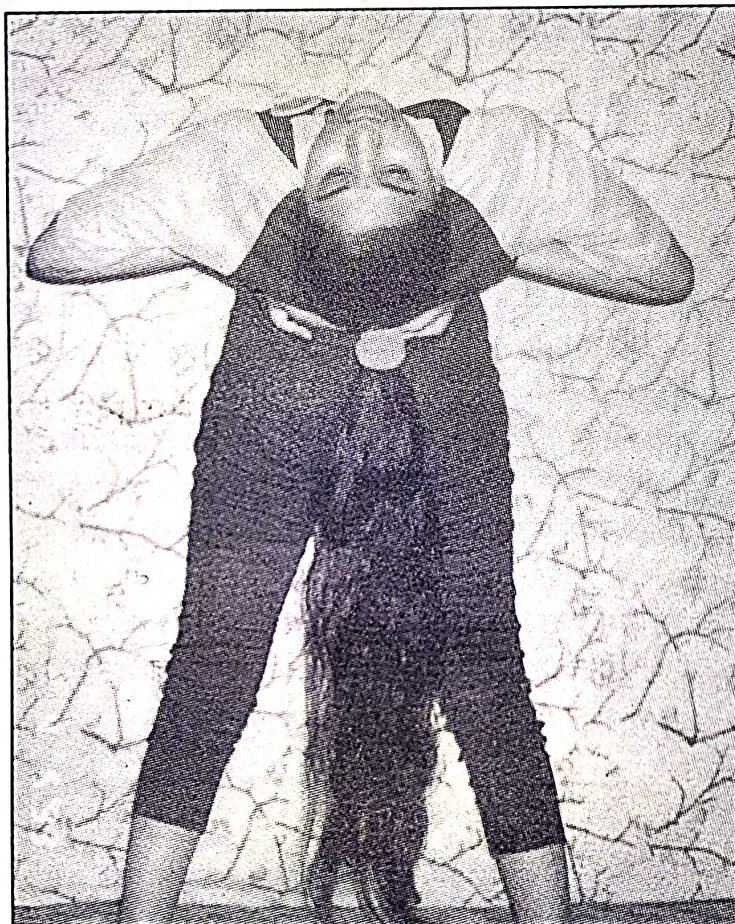
आसन : सौन्दर्यासन

दिन : रविवार

इस आसन को सम्पन्न करने के लिए सीधे खड़े होकर दोनों पैरों को २ फीट के फासले पर फैला दें, अब दोनों हाथों को कमर पर रखें और धीरे- धीरे सांस लेते हुए पीछे की ओर अपने सिर को झुकायें, तब तक, जब तक कि आपका चेहरा रक्त की उष्णता से आपूरित न हो जाय, फिर धीरे-धीरे सांस छोड़ते हुए अपनी सामान्यावस्था में आ जायें।

ऐसा दस से पन्द्रह बार करें। आसन करते हुए ही निम्न मंत्र का जप मन ही मन करें–

मंत्र : ह्रीं

लाभः चेहरे को आकर्षक एवं ओजस्वी बनाये रखने के लिए हमें सौन्दर्यासन करना चाहिए, इससे चेहरा आकर्षण युक्त, प्रभावपूर्ण और तनाव मुक्त दिखाई देता है।

आसन : द्विकोणासन

दिन : सोमवार

दोनों पैरों के पंजों को मिलाकर सीधे खड़े हो जायें, फिर दोनों हाथों को धीरे-धीरे श्वास भरते हुए पीछे की ओर ले जाकर उंगलियों को एक-दूसरे में फंसा लें और यथासम्भव दोनों भुजाओं को ऊपर उठाते हुए, धीरे-धीरे श्वास छोड़ते हुए आगे की ओर झुकें, कुछ क्षण तक उसी अवस्था में रहें और फिर अपनी सामान्यावस्था में आ जायें, ऐसा पांच से सात बार करें। इस आसन को करते हुए निम्न मंत्र का मानसिक जप करें—

मंत्र : क्लीं
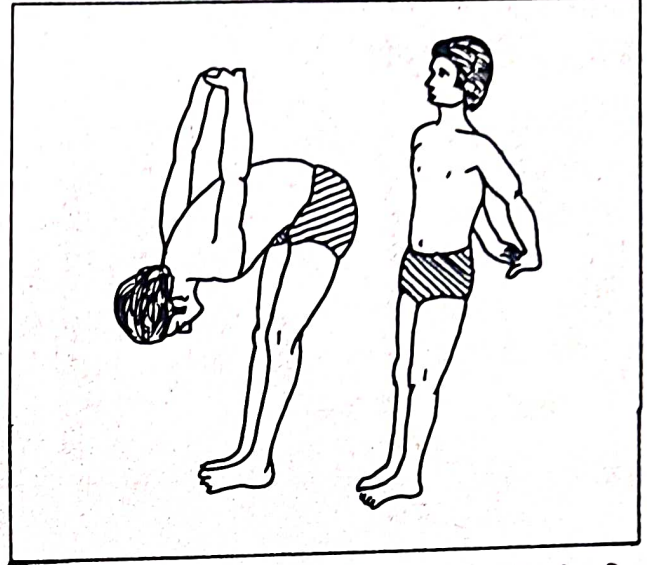
लाभः यह आसन वक्षस्थल को पुष्ट करने में विशेष रूप से लाभदायी है। इस आसन को करने से कन्धों की हड्डियां व मांसपेशियां मजबूत होती हैं। यह आसन पुरुष और स्त्री दोनों को ही उनकी प्रकृति के अनुरूप यौवन प्रदान करने में सहायक है।
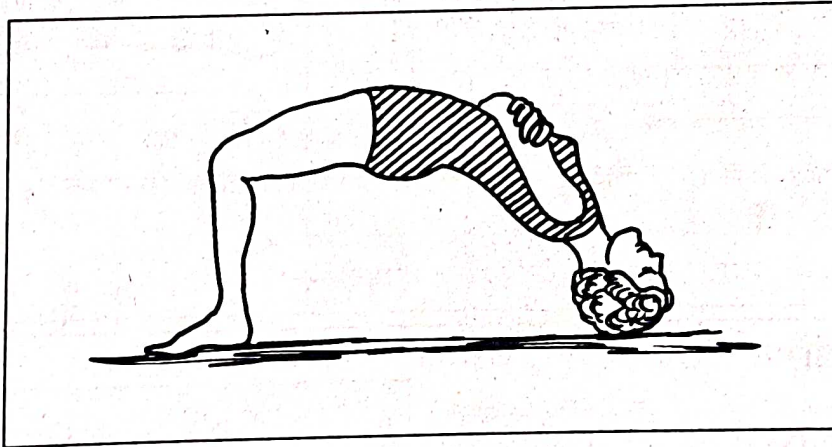
आसन : ग्रीवासन **दिन : मंगलवार**

इस आसन को करने के लिए सबसे पहले पीठ के बल लेट जायें, घुटने मुड़े होने चाहियें, फिर धीरे-धीरे श्वास भरते हुए दोनों हाथों और पंजों के सहारे अपने धड़ को ऊपर की ओर ले जायें, सिर को जमीन पर टिका रहने दें, फिर दोनों हाथों को क्रॉस की आकृति में अपने सीने पर रखें, ध्यान रहे कि इस अवस्था में सांस न छोड़ें, जब तक अपनी सांस को इस स्थिति में रोक सकते हैं, तब तक इस अवस्था में रहें, फिर सांस को छोड़ते हुए अपनी सामान्यावस्था में आ जायें, ऐसा दो-तीन वार करें। इसके पश्चात् सीधे लेट जायें और अपने शरीर को ढीला छोड़ दें। इस आसन को करते हुए निम्न मंत्र का मानसिक जप करें—

मंत्र : ऐं

लाभः यह आसन गर्दन के लिए विशेष लाभदायक है, जिसके प्रभाव से गर्दन की शिराएं व तन्तु दोनों ही मजबूत हो जाते हैं। आसन करते समय सिर के नीचे चौपरत कर कम्बल अवश्य रखें।

आसन : धनुरासन

दिन : बुधवार

इस आसन को करने के लिए पहले पेट के बल लेट जायें, फिर दोनों पैरों को घुटनों से मोड़ते हुए, सांस लेते हुए दोनों हाथों से दोनों पंजों को पकड़ कर धड़ को ऊपर की ओर जितना सम्भव हो, उठाते हुए पैरों के स्नायुओं को खींचें, फिर सांस छोड़ते हुए अपनी सामान्यावस्था में आ जायें, ऐसा तीन या चार बार करें। इस आसन की क्रिया में निम्न मंत्र का मानसिक जप करें—

मंत्र : फ्रौं

लाभः यह आसन मंदाग्नि, अजीर्ण, जिगर की कमजोरी को दूर करने के साथ-साथ पसलियों व आंतों को सही अवस्था प्रदान करता है, इससे व्यक्ति का उदर प्रदेश तो स्वस्थ होता ही है, साथ ही पेट से सम्बन्धित रोगों को दूर कर, जहां यह पुरुष के उदर को सुदृढ़ करता है, वहीं स्त्री के उदर को भी सुन्दर, सुकोमल बना देता है।

आसन : अर्धचन्द्रासन

दिन : गुरुवार

इसके लिए सबसे पहले घुटनों के बल खड़े हो जायें, फिर बायें पैर को आगे की ओर रखें, दोनों हाथ बगल में आगे बढ़े पैर से जुड़े हुए हों, फिर दाहिने पैर को पीछे की ओर ले जायें तथा श्वास लेते हुए, गर्दन व पीठ को खींचते हुए पीछे की ओर ले जायें और फिर अपनी सामान्यावस्था में आ जायें। इसी क्रिया को दाहिने पैर के साथ दोहरायें। इस प्रकार तीन या चार बार इस क्रिया को करें और अपनी सामान्यावस्था में लौटते हुए धीरे-धीरे सांस को छोड़ें। इस क्रिया में निम्न मंत्र का मानसिक जप करना है—

मंत्र : ह्रौं

लाभ : इस आसन को करने से शरीर का पूरा ढांचा स्वस्थ व मजबूत बनता है।
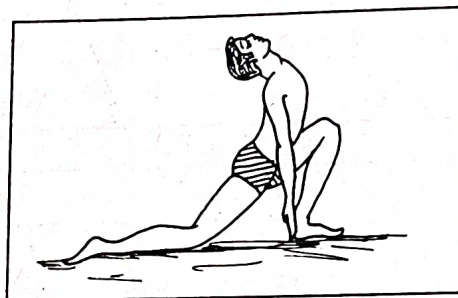
आसन : अनंगासन

दिन : शुक्रवार

सबसे पहले सीधे खड़े हो जायें, फिर दोनों हाथों को सामने की ओर ले जाकर, दोनों मुट्ठियों को भींचकर आगे व पीछे की ओर तेजी से फेंकें, फिर दोनों हाथों को मोड़कर, गर्दन के पीछे से बांधकर सिर को पीछे की ओर झुकायें, दोनों कोहनियों को परस्पर स्पर्श करें, ऐसा पांच बार करें। आसन करते हुए निम्न मंत्र का मानसिक जप करें—

मंत्र : श्रौं

लाभः इस आसन को करने पर रक्त संचार तेजी से होने लगता है, जिससे शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होने लगती है, भुजाओं के लिए यह आसन विशेष महत्त्वपूर्ण है, इससे स्त्री व पुरुष दोनों की भुजाओं को बल मिलता है, कोहनी व उंगलियों में गढ़ाव व आकर्षण उत्पन्न होने लगता है।
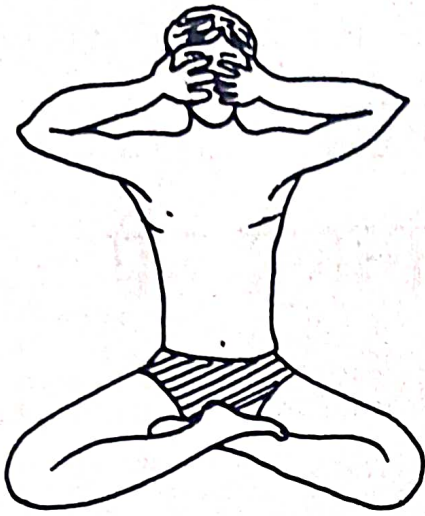
आसन : बद्धासन

दिन : शनिवार

सुखासन में बैठ जायें, फिर धीरे-धीरे दीर्घ पूरक करके कुम्भक करें, कर्ण छिद्रों को दोनों अंगूठों से, आंखों को तर्जनी तथा अनामिका एवं कनिष्ठिका उंगलियों को होठों पर क्रमशः ऊपर एवं नीचे रखते हुए मुंह को बन्द करें, इस अवस्था में जितनी देर रुक सकते हैं, रुकें; नासिका पर से उंगलियों को हटा लें और रेचक करें। इस पूरी क्रिया को दो बार करें। इस आसन में निम्न मंत्र का मानसिक जप करें—

मंत्र : हौं

लाभः मन को अंतर्मुखी बनाने का यह एक श्रेष्ठ-आसन है, इससे शरीर व मन का सारा तनाव दूर हो जाता है। मस्तिष्क से सम्बन्धित बीमारियों से भी छुटकारा दिलाने में यह प्रभावकारी सिद्ध होता है।

उपरोक्त आसनों को करने के पश्चात्! दो मिनट तक पीठ के बल लेटकर अपने शरीर को ढीला छोड़ दें तथा अपना ध्यान **'ॐ'** पर केन्द्रित करें।

यहां वर्णित सातों आसन नियमित अभ्यासी को निश्चय ही शारीरिक व मानसिक दोनों रूपों से यौवन प्रदान करते हैं। इनमें से कुछ आसन थोड़े कठिन मालूम होते हैं, किन्तु धीरे-धीरे प्रयासरत रहने से आप इनको सहजता से करने में सक्षम हो जायेंगे। इन आसनों को अपना कर आप स्वयं बोल पड़ेंगे—**"मैंने बुढ़ापे को कोसों दूर भगा दिया है।"**

जिसकी प्रत्येक प्रति हाथों-हाथ बिकी

अत्यधिक मांग की वजह से दोबारा प्रिंट कराना पड़ा

परम पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी
द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ
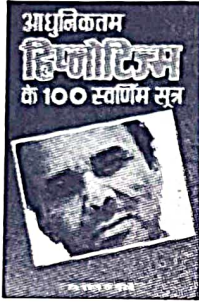
दीक्षा संस्कार

भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से जीवन की पूर्णता प्राप्ति के लिए "दीक्षा" द्वारा संस्कारित होना आवश्यक है. . . दीक्षा कब, कैसे और क्यों प्राप्त करनी चाहिए . . . प्रस्तुत है इस जिज्ञासा का समाधान. . .
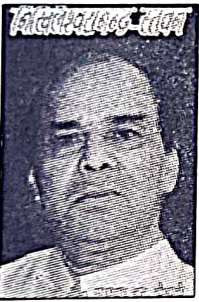
मूल्य प्रति - १५/-

तांत्रोक्त गुरु पूजन

गुरुर्विना गतिर्नास्ति. . . गुरु साधना की अनन्यतम विधि. . . साधना के अलग-अलग मार्ग द्वारा दस पद्धतियों से गुरु-पूजन. . . प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक यह कृति . . .

मूल्य प्रति - ३०/-

सर्व सिद्धि प्रदायक : यज्ञ-विधान

साधना की सफलता बिना यज्ञ के अधूरी ही मानी जाती है. . . लेकिन यज्ञ की कौन-सी विधियां हैं, किस प्रकार के कुण्ड में यज्ञ कर सफलता के शीघ्र नजदीक पहुंचे. . . सरलतम विधियों से स्पष्ट करता यह लघु ग्रंथ . . .

मूल्य प्रति - १५/-

निखिलेश्वरानन्द स्तवन

जिसके पाठ मात्र से ही ध्यान की क्रिया आरम्भ हो जाती है, समाधि की भाव-भूमि स्पष्ट होने लगती है, और सिद्धियां तो मानो हाथ जोड़कर सामने खड़ी रहती हैं, यह मात्र स्तवन नहीं, काल के भाल पर लिखी अमिट पंक्तियां। (इसका ऑडियो कैसेट्स भी उपलब्ध है, मूल्य प्रति ऑडियो कैसेट्स — ४५/-)
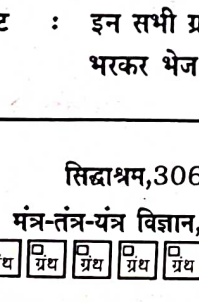
मूल्य प्रति - ९६/-

आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र

लघु पर सम्पूर्ण ग्रंथ . . . जिसके द्वारा अल्प समय में ही आज हजारों लोंगों ने सम्मोहन के क्षेत्र में निपुणता प्राप्त की और करते जा रहे हैं, इसमें सम्मोहन के १०० सूत्रों को बड़ी बारीकी के साथ उजागर किया गया है. . . पूज्य गुरुदेव का अनमोल ग्रंथ।

मूल्य प्रति : ३०/-

नोट : इन सभी ग्रंथों को एक साथ मंगाने पर डाक व्यय में छूट, धनराशि अभी मत भेंजे, सम्बन्धित पोस्टकार्ड (पीछे दिया है) भरकर भेज दीजिये, हम आपको वी०पी०पी० से ये दुर्लभ पुस्तकें भेज देंगे।

: प्राप्ति स्थान :

सिद्धाश्रम,306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

एक अचरज भरा प्रयोग

वासुकी प्रयोग

जिसे सिद्ध करने पर साधक को गड़ा धन दिखाई देने लगता है।
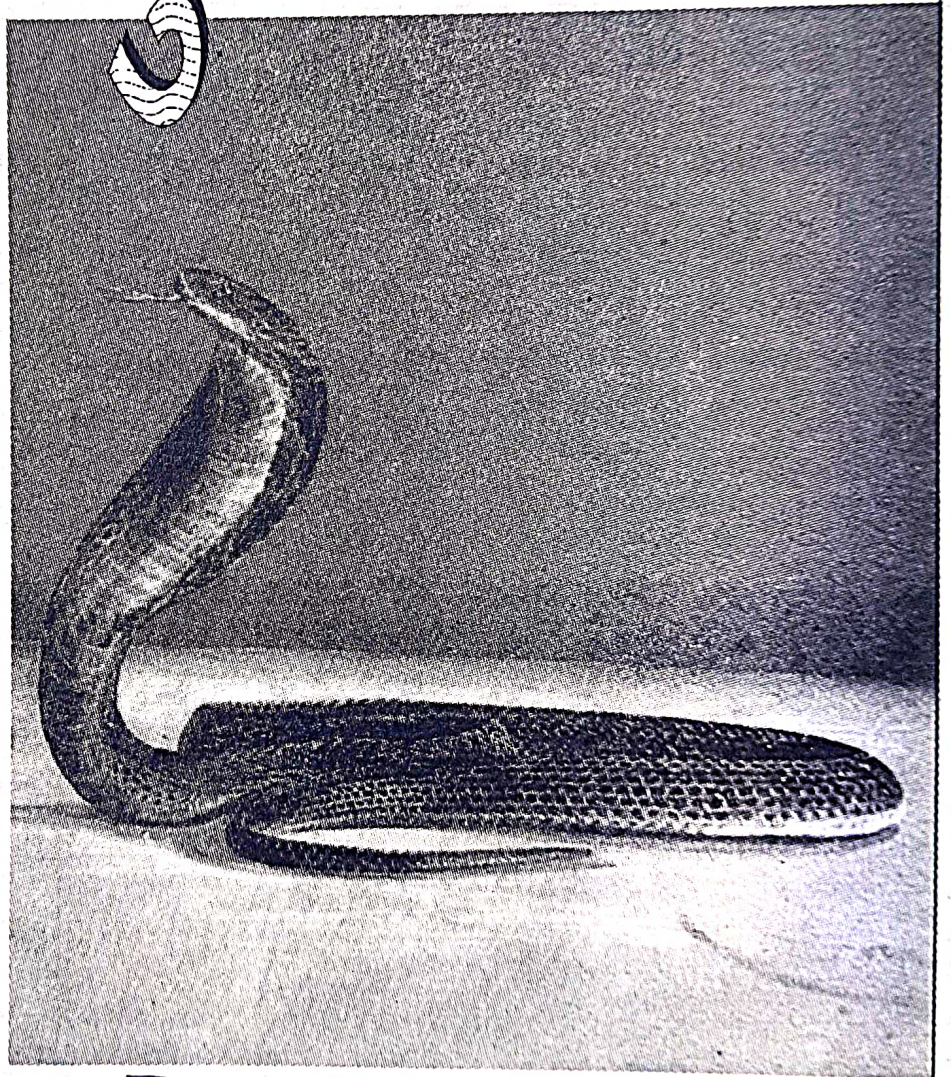
वेदों और पुराणों में नागों के रूप, जाति, भेद आदि का वर्णन मिलता है। पुराणों के अनुसार नागों की उत्पत्ति महर्षि कश्यप की पत्नी कद्रू से हुई, इनका निवास स्थान पाताल लोक है। नाग कन्याओं को अप्सराओं के समान ही सुन्दर माना जाता है। भगवान विष्णु की शय्या सहस्र फनधारी 'शेषनाग' हैं, भगवान शिव के कण्ठ में हर समय नाग देवता विराजते हैं, इस प्रकार से नाग भी देवरूप

वासुकी तो वे देव हैं, जिनके ऊपर पूरी पृथ्वी टिकी है, इतने सामर्थ्यशाली नागदेव की साधना करना तो जीवन का सौभाग्य है, जीवन की श्रेष्ठता है, जिसके सिर पर यह सम्पूर्ण धरा स्थिर है, अगर उसकी कृपा प्राप्त हो जाय, तो सौभाग्य तो अपने-आप ही चरण छूने के लिए विवश हो जाता है, अतः नाग पंचमी के दिन इस अद्वितीय एवं अद्भुत फल प्रदान करने वाले प्रयोग को सम्पन्न करना भाग्य की लकीरों को सोने की कलम से लिखने के जैसा है।

ही हैं। "नीलमत पुराण" के अनुसार–

अनन्तं वासुकीं शेषं पद्मनाभं च कम्बलम्।
शंखपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।।
एतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम्।
सांयकाले पठेनित्यं प्रातः काले विशेषतः।।
तस्य विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।

अर्थात् "अनन्त, वासुकी, शेष, पद्मनाभ, कम्बल, शंखपाल, धृतराष्ट्र, तक्षक और कालिय, जो इन नौ प्रकार के नागों के नाम का ध्यान, पूजा-पाठ करता है, उसके जीवन के सभी संकट समाप्त हो जाते हैं, प्रातः-सायं नित्य स्मरण करने से ये अपने आराधक को हर क्षेत्र में विजयी बनाने में सहायक होते हैं।"

प्राचीन काल से ही नागों का पूर्ण विधि-विधान सहित पूजन किया जाता रहा है। गांवों में तो नागोपासना करने की परम्परा है। अनेकों घटनाएं हमारे ग्रंथों में वर्णित हैं, जिससे यह प्रत्यक्ष प्रमाणित होता है, कि नागों की उपासना और साधना हमारे जीवन के लिए कितनी आवश्यक और महत्त्वपूर्ण कही जा सकती है।

कुछ घटनाएं, जो प्रत्यक्ष एवं प्रामाणिक हैं, उन्हें यहां प्रस्तुत कर रहा हूं–

★★★ सन् १९७९ की बात है, हरिहरन सिंह जी का परिवार, जिसमें उनके माता-पिता और पत्नी थे, बड़ा ही खुशहाल था, घर में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं थी, न धन की, न वैभव की, सभी कुछ था, परन्तु इतना सब कुछ होने पर भी वे और उनकी पत्नी हर क्षण दुःखी और चिन्तित रहा करते थे। सन्तान का न होना उनकी चिन्ता का मुख्य कारण था, जिस पर उनका वंश टिका था, हर प्रयत्न करने पर भी ७ वर्ष तक उनके कोई संतान नहीं हुई, किसी साधु के कहने पर उन्होंने **"नाग पंचमी"** के दिन उनके बताये अनुसार **"वासुकी प्रयोग"** किया, किन्तु थोड़े दिन बीत जाने के बाद भी जब कुछ नहीं हुआ, तो वे निराश हो गये।

एक बार वे अपने खेत में घूम रहे थे, कि अचानक उन्हें एक सर्प दिखाई दिया, पहले तो वे उसे देखकर बुरी तरह डर गये, किन्तु दूसरे ही क्षण उनके मन में आया, कि मुझे इनका सम्मान करना चाहिए। उन्होंने एक बर्तन में दूध डाल कर थोड़ी दूरी पर रख दिया... नाग ने उस दूध को ग्रहण किया और बिना कुछ नुकसान पहुंचाये चला गया, वे घर आ गये, किन्तु उसी दिन रात्रि को स्वप्न में उनकी पत्नी को नाग देवता ने दर्शन दिये, जिनके स्वरूप का वर्णन वे अपने पति से सुबह ही सुन चुकी थीं, स्वप्न में प्रकट हो नाग देवता ने कहा– 'तुम चिंता मत करो, मेरा नाम वासुकी है, मेरी उपासना से तुम्हारा कल्याण होगा और शीघ्र ही तुम एक योग्य पुत्र को जन्म दोगी', और ऐसा ही हुआ... उनके घर में एक सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट बालक ने जन्म लिया... तभी से वे और उनका परिवार नाग देवता के प्रति और उस साधु के प्रति, जिसने उन्हें वह दिव्य प्रयोग सम्पन्न करवाया था, श्रद्धानत होकर उनका नित्य पूजन-अर्चन करने लगे और आज वह घर सम्पन्न परिवारों में गिना जाता है।

★★★ राजस्थान का वह ग्रामीण क्षेत्र... घर में न खाने को रोटी थी, न पहिनने को कपड़ा और न ही पक्का घर... परन्तु गुरु के प्रति पूर्ण आस्था और विश्वास अवश्य था, कैसी भी विपत्ति की परिस्थिति में उनका यह विश्वास नहीं टूटा, वे हर स्थिति में अडिग रहे और हंस कर एक ही बात कहते– "जैसी गुरुदेव की इच्छा"... गुरुदेव भी शायद उनके दृढ़ विश्वास की परीक्षा ले रहे थे, कुछ वर्ष यूं ही बीत गए, एक बार अचानक गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए कहा– "राजन! तू किस मिट्टी का बना है, तू मूझे छोड़ दे, क्या मिलता है तुझे यहां आकर..."

यह सुनकर उसकी आंखों में आंसू आ गए और वह उनके चरणों से लिपट कर रोने लगा और कहा– "आप दोबारा ऐसा मत कहियेगा, आप से बढ़कर मेरी कोई धरोहर नहीं है..."

गुरुदेव मुस्कुरा दिये और कहा– "तू रोज अपने परिवार वालों के, बीबी-बच्चों के ताने सुनता रहता है, पर फिर भी मुस्कुराता रहता है, पर तू मेरे कहने मात्र से इतना व्यथित हो गया... चल उठ, मैं तेरी सेवा से अति प्रसन्न हूं, ऐसा नहीं होगा, आज से तेरे जीवन का गहन अंधकार हमेशा के लिए दूर हो जायेगा और तेरे जीवन के स्वर्णिम काल का आरम्भ हो जायेगा, पर तुझे एक कार्य

करना होगा. . . नाग पंचमी के दिन पूर्ण विधि-विधान सहित मेरे द्वारा बताये गये "वासुकी प्रयोग" को पूर्ण श्रद्धा-भावना के साथ सम्पन्न करना होगा. . ."

ऐसा ही हुआ, जिस दिन से उसने वह प्रयोग शुरू किया, उसके जीवन के सभी दुःख-दारिद्रय उससे कोसों दूर चले गये और उसका दुर्भाग्य, सौभाग्य में बदल गया. . . जैसे ही यह प्रयोग सम्पन्न किया, ठीक एक सप्ताह बाद उसे स्वप्न में नाग देव वासुकी ने दर्शन दिया और उसके पूर्वजों द्वारा गड़े धन का रहस्य उजागर किया. . .।

अचानक उसकी आंख खुली, तो इसे मात्र स्वप्न मानकर उसने इस बात पर ध्यान नहीं दिया. . . किन्तु दो दिन बाद फिर वही स्वप्न दिखाई दिया. . . तो वह आश्चर्य में पड़ गया. . . उस स्थान को खोदने पर उस स्वप्न व प्रयोग की प्रामाणिकता का साक्षात् बिम्ब दिखाई दिया. . . और जीवन धन-धान्य, सुख-समृद्धि से परिपूर्ण हो गया. . . यह तो गुरुदेव जी की विशेष अनुकम्पा और वासुकी देव की कृपा का ही फल था।

★★★ पर्वतीय क्षेत्र की वह रूपसी, जिसे बचपन से ही नागों से विशेष प्रेम था, न तो उसे उनसे डर लगता था और न ही वह मौत की परवाह करती थी. . . किन्तु उसके जीवन में धन का अभाव था। धीरे-धीरे उम्र के साथ-साथ इच्छाएं बढ़ने लगीं. . . किन्तु वह मन मसोस कर रह जाती. . . रोज ताने सुनती, कि "घर में तो खाने को रोटी नहीं है और इच्छाएं महारानियों जैसी हैं. . ." एक जटाधारी साधु, लम्बी-लम्बी दाढ़ी, सीना विशाल समुद्रवत् और दिप्-दिप् करता चेहरा, जो उसे अन्य व्यक्ति से अलग श्रेणी में खड़ा कर रहा था, उसके व्यक्तित्व में इतना आकर्षण था, कि उसे देखकर रूपसी से रुका न गया. . . बोली— "बाबा! आपको देखकर ऐसा लगता है, जैसे आप साधारण व्यक्ति नहीं, वरन् बहुत ही पहुंचे हुए साधु हैं. . ."

वे मुस्कुरा दिये और कहा— "तुमने ठीक पहिचाना. . ."

— "तो क्या आप मेरे हृदय की बात जान सकते हैं. . ."

हां में उत्तर मिलने पर उसने अपनी समस्या का समाधान पूछा. . . उसकी जिज्ञासा को देखकर वे उसे "वासुकी नाग" की कहानी सुनाने लगे. . . कहानी का सीधा असर रूपसी के दिल पर हुआ और नागप्रिय होने के कारण पूर्ण आस्था और विश्वास के साथ दृढ़ निश्चय कर उसने उनकी आराधना की. . . और वासुकी भी उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर एक दिन बगीचे में घूमते हुए उसे प्रत्यक्ष दिखाई दिये और कहा— "मैं तुम्हारी सेवा-भावना और तपस्या से अत्यधिक प्रसन्न हूं, मेरा आशीर्वाद है, तुम्हारी इच्छा शीघ्र ही पूर्ण होगी"।

यह कहकर वे अचानक ही लुप्त हो गये, किन्तु वहां एक गोल घेरा-सा बन गया. . . उसके शरारती दिमाग ने उस स्थान को धीरे-धीरे खोदना शुरू कर दिया, तो उसे कुछ खड़खड़ाहट सुनाई दी. . . भयभीत होकर वह घर लौट आई और सारी बात अपने माता-पिता को बताई. . . पिता ने उस स्थान को खोदा, तो एक सन्दूक निकला, जिसमें बहुत-सा कीमती सामान और धन रखा हुआ था। यह तो वासुकी की कृपा का ही फल था और उस साधु के प्रताप का चमत्कार. . . उस घटना ने उन्हें रंक से राजा बना दिया।

इस प्रकार के अनेकों प्रमाण हैं, जो इस बात की पुष्टि करते हैं, कि ये घटनाएं कोरी कल्पना नहीं हैं, ये तो वे घटनाक्रम हैं, जो सत्य पर आधारित हैं. . . जहां भक्त जन श्रद्धा-भावना से नाग देवता की पूजा-अर्चना करते हैं, वे अपने जीवन में सुख, सम्पन्नता और समृद्धि सभी कुछ प्राप्त कर लेते हैं।

प्रयोग विधि :

१. इस प्रयोग को करने के लिए प्रयुक्त होने वाली सामग्री है— **'वासुकी यंत्र', 'रुद्राक्ष माला'** एवं **'नाग मुद्रिका'।**
२. **२६.११.९५ रविवार** को यह प्रयोग सम्पन्न करें या फिर किसी भी **पंचमी** के दिन यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।
३. यह प्रयोग **ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः ५.०० बजे से ७.०० बजे के मध्य** करें।
४. स्नानादि क्रियाओं से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण कर लें, केश धुले हों।
५. **पीले आसन** का उपयोग करें।
६. **पूर्व दिशा** की ओर मुख करके बैठें।
७. सामने एक चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर, काले तिल की एक ढेरी बना कर, उस पर "यंत्र" को जल से धो-पोंछकर स्थापित करें।
८. फिर "मुद्रिका" को मौली से बांध कर उसे भी यंत्र के सामने स्थापित कर दें।
९. दोनों का कुंकुम, अक्षत, धूप व दीप से पूजन करें।
१०. एक पात्र में कच्चा दूध लेकर उसे चौकी पर ढक कर रख दें।
११. इसके बाद मन ही मन वासुकी देव का ध्यान करते हुए प्रार्थना करें, कि मेरी कामना पूर्ण हो।
१२. फिर भूमि पर थोड़ा जल गिरा दें।
१३. "रुद्राक्ष माला" से निम्न मंत्र की **३१ माला जप** करें—

मंत्र : ।।ॐ क्लीं वासुक्यै क्रीं फट्।।

१४. मंत्र-जप के पश्चात् उस दूध को किसी मन्दिर में चढ़ा आयें। मुद्रिका, माला तथा यंत्र को किसी तालाब या कुंए में विसर्जित कर दें।
१५. साधना काल में तेल का दीपक जलते रहना चाहिए और एक समय भोजन करें।

यह सरल सा दिखने वाला प्रयोग तीव्र प्रभावकारी है।

साधना-सामग्री (यंत्र, माला, मुद्रिका) न्यौछावर— ३००/-

• विद्यापति सहाय

जिस प्रकार श्रावण मास के आकाश का कोई निश्चित रूप नहीं होता, जिस प्रकार एक ही पल में प्रचण्ड धूप और अगले ही पल शीतलतादायक घने काले मेघ आकर उस पर क्रीड़ाएं करते रहते हैं, ठीक वही स्वरूप भगवती जगत जननी षोडशी त्रिपुर सुन्दरी का है। एक ही पल में उनके नेत्रों से झांकती अपार करुणा राशि का मातृत्वमयता से ओत-प्रोत स्वरूप और अगले ही क्षण सोलह श्रृंगार किए पूर्णरूपेण अत्युदात्त ऐश्वर्यमयी, विलासितापूर्ण कटाक्षयुक्त आभा! इसी से **दसों महाविद्याओं में भगवती षोडशी की साधना सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वाधिक जटिल कही और मानी गई है।**

षोडशी

साधना रहस्य

स्वर्णिम गौरांगी, पृथुल पृष्ठिनी, मन्दगामिनी, तीक्ष्ण रक्तवर्णीय वस्त्रों से सुशोभनीय, मंद एवं संकेतपूर्ण हास्य से युक्त, ताम्बूल से सुरचित अधरद्वय पर विलास की क्षीण सी रेखा स्पष्ट करती, नेत्रों में उपालम्भयुक्त दर्प लिए, विविध आभूषणों एवं स्वर्ण कलाओं से आबद्ध व सुशोभित, सघन केश राशि से अपने नारीत्व को और भी अलस करती, चरणों की सुकोमल लालिमा से प्रतिस्पर्धा करती रक्त आलता की गहनता धारण किए, अंग-प्रत्यंग से कर्पूरयुक्त सुगन्ध का विस्तार करती सम्पूर्ण स्वरूप में काम तत्त्व की साकार मूर्ति— यह भी भगवती षोडशी का ही स्वरूप है।
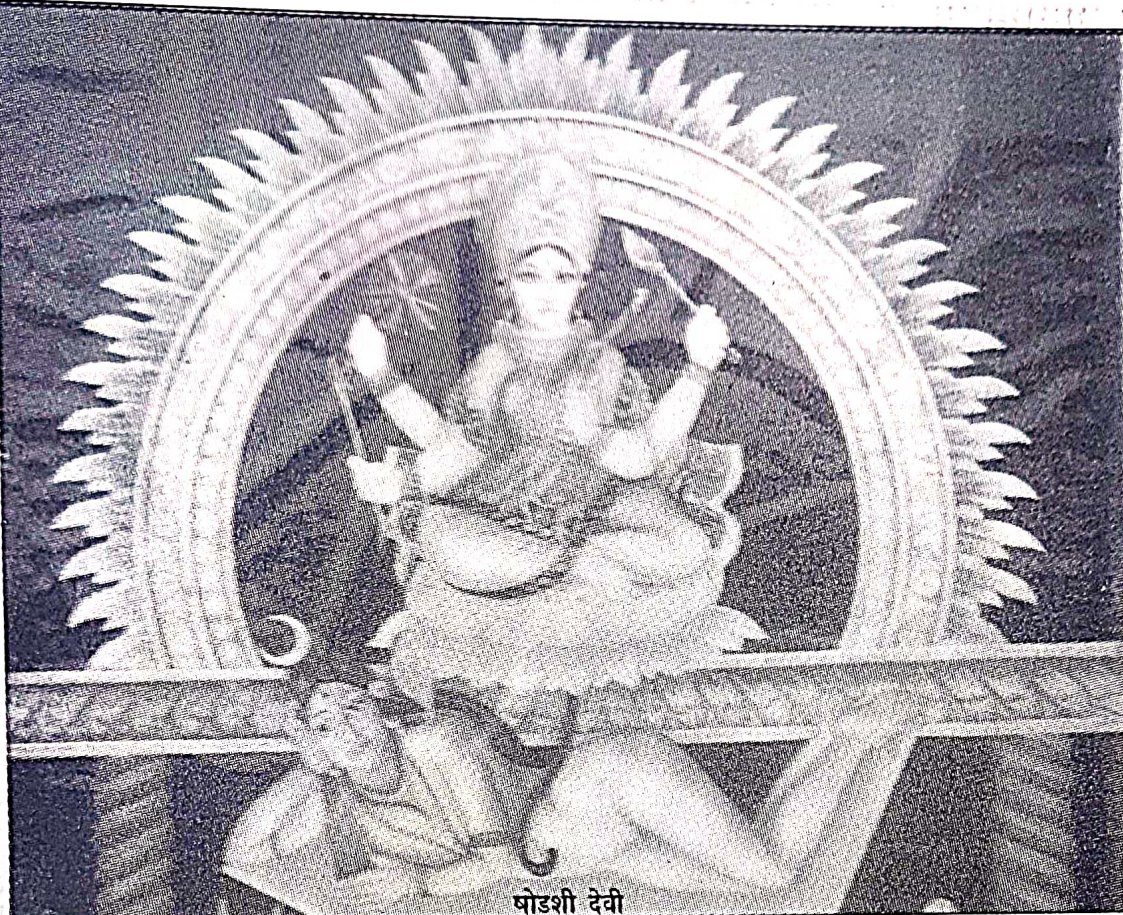
षोडशी देवी

प्रश्न यह उठता है, कि भगवती को अपने साधक के समक्ष इस रूप में आने की आवश्यकता ही क्यों? इसका सहज सा उत्तर है— जहां वे "ऐं" स्वरूपिणी, "ह्रीं" स्वरूपिणी, "श्रीं" स्वरूपिणी हैं, वहीं "क्लीं" स्वरूपिणी भी हैं; अर्थात् जहां वे धर्मदात्री, अर्थदात्री, मोक्षदात्री हैं, वहीं कामदात्री भी हैं। 'क्लीं' अपने-आप में संहार बीज भी है और काम बीज भी, अर्थात् यह निर्माण की क्षमता भी समाहित किए है और विध्वंस की भी। काम तत्त्व भी तो ऐसा ही तत्त्व है— जीवन का उद्भव भी काम से है और विनाश भी काम से। इसी कारण साधक को अपने जीवन में काम तत्त्व से साक्षात् अवश्य करना पड़ता है और भगवती षोडशी की साधना इसी का उपाय है।

काम : जीवन का मूलभूत तत्त्व

जो विशुद्ध साधक हैं अर्थात् जिनके जीवन का उद्देश्य मात्र इतना ही है, कि सृष्टि के रहस्यों को प्राप्त कर लिया जाय, वे प्रारम्भ से ही शक्ति-साधना के पथ पर अग्रसर होते हैं तथा निरन्तर शक्तिमय होते हुए शक्ति के मूल उद्गम तक पहुंचने की क्रिया करते हैं। ऐसे साधकों के जीवन में काम तत्त्व का स्थान शक्ति के उद्गम के रूप में प्रकट होता है, तब दैहिक सुख की अपेक्षा परमार्थिक लक्ष्य ही प्रधान होता है, यही तंत्र की भावभूमि है।

यद्यपि अनेक साधक पूर्व में न केवल सामान्य षोडशी दीक्षा की प्राप्ति गुरुदेव से कर चुके हैं, वरन् उसके प्रभाव को भी अपने जीवन में अनुभव कर चुके हैं, किन्तु जब तक 'कामदा षोडशी दीक्षा' (नवनाथानन्द पद्धति द्वारा प्रणीत) न प्राप्त कर ली जाय, साधक यथार्थतः षोडशी महाविद्या की सम्पूर्णता को नहीं ग्रहण कर पाता है। सौभाग्यवश पूज्यपाद गुरुदेव ने षोडशी महाविद्या से सम्बन्धित यह अद्वितीय दीक्षा देने का मन बना लिया है, जिसे उनके गृहस्थ एवं संन्यस्त दोनों ही प्रकार के साधक प्राप्त कर सकते हैं। यह विशिष्ट दीक्षा ही इस लेख में वर्णित षोडशी साधना के प्रभाव को साधक में समाहित करने की क्षमता रखती है, जिससे न केवल भौतिक पक्ष वरन् आध्यात्मिक पक्ष भी संवर सकता है। ऐसी स्थिति में साधकों के लिए उचित रहेगा, कि वे पहले से ही सम्पर्क कर पूज्यपाद गुरुदेव से इस दीक्षा को प्राप्त करने की चेष्टा करें।

किंतु जो सांसारिक जीवन से आबद्ध साधक हैं, जो काम तत्त्व की साधना नहीं करते, दोनों ही अपने स्थान पर उचित हैं। किसी को भी न्यून कहना या समझना त्रुटि होगी।

जो साधक काम तत्त्व की निरपेक्ष रूप में साधना नहीं करते, वे प्रकारांतर से लक्ष्मी उपासक होते हैं अर्थात् तब भगवती षोडशी केवल क्लीं स्वरूपा ही नहीं, वरन् क्लीं तत्त्व के साथ-साथ श्रीं स्वरूपा भी बनकर उनके समक्ष आती हैं। भगवती लक्ष्मी को षोडशी का ही स्वरूप माना गया है, अर्थात् देवी जब काम तत्त्व एवं ऐश्वर्य दोनों से युक्त हैं, तभी वे भगवती लक्ष्मी हैं।

काम तत्त्व अश्लीलता नहीं

एक जिज्ञासा जो सहज ही मन में आ सकती है, वह यह, कि जब भगवती लक्ष्मी, षोडशी के प्रभाव से युक्त हैं, तो हम निरपेक्ष रूप से केवल काम तत्त्व की ही साधना क्यों करें? इसका स्पष्ट उत्तर है कि केवल काम तत्त्व की ही साधना करने से हम जीवन के उद्‌गम रहस्य और मुक्त भाव के अत्यन्त सन्निकट हो जाते हैं, यद्यपि निराकार रूप से काम तत्त्व की साधना दुष्कर कार्य है। काम तत्त्व मूलतः एक स्पन्दनशील तत्त्व है, जिसका प्रादुर्भाव या प्रभाव साधक के विन्दु तत्त्व पर प्रत्येक दशा में निश्चित रूप से होता ही है। शनैः-शनैः जब हम इसकी प्रकृति और जीवनी शक्ति को पहिचान जाते हैं तब इसका उपयोग अपने उत्थान के लिए करते हैं।

काम तत्त्व की स्पंदनशीलता से कोई भी जीवन पद्धति न तो मुक्त हो सकती है, न हो सकी है, अंतर केवल भावनाओं का हो जाता है। यथार्थ साधक के जीवन में काम तत्त्व नहीं रहता, यह सोचना भी भूल होगी, किन्तु उसके लिए दैहिक अर्थ विस्मृत हो चुके होते हैं तथा वह सम्पूर्ण प्रकृति में जहां-जहां स्पन्दन है, जहां-जहां जीवन है, जहां-जहां गति है, वहां-वहां काम तत्त्व का ही अनुभव कर "चिद्‌विलासानन्द" का ही अनुभव करता रहता है। तब ही उसके लिए स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध हीन, मलिन, पतित और धृणित न होकर उसी आद्याशक्ति के अनेकों कौतुकों में से एक होता है और वह बिना उसमें संलिप्त हुए उसकी शिवमयता का अनुभव कर सकता है।

षोडशी साधना : जीवन की पूर्णता

यही मनःस्थिति षोडशी साधना की प्रारम्भिक भाव-भूमि होती है। यथार्थ साधक काम तत्त्व की निंदा नहीं करता, उसको घृणित नहीं मानता, वह उसके अन्यान्य अर्थों एवं संभावनाओं की ओर भी दृष्टिपात करता है। इसी मनःस्थिति को प्राप्त हमारे श्रेष्ठतम ऋषिगण गृहस्थ जीवन में भी पूर्ण योगमयता और संन्यस्तरूपता के साथ रह सके।

प्रत्येक महाविद्या साधना अपने-आप में न केवल भौतिक अर्थों व लक्ष्यों की पूर्ति का उपाय समाहित किये हुए है, वरन् गंभीर तात्त्विक रहस्य भी संजोये है। साधक उसी को कहा जाता है, जो भौतिक अर्थों से तात्त्विक विवेचन की ओर अग्रसर होता है। **देवी या देवता हमारे अनुचर नहीं होते, जिन्हें मंत्रों के पाश में बद्ध किया जा सके।**

'मंत्राधीनस्य देवता' का यथार्थ अर्थ यह है, कि वे भावनाओं के अधीन होते हैं। यदि हम तात्त्विक विवेचन की ओर बढ़ेंगे, तो स्वतः ही देवत्व की ओर बढ़ेंगे और तब जो प्राप्त होगा, वह उन्हीं देवताओं का आशीर्वाद स्वरूप होगा। केवल मंत्र साधना में ही नहीं, वरन् तंत्र की भाव-भूमि में भी आन्तरिक विनम्रता, विद्वता और सौहार्द का पर्याप्त स्थान होता है।

यही पुष्टता का भी आधार है

साधक जब तक इस धारणा की पुष्टि मन में नहीं कर लेता, कि वह काम तत्त्व की ही साधना कर रहा है, तब तक षोडशी साधना का पूर्ण यथेष्ट फल नहीं मिल सकता, साधना चाहे गृहस्थ साधक की हो अथवा संन्यस्त साधक की। काम तत्त्व केवल उच्छृंखलता का ही पर्याय नहीं है, वरन् जीवनी शक्ति और सततता का भी सूचक है। जब तक जीवन में काम तत्त्व की ऊष्मा का समावेश नहीं होता, तब तक पुष्टता, गरिमा और पूर्णत्व आ ही नहीं सकता; चाहे वह 'धर्म' का विषय हो, 'अर्थ' का विषय हो या फिर सर्वोच्च लक्ष्य 'मोक्ष' का ही क्यों न हो।

जिस प्रकार धान की कच्ची दूध भरी बालियों को सूर्य अपनी ऊष्मा से परिपक्व, पुष्ट व दूसरे का हित सधने योग्य कर देता है, उसी प्रकार षोडशी साधना की तेजस्विता और काम तत्त्व रूपी ऊष्मा से साधक का सम्पूर्ण जीवन भी परिपक्व, पुष्ट और तृप्त हो जाता है। संन्यासी साधक को इस साधना की आवश्यकता सर्वाधिक रहती है, क्योंकि विषयों का निरन्तर प्रचार, साधना का विस्तार ही उसकी 'संतति' होती है, जिसका प्रजनन वह इसी साधना द्वारा अपने आन्तरिक काम तत्त्व को पुष्ट करके कर सकता है।

इसी से यह भोग व मोक्ष दोनों को देने में समर्थ कही गई है।

मानो या न मानो पर यह सच है. . .

आप मानें या न मानें पर यह वास्तविकता है, कि लघु प्रयोग अत्यधिक शीघ्रता से साधक के कार्यों को पूरा करके उसे लाभ प्रदान कर देते हैं। विस्तार से किया गया पूजन या लाख-सवा लाख मंत्रों का जप करने से तो अभीष्ट की सिद्धि होती ही है; पर कभी-कभी छोटा-सा एक या दो दिन का प्रयोग सम्पन्न करके भी छोटे-बड़े काम पूरे किये जा सकते हैं। तभी तो मैंने लिखा है, कि आप मानें या न मानें. . . लेकिन मुझे विश्वास है, कि जब आप इन प्रयोगों को सम्पन्न करेंगे, तो आप भी यही कहेंगे– हां! यह सच है।

वीर सिद्धि प्रयोग

वीर प्रयोग सामान्यतः बहुत ही दृढ़ शक्ति वाले लोग ही कर सकते हैं, ऐसी लोक मान्यता है, और यही कारण है कि किशोरवय के युवक, स्त्रियां और अपने को वृद्ध मानने वाले व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न करने से कतराते हैं, जबकि वास्तविकता यह है, कि वीर की सिद्धि कोई भी (चाहे वह स्त्री हो, पुरुष हो, किसी भी आयु का हो) सम्पन्न कर सकता है।

'वीर' अत्यन्त साहस, बल, पराक्रम प्रदान करता है और अपने साधक की हर तरह से रक्षा करता हुआ उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करता है। इसकी सिद्धि निम्न प्रकार से की जाती है–

''वीर सिद्धि गुटिका'' प्राप्त कर **रविवार की रात्रि में १२ बजे** घर के एकान्त कक्ष में दक्षिण मुख हो, काले ऊनी वस्त्रासन पर बैठ जायें। जमीन पर रक्त चन्दन से एक चतुर्भुज बना कर उसमें गुटिका को रख दें। चतुर्भुज की चारों दिशाओं में तेल के चार दीपक जलायें और निम्न मंत्र का **३० मिनट तक धीरे-धीरे बोलते हुए जप करें–**

मंत्र

।।ॐ ह्रीं वीर वैतालाय फट्।।

यह क्रिया निरन्तर अगले रविवार तक करें और सुबह इस गुटिका को तथा दीपक(जो मिट्टी के हों) को नदी में प्रवाहित कर दें। प्रयोग पूरा करने के बाद पूर्णता प्राप्ति तक नित्य २१ बार मंत्र को जपना अनिवार्य है।

न्यौछावर– ८०/- रु.

घण्टाकर्ण प्रयोग

भगवान शिव के गणों में उन्हें अत्यधिक प्रिय हैं–''घण्टाकर्ण''। घण्टाकर्ण शिव के प्रिय पात्र बने, क्योंकि उन्होंने शिव की आराधना पूर्ण समर्पण भाव से की तथा शिव की प्रत्येक आज्ञा का पालन तत्क्षण कुशलता पूर्वक कर दिखाया।

जिस प्रकार घण्टाकर्ण भगवान शिव की आज्ञा का पालन करते हैं, उसी प्रकार ये अपनी साधना करने वाले साधक की

मनोकामना को अतिशीघ्रता से पूरा कर देते हैं। अकस्मात् धन प्राप्त करना हो या धन का स्रोत रुक गया हो या जो भी साधक की इच्छा हो, घण्टाकर्ण की साधना से पूरी होती ही है। साधना विधि भी बहुत सरल है–

''घण्टाकर्ण यंत्र'' पूर्ण प्राणश्चेतना युक्त मंगा लें और किसी भी दिन, जब भी आपको आवश्यकता पड़े, इस प्रयोग को सम्पन्न करें। सुबह स्नान के बाद सफेद धोती पहिनें, अपनी भुजाओं पर और मस्तक पर भस्म लगायें, सफेद आसन पर उत्तर की ओर मुंह करके खड़े हो जायें। बायें हाथ में यंत्र और पांच बिल्व पत्र ले लें तथा दाहिने हाथ से ढक दें। **४५ मिनट तक मंत्र-जप करें,** फिर यंत्र का दर्शन करें।

मंत्र

।।ॐ घं घं घंटाकर्णाय फट्।।

उपरोक्त मंत्र का आठ दिन तक जप करें तथा आठवें दिन दोपहर या रात्रि को, किसी भी समय यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें। आकस्मिक धन प्राप्ति शीघ्र हो इसके लिए घण्टाकर्ण मंत्र का नित्य ५१ बार सुबह या शाम, जो समय आपके लिए अनुकूल हो, जप अवश्य करें।

न्यौछावर– १००/-

इन्द्राणी प्रयोग

लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए इन्द्राणी प्रयोग अत्यधिक फलप्रद है। इस प्रयोग को करने वाले साधक को आय का स्थाई स्रोत प्राप्त होता है और निरन्तर आय वृद्धि का मार्ग मिलता रहता है।

''इन्द्राणी माला'' से यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है। इस माला को मंत्रसिद्ध करना अत्यन्त ही पेचीदा और श्रमसाध्य कार्य है, अतः बहुत अल्प संख्या में ही यह मंत्रसिद्ध माला उपलब्ध हो पाई है।

बुधवार को सुबह इस दस दिवसीय प्रयोग को आरम्भ करें। पीली धोती पहिन कर, पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें। अपने सामने एक प्लेट में गुलाब की पंखुड़ियों को रख कर उस पर माला को स्थापित कर दें और धूप दिखा कर पूर्ण सफलता प्राप्ति की प्रार्थना करें। तत्पश्चात् 'इन्द्राणी माला' से **५ माला मंत्र-जप करें–**

मंत्र

।।ॐ श्रीं श्रीं इन्द्राण्यै श्रीं श्रीं ॐ।।

नित्य पांच माला मंत्र-जप करते हुए दस दिन के बाद ग्यारहवें दिन माला को पांच गुलाब के पुष्पों के साथ एक स्वच्छ पीले कपड़े में बांध कर जल में प्रवाहित कर दें। घर आकर हाथ-पैर धो लें तथा पूजा कक्ष में जाकर लक्ष्मी को प्रणाम करें। जब तक आपकी इच्छानुसार धन की प्राप्ति न हो जाय, तब तक नित्य प्रातः वेला में १५ बार इस मंत्र का जप करें।

न्यौछावर– १५०/-

धन्वन्तरी प्रयोग

मनुष्य कितना ही अपने-आप को पूर्णतः स्वस्थ रखने का उपाय क्यों न कर ले, फिर भी उसकी आंख बचाकर कोई न कोई रोग शरीर में प्रवेश कर ही लेता है। वायु-प्रदूषण, खाद्यान्न-प्रदूषण इतनी तेजी से बढ़ रहा है, कि रोज ही व्यक्ति कभी सिर दर्द से, तो कभी कमर दर्द से, तो कभी पेट दर्द से, तो कभी बुखार से और कुछ नहीं तो आलस्य और बेवजह की बेचैनी के कारण मन की घबड़ाहट से परेशान रहता ही है। इन सभी रोगों से छुटकारा पाने के लिए ही तो प्रस्तुत है यहां यह धन्वन्तरी प्रयोग, जिसे सम्पन्न कर आप स्वयं इस से प्राप्त लाभ के कारण इसके प्रशंसक बन बैठेंगे।

''व्रीडक गुटिका'' को अपने सामने पीपल के पत्ते पर स्थापित करें और इस गुटिका पर एक लवंग चढ़ा दें। गुटिका पर त्राटक करते हुए निम्न मंत्र का **१० से १५ मिनट तक जप करें,** फिर उस लवंग को रोगी स्वयं खा ले।

मंत्र

।।ॐ ह्रीं धन्वन्तर्यै नमः।।

यह प्रयोग नित्य पन्द्रह दिन तक इसी प्रकार करें। सोलहवें दिन गुटिका और पीपल के पत्तों को जल में प्रवाहित कर दें। स्थायी निदान प्राप्ति के लिए इस मंत्र का पांच मिनट तक जप करना अनिवार्य है।

न्यौछावर– ७५/-

शत्रु मर्दन प्रयोग

दस महाविद्या साधनाओं में अति विशिष्ट स्थान रखने वाली बगलामुखी साधना प्रमुखतः शत्रुओं के नाश के लिए ही सम्पन्न की जाती है। शास्त्रों में बगला की विशद साधनाएं दी गई हैं, जिनका सवा लाख और पांच लाख मंत्र-जप अनुष्ठान के रूप में करना आवश्यक होता है, किन्तु बगलामुखी की यह लघु साधना, जिसे 'शत्रु मर्दन प्रयोग' के नाम से सम्वोधित किया गया है, अति शीघ्र शत्रुओं का मर्दन कर साधक को निष्कंटक मार्ग प्रदान कर देती है।

बगलामुखी विष्णु की रक्षा करने वाली स्तम्भिनी शक्ति

कही गई है, इसलिए इसे 'ब्रह्माण्डा' भी कहते हैं।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने वाले साधक के शत्रुओं का पूर्णरूप से स्तम्भन हो जाता है, वे शत्रु कितने भी प्रबल हों, साधक का अहित नहीं कर पाते हैं। साथ ही इस प्रयोग के द्वारा घर-बाहर दोनों जगह का कलह समाप्त होकर, शांति का वातावरण बनता है और विरोधियों का सिर नीचा होता है।

''तांत्रोक्त फल'' को प्राप्त करें और **मंगलवार की अर्धरात्रि** में, घर या दुकान में कहीं भी किसी एकांत स्थल पर, पीले चावलों की ढेरी पर इसे स्थापित कर दें और निम्न **मंत्र को बोलते हुए २१ पीले फूल एक-एक कर तांत्रोक्त फल पर चढ़ायें।**

मंत्र

।।ॐ क्लीं क्रीं ह्लीं फट्।।

ऐसा तीन दिन तक करें। प्रयोग समाप्ति के बाद तांत्रोक्त फल को नदी में विसर्जित कर दें। जीवन निष्कंटक बना रहे, अतः रोज २१ बार मंत्र-जप करें। साधक पीली धोती व पीले आसन का प्रयोग करें। उत्तर दिशा इस प्रयोग के लिए निर्धारित की गई है।

न्यौछावर— ६०/-

गृहस्थ सुख प्रयोग

पूर्ण गृहस्थ सुख प्राप्त करना प्रत्येक स्त्री एवं पुरुष की अभिलाषा होती है, किन्तु यह इच्छा बहुत ही कम लोगों की पूरी हो पाती है, क्योंकि घर में आये दिन किसी न किसी कारण से पति-पत्नी में मतभेद हो ही जाता है, एक बार मतभेद हो गया, तो कम-से-कम आठ-दस दिन तनाव में बीतते ही हैं। बाद में भले ही एक-दूसरे के बिना काम न चलने के कारण मेल-मिलाप हो जाता है, किन्तु मतभेद और मिलाप का यह सिलसिला कहीं कोई अत्यधिक दुःखद रूप न धारण कर ले, इसलिए पहले ही सुख-शांति का उपाय प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति को कर लेना चाहिए।

दो **''गोमती चक्र''** मंगा लें तथा एक-एक मुट्ठी काली मिर्च अलग-अलग दो कागजों पर रख कर उस पर गोमती चक्र रखें और कागजों की पुड़िया बना लें। एक पर साधक अपना नाम लिखें और दूसरे पर अपनी पत्नी का, दोनों पुड़ियाओं पर सिन्दूर चढ़ा दें, पहले एक पुड़िया अपने सामने रखें तथा उसे अपलक देखते हुए **२५ बार मंत्र का उच्चारण करें,** फिर दूसरी पुड़िया के सामने भी २५ बार मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र

।।ॐ श्रीं ऐं गृहस्थ सुख चैतन्यै नमः।।

यह विधान सात दिन तक नित्य करें; सातवें दिन दोनों पुड़ियाओं को एक साथ मौली से बांधकर, नदी में विसर्जित कर दें। इस साधना को करने के लिए किसी प्रकार के वस्त्र, आसन या दिशा अथवा दिन आदि का कोई बन्धन नहीं है।

न्यौछावर(दो गोमती चक्र)— ४२/-

राज्य बाधा निवारण प्रयोग

सामाजिक प्राणी होने के कारण व्यक्ति को समाज के नियमों का पालन करना आवश्यक होता है, किन्तु कभी-कभी ईर्ष्यावश या अपने प्रभुत्व प्रदर्शन की भावना से समाज में शासकीय रूप से नियुक्त अधिकारियों द्वारा अड़चनें उत्पन्न कर दी जाती हैं, जिनके चक्र में उलझे व्यक्ति के दिन-रात का चैन समाप्त हो जाता है। उसे कभी इस अधिकारी के पास जाना पड़ता है, तो कभी उस अधिकारी के पास। ये अड़चनें ही राज्य बाधा कही जाती हैं, जो कभी प्रमोशन न मिलने का कारण, तो कभी झूठे गवन का आरोप लगने के कारण व्यक्ति के सामने वीभत्स रूप धारण कर उपस्थित होती हैं।

किसी प्रकार की राज्य बाधा हो, उसके निवारण के लिए **''हनुमान कंकण''** किसी लाल धागे में बांध कर हनुमान चित्र के सामने रख दें और उस पर पुष्प, चन्दन, अक्षत चढ़ायें तथा 'गुड़ का हलवा' नैवेद्य के रूप में चढ़ायें, फिर अपनी समस्या समाप्त करने के लिए श्री हनुमान से प्रार्थना करें और निम्न मंत्र का 'कर-माला' से **१२ माला जप करें**–

मंत्र

।।ॐ क्रीं क्लीं ॐ।।

एक दिन की इस साधना को करने के पश्चात् कंकण को बायें हाथ में सवा महीने तक पहिनने के पश्चात् नदी या कुएं में विसर्जित कर दें। सफलता मिलने तक प्रतिदिन ५१ बार मंत्र का जप अनिवार्यतः करना ही चाहिए।

न्यौछावर— ६०/-

भाग्योदय प्रयोग

'सकल पदारथ है जग माहिं, भाग्यहीन नर पावत नाहिं' रामचरितमानस की यह चौपाई बहुत ही तथ्यात्मक है। यदि हम अपने जीवन पर ध्यान दें, तो निश्चय ही इसी तरह की घटना हमारे साथ भी घटित होती ही है। कोई व्यक्ति बहुत अधिक परिश्रम और लगन से किसी कार्य को सम्पन्न करता है और जब उसका सुपरिणाम प्राप्त होने वाला होता है, तो वह किसी और को प्राप्त हो जाता है, ऐसा प्रायः प्रत्येक के जीवन में घटित होता ही है।

ठेकेदार को टेण्डर का ऑर्डर मिलते-मिलते किसी दूसरे को मिल जाता है, सम्मान पत्र किसी ऑर्किटैक्ट को मिलते-मिलते रह जाता है और वह किसी और को मिल जाता है. . . और जब

ऐसा होता है, तो व्यक्ति अपने-आप को सन्तोष देने के लिए अपने भाग्य को दोषी मान कर चुप रह जाता है. . . और कर भी क्या सकता है वह! लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो हताश नहीं होते, फिर नये सिरे से कार्य में लग जाते हैं, और भी मेहनत से कार्य करते हैं अपने भाग्य को चुनौती देते हुए।

कर्म और भाग्य दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और दोनों के समान मिलन से ही यश की प्राप्ति होती है। कर्म करना व्यक्ति के हाथ में है, लेकिन भाग्य जगत्-नियन्ता के हाथ में। यदि व्यक्ति भाग्य को प्रवल बनाना चाहता है, तो उसे 'भाग्योदय प्रयोग' अवश्य सम्पन्न करना चाहिए। इस प्रयोग को करने के बाद आप निश्चय ही यशोभागी बनेंगे।

''हल्ट हकीक'' के सामने **बृहस्पतिवार** को सुबह निम्न मंत्र का **५१ बार जप करें**। मंत्र-जप के बाद हल्ट हकीक को एक डिब्बे में बन्द करके रख दें। अगले दिन फिर हल्ट हकीक को बाहर निकालें और मंत्र-जप कर डिब्बे में रख दें, ऐसा दस दिन तक करें। दसवें दिन हल्ट हकीक को उसी डिब्बे में बन्द करके नदी, समुद्र या कुंए में विसर्जित कर दें।

मंत्र

।।ॐ भ्रं भद्राय भ्रं सुखाये नमः।।

इस मंत्र का नित्य ११ बार उच्चारण करना आवश्यक है, जिससे भाग्य शक्ति सदैव प्रबल बनी रहे।

न्यौछावर— ५०/-

मनोवांछित कामना सिद्धि प्रयोग

व्यक्ति की कामनाएं अनन्त होती हैं, एक कामना पूरी होती है, तो दूसरी कामना को पूरा करने के लिए व्यक्ति प्रयासरत हो जाता है। एक के बाद एक इच्छाओं की पूर्ति करते रहना, यह एक ऐसी क्रिया है, जो व्यक्ति के रक्त में बचपन से रच-पच गयी है; और इस क्रिया को करते हुए जब कभी मन की कोई इच्छा पूरी नहीं हो पाती, तो वह झुंझला उठता है और कभी-कभी तो व्यक्ति अपनी मनोवांछित कामना को पूरा करने के लिए अनैतिक कार्य भी कर बैठता है। किसी अन्य तरह के कार्य को करने की अपेक्षा यदि वह व्यक्ति 'मनोवांछित कामना सिद्धि प्रयोग' को सम्पन्न कर ले. तो उसकी मनोकामना की पूर्ति होती है। **'''बिकिनाऔल''** को **शुक्रवार** के दिन प्लेट में कुंकुम से 'ॐ' लिख कर, उसके ऊपर स्थापित करें, धूप दिखा कर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए **२१ पान के पत्ते** एक-एक कर बिकिनाऔल पर चढ़ायें—

मंत्र

।।ॐ ह्रीं श्रीं मनोवांछित कार्य सिद्धिं नमः।।

ऐसा बीस दिन तक करें। रोज चढ़ाये जाने वाले पान के पत्तों को एक जगह इकट्ठा करते रहें। २१वें दिन सभी पान के पत्ते और बिकिनाऔल को किसी लाल कपड़े में लपेट कर नदी में प्रवाहित कर दें। मंत्र का रोज २१ बार जप करना चाहिए।

न्यौछावर— १००/-

ऋण मुक्ति प्रयोग

यह प्रयोग, जो कि 'धनदा लक्ष्मी' का अति लघु किन्तु तीव्र प्रयोग है। कोई भी व्यक्ति यदि ऋण से ग्रस्त है, तो उसे इस प्रयोग को अवश्य करना चाहिए। इसको सम्पन्न करने पर साधक को ऋण से मुक्ति तो मिलती ही है, साथ ही उसे पूर्ण वैभव-विलास और ऐश्वर्य की प्राप्ति भी होती है। यह साधना किसी भी **बुधवार** को शुभ मुहूर्त देखकर की जा सकती है। मंत्र-जप करने से पूर्व अपने दाहिने हाथ में जल लेकर, आप जिस कार्य हेतु इस प्रयोग को कर रहे हैं, उसे बोलें। गुरुदेव से और धनदा देवी से इसे पूर्ण करने की प्रार्थना करें।

''धनदा गुटिका'' को गुलाल की ढेरी वनाकर स्थापित कर दें और पांच तेल के दीपक जलाकर गुटिका के सामने रख दें, फिर निम्न **मंत्र का एक सौ एक बार** हाथ की उंगलियों पर गिनती करते हुए **उच्चारण करें**—

मंत्र

।।ॐ ह्रीं ॐ।।

मंत्र-जप पूरा करके दीपकों को फूंक मारकर बुझा दें। उपरोक्त तरीके से तेरह दिन तक प्रयोग करें। १३वें दिन प्रयोग समाप्त होने पर पांचों दीपक व धनदा गुटिका को काले कपड़े में बांधकर, जमीन में दो हाथ गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ दें या फिर ऐसा सम्भव नहीं हो, तो नदी में प्रवाहित कर दें। नित्य २१ बार मंत्र-जप अनिवार्यतः करना चाहिए। इस प्रयोग को करने में साधक पीली धोती तथा पीले आसन का प्रयोग करें और पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठें।

न्यौछावर— ६५/-

यहां प्रस्तुत प्रयोगों को आप अपनायें और इनकी शक्ति का स्वयं अनुभव करें। इन प्रयोगों को आपसे पूर्व अनेकों व्यक्तियों ने किया है और पूरा लाभ उठाया है। ये छोटे से दिखने वाले प्रयोग 'अणु' के समान ही अपने अन्दर अपार शक्ति का भंडार छुपाये हुए हैं। जिस प्रकार अणु का विखण्डन कर उससे प्राप्त ऊर्जा से असम्भव कार्य को भी सम्भव बनाया जा रहा है, ठीक उसी प्रकार इन प्रयोगों के अन्दर असीम शक्ति है, जिनके द्वारा आप-अपने असम्भव कार्य को भी सम्भव बना सकते हैं, क्योंकि—

''देखन में छोटे लगें, काम करें गम्भीर''

इस मास में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली **''गुरुधाम''** में ही **पूज्य गुरुदेव** या **श्री राम चैतन्य जी शास्त्री** के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन **शाम ५ से ८ बजे** के बीच सम्पन्न होती हैं।

साधना में भाग लेने वाले को यंत्र, पूजन-सामग्री आदि गुरुधाम से ही निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और पंचपात्र अपने साथ लावें या न हो तो यहां से प्राप्त कर लें)

८ अक्टूबर ६५ – शरद पूर्णिमा — चन्द्रोज्ज्वला अप्सरा साधना

जीवन में पूर्ण पौरुष प्रदात्री एवं सहचरी के रूप में साथ देने वाली अप्सरा, जिसकी साधना से साधक को यौवन, सौन्दर्य व सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

१४ अक्टूबर ६५ – ललितोत्सव — ललिताम्बा प्रयोग

अद्भुत, आश्चर्यजनक वशीकरण-सम्मोहन प्रयोग, पत्थर को भी वश में कर उससे मनोवांछित कार्य कराने में सहायक एक गोपनीय, दुर्लभ साधना विधि।

२१ अक्टूबर ६५ – धन त्रयोदशी — कुबेर साधना

सर्वथा दुर्लभ रहस्यों से ओत-प्रोत, एक महत्त्वपूर्ण साधना विधि, लक्ष्मी प्राप्ति का श्रेष्ठतम प्रयोग, आकस्मिक धन लक्ष्मी, राज्य सम्मान एवं पूरे जीवन भर लक्ष्मी वृद्धि का दुर्लभ साधना दिवस।

२८ अक्टूबर ६५ – त्रिपुरा दिवस — त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग

शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार करने, मुकदमे में सफलता, जीवन में सर्वत्र विजय एवं मनोवांछित कार्यसिद्धि का श्रेष्ठतम साधना पर्व।

उपरोक्त दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे–

१. आप-अपने किन्हीं दो मित्रों या स्वजन को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर प्रत्येक से 180/- रुपये वार्षिक शुल्क तथा 15/- रुपये डाक व्यय इस प्रकार कुल 195/- रुपये प्राप्त कर लें। आप इन दोनों मित्रों का शुल्क (195+195 = 390/-) जमा करा कर, कार्यालय से रसीद प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको साधना-सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क **''संजीवनी यंत्र''** दिया जायेगा व उन दोनों सदस्यों को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका निष्ठापूर्वक प्रतिमाह भेजते रहेंगे।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं दो वर्ष की सदस्यता प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको **''संजीवनी यंत्र''** उपहार स्वरूप प्राप्त नहीं हो सकेगा।

३. आप यदि किन्हीं कारणों से दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 360/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।

४. प्रत्येक साधना दिवस का शुल्क 360/- रुपये या दो पत्रिका सदस्य है।

नोट : इस योजना में आप-अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं करा सकते।

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

धनवर्षिणी लक्ष्मी प्रयोग

जिससे लक्ष्मी स्थायी रूप से घर में धन-वर्षा करती रहती है और दरिद्रता, अभाव लाखों मील दूर भाग जाते हैं।

- मेरे जीवन की सफलता, प्रसिद्धि और सम्मान का एकमात्र कारण– 'धनवर्षिणी लक्ष्मी प्रयोग'।
- मेरे जीवन की उमंग, मेरे जीवन का जोश और उत्साह का एकमात्र कारण– 'धनवर्षिणी लक्ष्मी प्रयोग'।
- मैं भले ही अन्य साधनाएं करूं या न करूं, इस प्रयोग को तो समय-समय पर करता ही हूं।

– निरञ्जन शाह (एक प्रमुख उद्योगपति), बम्बई।

सामाजिक व्यवस्था को संतुलित बनाये रखने के लिए चार प्रकार के पुरुषार्थों– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का निर्धारण किया गया है। ये चारों पुरुषार्थ प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के आवश्यक अंग हैं और एक-दूसरे के पूरक हैं। पुरातन युग 'धर्म' प्रधान युग था और वर्तमान युग 'अर्थ' प्रधान युग है। ऐसा नहीं है कि पुरातन युग में अर्थ की आवश्यकता नहीं थी, आवश्यकता तो उस समय भी थी, किन्तु लोगों की भावनाओं में प्रधानता 'धर्म' की थी। युग बदला, आवश्यकताएं बदलीं और मान्यताएं भी बदल गईं; आज मानव जीवन का केन्द्र बिन्दु 'अर्थ' हो गया है और अर्थ पर ही शेष तीनों पुरुषार्थ आधारित हो गये हैं।

इसलिए आज व्यक्ति की सर्वप्रथम आवश्यकता है, कि वह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो; उसके पास धन का न होना, सुखद जीवन का अंत ही माना जाता है।

किसी भी लक्ष्मी साधना का तात्पर्य मात्र धनोपार्जन से नहीं है, अपितु सम्पूर्ण भौतिक सम्पदा की पूर्ति है– और समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति लक्ष्मी के स्थायित्व से होती है।

धन का तात्पर्य– रुपये-पैसे तक ही सीमित नहीं है, व्यक्ति के पास धन-धान्य, यश, कीर्ति, भवन, ऐश्वर्य सब कुछ हो, वही धनवान है, वही लक्ष्मीवान है, ऐश्वर्यवान है। किसी भी लक्ष्मी साधना का तात्पर्य मात्र धनोपार्जन से नहीं, अपितु समस्त भौतिक सम्पदा की पूर्ति है. . . और समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति लक्ष्मी के स्थायित्व से ही प्राप्त हो सकती है।

जीवन में दुःख, परेशानी, पीड़ा, कष्ट, दरिद्रता कुछ तो भाग्य का दोष कहा जा सकता है, और कुछ व्यक्ति के खुद का आचरण, जो उसे इस प्रकार के दारुण्य को भोगने के लिए मजबूर कर देता है। कितने ही धनोपार्जन के उपाय क्यों न कर लें, प्रतिवर्ष दीपावली को मंत्र-जप, अनुष्ठान आदि कार्य क्यों न सम्पन्न कर लिए जायें, फिर भी लक्ष्मी स्थायी रूप से किसी के घर में नहीं रह पाती. . . और फिर एक बार व्यक्ति के मन में अपने कर्म, भाग्य तथा पूजा-पाठ के प्रति सन्देह, भ्रम, अविश्वास की दीवार खड़ी हो जाती है– जबकि ऐसा नहीं है।

लक्ष्मी का स्थायीवास सम्भव है, किन्तु उसके लिए नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था और उसी के अनुकूल वातावरण बनाना पड़ता है,तभी लक्ष्मी प्रसन्न रूप से वास करती है।

अस्तु, साधक के लिए सबसे आवश्यक और महत्त्वपूर्ण बात यह है, कि वह घर में एक ऐसे वातावरण का निर्माण करे, कि लक्ष्मी खुद आने के लिए बेताब हो जाय, अपने समस्त सहस्र रूपों में। किसी भी व्यक्ति को यदि सम्मान दिया जाय, उसका प्रेम पूर्वक स्वागत किया जाय, उसके मनोनुकूल व्यवहार किया जाय, तो वह अपना सर्वस्व समर्पित करता ही है।

अतः साधक को यह जानना आवश्यक है, कि लक्ष्मी कहां रहती है–

- जिस घर में मधुरता का वातावरण हो।
- वहां रहने वाले लोग सत्यभाषी हों।
- धर्म को मानने वाले तथा सदाचारी हों।
- घर में किसी प्रकार का कोई लड़ाई-झगड़ा या कलह की स्थिति उत्पन्न न होती हो।
- सभी सदस्य मृदुभाषी हों।
- एक-दूसरे का सम्मान करते हों।
- जिस घर के लोग अपने इष्ट या गुरु के प्रति श्रद्धानत हों।
- जहां व्यक्ति सूर्योदय से पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर ईश्वर का चिन्तन करता हो।
- जहां स्त्री, पुरुष का व घर के प्रत्येक सदस्य का सम्मान करती हो और पुरुष भी स्त्री के सम्मान और प्रतिष्ठा का हमेशा ध्यान रखता हो।
- जहां स्त्री पूर्ण श्रृंगारयुक्त रहती हो, क्योंकि जो स्त्री सुन्दर व सुरुचिपूर्ण ढंग से सुसज्जित रहती है, लक्ष्मी उसके रूप में वहां स्थापित रहती ही हैं।
- जहां स्त्री सबको भोजन खिला कर फिर भोजन करती हो।
- जहां स्त्री शुद्ध व सात्विक भोजन बना कर खिलाती हो, अशुद्धता नहीं बरतती हो।
- जहां गुरु की ईश्वर तुल्य मान कर पूजा होती हो।
- जहां घर में आये अतिथि का ईश्वर की तरह आदर-सत्कार किया जाता हो।
- घर पवित्र और स्वच्छ बना रहता हो, जरा भी गन्दगी न हो।
- स्वयं भी स्वच्छ कपड़े पहिनते हों।
- जो खाना खाने से पहले तथा रात्रि को सोते समय हाथ-पैर धोकर सोता हो।
- आध्यात्मिक वातावरण हो, कोई न कोई उत्सव, त्यौहार, पूजा-पाठ होता हो।

–जब घर में ऐसा वातावरण हो और यदि ''धनवर्षिणी लक्ष्मी प्रयोग'' सम्पन्न कर लिया जाय, तो लक्ष्मी कहीं और जा ही नहीं सकती, उसे रहने के लिए विवश होना पड़ता है. . . और जब ऐसा होता है, तो स्वतः ही व्यापार में वृद्धि होने लगती है, ऋण से मुक्ति मिल जाती है. . . और फिर गृहस्थ की सम्पन्नता तो रुपये-पैसे के साथ ही साथ उसकी कीर्ति, यश, मान, सम्मान भी होता है।

जीवन में जो न्यूनताएं रह जाती हैं, उन्हीं की समाप्ति के लिए यह साधना सम्पन्न की जाती है। यह साधना श्री, सुख-समृद्धि प्रदान करने में अद्वितीय एवं सर्वश्रेष्ठ है, प्रत्येक स्त्री-पुरुष को यह साधना अपने गृहस्थ

शंकराचार्य ने स्वयं इस प्रयोग की प्रशंसा की है और अपने कई गृहस्थ शिष्यों को यह साधना सम्पन्न कराकर उनके घर में लक्ष्मी का स्थायी वास कराया।

जीवन को पूर्णता देने के लिए अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

प्रयोग विधि :

१. इस प्रयोग के लिए आवश्यक सामग्री है– **'धनवर्षिणी लक्ष्मी यंत्र'** व **'धनाक्षी माला'**, जो मंत्र-सिद्ध व प्राण-प्रतिष्ठा युक्त हों।

२. **कार्तिक शुक्ल पक्ष १.११.६५ बुधवार, लक्ष्मी दिवस** के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न करें, यदि इस दिन न कर सकें, तो किसी भी **रविवार** के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।

३. इस प्रयोग को **ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः ४ बजकर ४५ मिनट से ७ बजे के मध्य** करें।

४. **पूर्व दिशा** की ओर मुंह करके बैठें।

५. **पीले आसन** का प्रयोग करें।

६. साधक स्नान आदि क्रियाओं से निवृत्त होकर साधना कक्ष में बैठ जायें, फिर गुरु-पूजन सम्पन्न करें। एक चौकी पर सफेद रंग का वस्त्र बिछा दें और उस पर तांबे या स्टील की एक छोटी-सी प्लेट में 'श्रीं' बीज अंकित करें।

७. इसके पश्चात् 'यंत्र' को जल से स्नान कराकर, पोंछकर उसे प्लेट में स्थापित कर दें तथा कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप व दीप आदि से विधिवत् पूजन करें।

८. पूजन के पश्चात् हाथ में जल लेकर, अपने गोत्र व नाम का उच्चारण कर अपने कार्य की पूर्णता हेतु धनवर्षिणी लक्ष्मी से प्रार्थना करें, फिर निम्न मंत्र से ध्यान करें–

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम्।
त्रिनेत्रां खड्ग-त्रिशूल-पद्म-चक्र-गदा-धराम्।।
पीताम्बर-धरां देवीं नानालंकार-भूषिताम्।
तेजः पुञ्ज-धरीं श्रेष्ठां ध्यायेद् बाल कुमारीकाम्।।

६. फिर निम्न मंत्र का 'धनाक्षी माला' से **१ माला जप** करें–

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं धनवर्षिणी लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम गृहे तिष्ट तिष्ट स्वाहा।

१०. जप के बाद थोड़े से अक्षत यंत्र पर चढ़ा दें।

११. इसके पश्चात् यथाविधि मानसोपचार पूजन कर निम्न स्तोत्र का एक बार पाठ करें–

ॐकारं लक्ष्मी-रूपं तु, विष्णुं हृदयमव्ययम्।
विष्णुमानन्दमव्यक्तं, ह्रींकारं बलि-रूपिणीम्।।
क्लीं अमृतानन्दिनीं भद्रां, सदाऽनन्द-प्रदायिनीम्।
श्रीं दैत्य-शमनीं शक्तिं, मालिनीं शत्रु-मर्दिनीम्।।
तेजः प्रकाशिनीं देवीं, वरदां शुभ कारिणीम्।
ब्राह्मीं च वैष्णवीं रौद्रीं, कालिका रूप शोभिनीम्।।
अकारः लक्ष्मी रूपं तु, उकारः विष्णुमव्ययम्।
मकारः पुरुषोऽव्यक्तो, देवी प्रणव उच्यते।।
सूर्य कोटि प्रतीकाशं, चन्द्र कोटि सम प्रभम्।
तन्मध्ये निकरं सूक्ष्मं, ब्रह्म रूपं व्यवस्थितम्।।
ॐकारं परमानन्दं, सदैव सुख सुन्दरीम्।
सिद्ध लक्ष्मि मोक्ष लक्ष्मि, आद्य लक्ष्मि! नमोऽस्तुते।।
सर्व मंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि! नमोऽस्तुते।।
प्रथमं त्र्यम्बका गौरी, द्वितीयं वैष्णवी तथा।
तृतीयं कमला प्रोक्ता, चतुर्थं सुन्दरी तथा।।
पंचमं विष्णु शक्तिश्च, षष्ठं कात्यायनी तथा।
वाराही सप्तमं चैव, ह्यष्टमं हरि वल्लभा।।
नवमी खड्गिनी प्रोक्ता, दशमं चैव देविका।
एकादशं सिद्ध लक्ष्मीर्द्वादशं हंस वाहिनी।।

१२. फिर यंत्र पर पुष्प चढ़ावें।

१३. पाठ-समाप्ति के पश्चात् एक माला मूल मंत्र का पुनः जप करें।

१४. जप करने के बाद यंत्र पर अक्षत और पुष्प चढ़ावें।

१५. उपरोक्त विधान को सम्पन्न करने के बाद एक सप्ताह के भीतर ही यंत्र व माला दोनों को किसी नदी या कुएं में प्रवाहित कर दें।

इस प्रकार श्रद्धापूर्वक साधना सम्पन्न करने पर लक्ष्मी का वास घर में होता ही है।

साधना-सामग्री (माला, यंत्र) न्यौछावर – ३६०/-

प्रारम्भिक सर्वोत्तम सूत्र

कोई भी व्यक्ति हिप्नोटिस्ट बन सकता है। किसी हिप्नोटिस्ट के अन्दर कोई ऐसी विशेष प्रभावकारी शक्ति नहीं होती, जो कि आपके अन्दर न हो, वरन् सत्यता यही है, कि उसे हिप्नोटाइज करने की क्रिया का ज्ञान हो. . . निस्सन्देह थोड़े से अभ्यास और प्रारम्भिक सिद्धान्तों को पढ़ कर, अपना कर कोई भी व्यक्ति आशातीत सफलता प्राप्त कर हिप्नोटिस्ट बन सकता है।

''हिप्नोटिज़्म'' या ''सम्मोहन विज्ञान'' प्रारम्भ से ही मानव-मन की जिज्ञासा का केन्द्र विन्दु रहा है, क्योंकि यह मानव के लिए अत्यन्त ही कल्याणकारी एवं उपयोगी है, यह कोई धर्म या शास्त्र नहीं, शुद्ध विज्ञान है, जिसे आज संसार भर में अपनाकर इससे लाभ उठाया जा रहा है।

यह विज्ञान वर्तमान एवं आने वाली पीढ़ी के लिए भी वरदान है, जिसके माध्यम से समाज व देश में अनुकूलता पैदा की जा सकती है। बड़े-बड़े विद्वानों व वैज्ञानिकों ने शोध कर इस ज्ञान को विश्व के श्रेष्ठतम विज्ञान
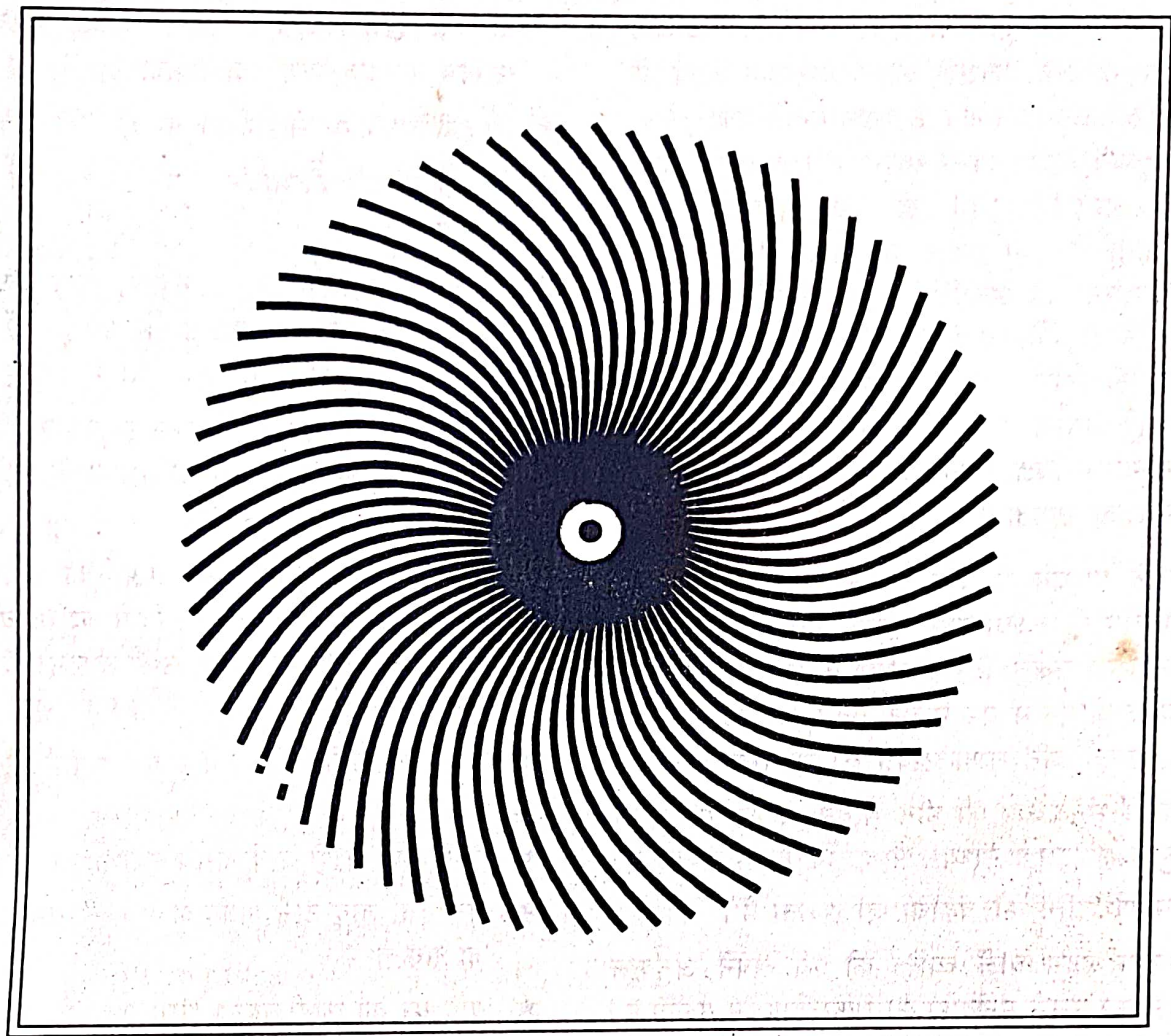
के रूप में स्वीकार किया है।

संसार का कोई भी व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष या फिर एक १२-१३ साल का बालक ही क्यों न हो, एक सफल हिप्नोटिस्ट बन सकता है। यदि गंभीरता से चिन्तन किया जाय तथा सम्मोहन के नियमों को, सूत्रों को किसी अच्छे हिप्नोटिस्ट के सान्निध्य में रह कर या उसकी पुस्तकों और लेखों के द्वारा समझ कर अभ्यास किया जाय, तो वह निश्चय ही सफलता प्राप्त कर सकता है।

हिप्नोटिज़्म क्या है?

यह एक ऐसा विज्ञान है, जिसका सम्बन्ध सीधा हमारे मन से जुड़ा होता है। हिप्नोटिज्म मन को निर्विचार करने का एक सरल व सक्षम उपाय है। इसके माध्यम से समस्त मानसिक तनावों व समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है, क्योंकि शरीर की सारी क्रियाओं का मन से संचालन होता है, जिसे अन्तर्मन (इनर कॉन्शस माइण्ड) कहते हैं।

किसी व्यक्ति को सम्मोहित करने के लिए सर्वप्रथम उसके बाहरी मन को सुप्त कर देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वह बाहरी दुनिया से कट जाता है और उसकी बुद्धि व तर्क सम्मोहित अवस्था में काम करना बन्द कर देते हैं, तब ऐसी स्थिति में उसके अन्तर्मन को जो चेतना, जो विचार दिया जाता है, वह स्थायी रूप से उसके मन में स्थापित हो जाता है। इस प्रकार व्यक्ति के अन्तर्मन को निर्देश प्रदान कर, अपने मनोनुकूल कार्य करवा लेना ही 'सम्मोहन' है।

अब प्रश्न यह उठता है कि आज के युग में यह क्यों जरूरी है?

आज के युग में मन को शुद्ध व निर्विचार बनाने में इसकी विशेष आवश्यकता है, जिससे कि हमारा समाज और देश सही रूप में मानवीय मूल्यों की स्थापना कर ऊंचाई की ओर उठ सके। अपनी प्रगति के कारण मनुष्य

शारीरिक रूप से कम और मानसिक रूप से अत्यधिक परिश्रम करने लगा है, जिसके कारण मस्तिष्क श्लथ हो जाता है और अत्यधिक तनाव के कारण मन में घृणा, क्रोध, द्वेष जैसी दुष्प्रवृत्तियां अपना स्थान बना लेती हैं। यही कारण है कि आज जिधर भी देखो, हिंसा और तोड़-फोड़ ही नजर आती है। इस प्रकार की विकट परिस्थिति में 'सम्मोहन विज्ञान' की अत्यधिक आवश्यकता है, क्योंकि इस विज्ञान के द्वारा मानव के मन में व्याप्त घृणा को प्रेम में तथा द्वेष को अपनत्व में बदल कर शांति व मधुरता का वातावरण पूरे समाज में व्याप्त किया जा सकता है।

सम्मोहन विज्ञान को सामान्यतः निम्न संदर्भों में प्रयोग किया जा सकता है—

★ इसके माध्यम से बुरी आदतों, जैसे— धूम्रपान, मदिरापान, वेश्यागामी प्रवृत्ति आदि को समाप्त किया जा सकता है। सम्मोहन के द्वारा समस्याग्रस्त व्यक्ति के मन में यह भावना देकर, कि यह सही नहीं है, उनके प्रति घृणा उत्पन्न की जा सकती है।

★ किसी भी प्रकार की हीन भावना व मन में व्याप्त कुंठा को इसके माध्यम से दूर किया जा सकता है।

★ स्मरण शक्ति को बढ़ाया जा सकता है।

★ कठोर हृदय वाले व्यक्ति को भी अपने अनुकूल बनाकर उससे मनचाहा कार्य करवाया जा सकता है।

★ व्यापार के क्षेत्र में, जैसे— बातचीत करना, लेन-देन करना, टेण्डर पास करवाना, मजदूरों को हड़ताल करने से रोकना, मीटिंग को अनुकूल बनाना, अनुकूल निर्णय प्राप्त करना आदि कार्यों को सम्मोहन के माध्यम से संभव किया जा सकता है।

★ आकर्षण पैदा किया जा सकता है।

★ चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में हिप्नोटिज़्म की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, इसके द्वारा रोगी को सम्मोहित कर अनेक असाध्य बीमारियों से यथासंभव मुक्ति दी जा सकती है।

★ बिना बेहोश किये कठिन-से-कठिन ऑपरेशन किया जा सकता है।

★ यदि पति-पत्नी में मतभेद होने के कारण एक-दूसरे के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न हो जाय, तो उनकी दुर्भावना सम्मोहन के माध्यम से समाप्त की जा सकती है।

★ यदि प्रेमी या प्रेमिका के मध्य सन्देह उत्पन्न हो गया हो, तो ऐसी स्थिति में सम्मोहन की सहायता से सन्देह को दूर किया जा सकता है।

★ राजनीतिक दृष्टि से भी यह अनुकूल सिद्ध होता है।

★ ज्यादा परिश्रम की भावना अपने अन्दर पैदा की जा सकती है।

★ व्यक्ति कितना भी धूर्त, मक्कार, चोर, बदमाश, चालाक, क्रूर क्यों न हो, इसके माध्यम से उसके अवगुणों को कुछ कम किया जा सकता है।

★ यदि बच्चे मां-बाप का कहना न मानते हों और गलत रास्ते पर भटक गये हों, तो उन्हें सही दिशा निर्देश दिया जा सकता है।

★ मन में व्याप्त कुंठित भावनाओं को, जो किसी कारणवश दबी रह जाती हैं, जिसे व्यक्ति चाह कर भी किसी से नहीं कह पाता, उन्हें उजागर किया जा सकता है।

★ जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता पाई जा सकती है।

★ बिना कष्ट व पीड़ा के प्रसव कराया जा सकता है।

★ भूत-प्रेत, जादू-टोने आदि के भय को समाप्त किया जा सकता है।

★ यदि घर का कोई सदस्य भाग गया हो, तो ऐसे में फोटो पर सम्मोहन कर उसे वापिस लौटने की भावना दी जा सकती है।

इस प्रकार हर क्षेत्र में, हर दृष्टि से हिप्नोटिज़्म पूर्णतः लाभप्रद एवं कल्याणकारी सिद्ध होता है, जिससे अनन्य समस्याओं का समाधान प्राप्त किया जा सकता है, मानसिक तनावों को दूर किया जा सकता है और अपने जीवन को अत्यधिक सुखमय व आनन्दयुक्त बनाया जा सकता है।

किस प्रकार अभ्यास करें?

सम्मोहन शक्ति का प्रवाह नेत्रों के माध्यम से किया जाता है, इसलिए नेत्रों का तेजस्वी होना आवश्यक है। नेत्रों की तेजस्विता प्राप्त करने का सहज व सरल उपाय है— **'त्राटक'**।

— और वास्तव म देखा जाय, तो सम्मोहन का आधार त्राटक ही है, यह सम्मोहन की प्रारम्भिक क्रिया है, क्योंकि इसके द्वारा ही नेत्रों में वह चुम्बकीय शक्ति प्राप्त होती है, जो सामने वाले के हृदय में उतर कर, उसे प्रभावित

कर, सम्मोहन कर्ता की बात पर सहमत कर देती है।

सर्वप्रथम प्रातःकाल उठकर, सामान्य सरल कपड़े पहिन कर एकांत में बैठ जायें, जहां कोई हस्तक्षेप न करे, कमरे में हल्की रोशनी हो, अगरबत्ती लगा दें, जिससे कि वातावरण सुगन्धित बन सके।

फिर अपने सामने दीवार पर एक लाल बिन्दी लगा दें, और बिना पलक झपकाये उस बिन्दी पर अपनी दृष्टि एकाग्र करने का प्रयास करें।

प्रारम्भ में एकाग्र होने में थोड़ी कठिनाई हो सकती है, किन्तु तीन-चार दिन के नियमित अभ्यास से आप दो-तीन मिनट तक बिन्दी पर त्राटक कर सकेंगे, अभ्यास जारी रखें, धीरे-धीरे आप ३२ मिनट तक त्राटक करने में सफल हो जायेंगे।

अपने-आप को पूर्ण सम्मोहन कर्ता बनाने के प्रारम्भिक सर्वोत्तम उपाय–

१. अनुकूल, स्वच्छ, सुन्दर, सुरुचिपूर्ण वस्त्रों को धारण करें, वे न तो अधिक ढीले हों और न ही अधिक चुस्त हों।

२. हमेशा अपने चेहरे पर मुस्कुराहट बनाये रखें।

३. सम्मोहन कर्ता का व्यक्तित्व ऐसा होना आवश्यक है, जो सामने वाले को मात्र आकृष्ट ही न करे, वरन् मन में विश्वास व आश्वस्ति का भाव भी पैदा कर दे; और यह तभी सम्भव हो सकता है, जब किसी योग्य गुरु से **''सम्मोहन दीक्षा''** प्राप्त की जाय। शरीर में चुम्बकीय आकर्षण को प्राप्त करने का यह अत्यन्त ही सरल और सुलभ मार्ग है।

४. सम्मोहन कर्ता के लिए यह आवश्यक है, कि वह दृढ़चेता हो।

५. सम्मोहन कर्ता के मन में आयी सन्देह की एक हल्की सी लहर भी माध्यम के विचारों से टकराकर उसके चित्त को अस्थिर व भ्रमित कर सकती है, अतः शंका की एक लहर भी न आने दें।

६. यदि आपके अन्दर क्रिया पक्ष, ज्ञान पक्ष और भावनात्मक पक्ष सभी का सफल एकत्रीकरण हो चुका है, तो ऐसा हो ही नहीं सकता, कि कोई आप से प्रभावित हुए बगैर रह जाय।

७. स्वभाव मृदु हो।

८. व्यर्थ की बातों में अपने समय और प्राण ऊर्जा का व्यय न करें।

९. सम्मोहन कर्ता का व्यवहार प्रफुल्लता युक्त हो, जिससे सामने वाला उसके पास बैठ कर अपने-आप में सुकून अनुभव कर सके, यदि आप बीमार या सुस्त दिखाई देंगे, तो आप सफलता प्राप्त नहीं कर पायेंगे।

१०. हमेशा सत्य बोलने का प्रयत्न करें।

११. अपनी स्मरण शक्ति प्रखर रखें।

१२. मूर्ख या अशिक्षित व्यक्तियों की संगत में न रहें, इससे उनका नकारात्मक चिन्तन आभामण्डल में न्यूनता ही लाता है।

१३. दिन का एक निश्चित समय एकान्त चिन्तन में अवश्य ही दें, इससे प्राणशक्ति का संचय होता है तथा मस्तिष्क भी पुष्ट होता है।

१४. किसी की आलोचना न करें, क्योंकि किसी के भी प्रति नकारात्मक भाव आपकी प्राणशक्ति को दुर्बल करता है।

१५. प्राणायाम व आसनों को नित्य दैनिक क्रिया का अंग बना लें।

१६. मस्तिष्क को विचारशून्य बनाने का प्रयत्न करें, इससे सम्मोहन की क्रिया सहजता से सम्पन्न होगी।

१७. चित्त को एकाग्र करने के लिए त्राटक, ध्यान, योग आदि पद्धतियों का सहारा लें।

१८. इच्छाओं पर नियंत्रण रखें, उन्हें अपने ऊपर हावी न होने दें।

१९. सम्मोहन कर्ता का चरित्र बहुत ही विश्वसनीय होना चाहिए। उसे चाहिए कि वह सदैव गोपनीयता रखे, गूढ़ रहस्यों को जानने पर भी अपना चेहरा निर्विकार बनाये रखे, यदि कोई अपनी कमी या न्यून पक्ष को उजागर करे, तो चौंके नहीं और न ही उसे हल्के ढंग से ले।

उपरोक्त सूत्रों को अपना कर निश्चित जानिये, कि आप एक सफल सम्मोहन कर्ता बन सकते हैं।

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट
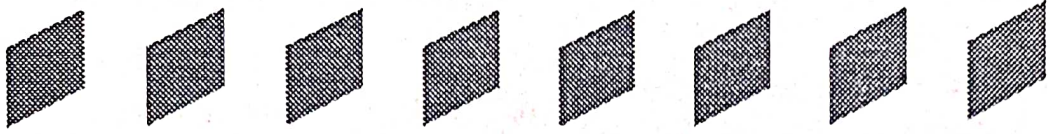
राजनीतिक दृष्टि से अक्टूबर माह अत्यन्त ही ऊहापोह की स्थितियों से भरा रहेगा, अंतर्द्वन्द्व और दल-बदल की स्थितियां प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होंगी। सभी राजनीतिक हस्तियां एक-दूसरे पर तीखे आरोप एवं कटाक्ष करती दिखाई देंगी। गहन आरोपों एवं प्रत्यारोपों के मध्य 'तिकां' की स्थिति अधिक सबल बनेगी।

कुछ नए विवाद उत्पन्न होंगे, जिनसे राजनीतिक क्षेत्रों में तनाव बढ़ेगा, इसके साथ ही पुराने विवाद देश में अशांति का वातावरण निर्मित करेंगे। देश संकट के दौर से गुजरेगा। प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव के प्रति जनता में आस्था का विकास होगा, परन्तु उनकी सरकार की स्थिति कमजोर ही रहेगी। पाकिस्तान अपनी अन्तर्पीड़ाओं से पीड़ित रहेगा, वहीं उसे इसी माह गृहयुद्ध भी झेलना पड़ेगा, इससे पाकिस्तान की राजनीतिक स्थिति अत्यधिक कमजोर होगी। भारत में भी अनेकों स्थानों पर उग्रवाद की घटनाओं का विकास होगा। रेल दुर्घटना, आगजनी एवं विमान दुर्घटनाओं से भरा रहेगा यह माह। इन्हीं दिनों किसी प्रमुख राजनीतिक हस्ती के निधन से देश शोकाकुल दौर से गुजरेगा।

भारत में बढ़ती हुई महंगाई की समस्या अर्थात् तीव्र गति से बढ़ती हुई मूल्य वृद्धि समस्त भारतीय जनता के बीच आक्रोश तथा मुख्य राजनीतिक विवाद का कारण बनेगी। मूल्य वृद्धि की समस्या को लेकर देशव्यापी आन्दोलन होंगे; यदि शीघ्र इस समस्या पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो जनता और राजनीतिज्ञों के मध्य सीधे टकराव की स्थिति बनेगी। बढ़ता हुआ मुद्रा प्रसार भारत में आर्थिक संकट उत्पन्न करेगा, यदि इस पर शीघ्र नियंत्रण न किया गया, तो भारतीय रुपये की जो दुर्गति होगी, वह अकथनीय है।

भाजपा व बसपा में तीव्र मतभेद होगा व राव कांग्रेस व तिवारी कांग्रेस में सीधा टकराव होगा। अन्य सभी पार्टियां भी अपनी स्थिति मजबूत बनाने का प्रयास करेंगी। आने वाला समय देश के लिए चिन्ताजनक है, साम्प्रदायिक तनाव बढ़ेगा, निकट भविष्य में चुनाव होने की सम्भावना, त्रिशंकु सरकार बनने की उम्मीद, राष्ट्रपति को विवेक का परिचय देने का अवसर अतः सूझबूझ से काम लें। पंजाब एवं हरियाणा में चले आ रहे छिटपुट विवादों में समझौता होने से अनुकूलता आयेगी।

कश्मीर में पुनः उग्रवाद की घटनाओं में वृद्धि होने से कश्मीर वासियों का मनोबल सरकार की ओर से टूटेगा एवं सरकार के प्रति विश्वास में कमी आयेगी। भाजपा अनेकों स्थानों पर अपनी स्थिति दृढ़ बनाने में सफलता प्राप्त करेगी।

इस प्रकार यह माह अनेक प्रकार के राजनीतिक उतार-चढ़ाव से भरा रहेगा, वहीं कुछ इस प्रकार की घटनाएं भी देखने को मिलेंगी, जिनके बारे में जन-सामान्य कल्पना भी नहीं कर सकता।

शेयर मार्केट

इस माह शेयर मार्केट में शिथिलता छाई रहेगी, न तो शेयर खरीददारों में किसी प्रकार का उत्साह दिखाई देगा और न बेचने वालों में। बाजारों में होती अनियंत्रित मूल्य वृद्धि से शेयर मार्केट विशेष रूप से प्रभावित रहेगी।

इसका आशय यह नहीं, कि शेयर बाजार में काम नहीं चलेगा, लेकिन एक शेयर धारक जिस प्रकार की आशा लेकर कार्य करता है, उस आशानुरूप उसे सफलता न मिलने से उसका मनोबल टूटेगा। फिर भी साधनात्मक दृष्टि से जो प्रतीत होता है, उसके अनुसार जिन शेयरों के मूल्यों में वृद्धि होने की सम्भावना है, वे निम्न हैं—

ए० सी० सी०, बिन्दल एग्रो, एस्कॉर्ट्स, हिन्द मोटर, जे० के० सिंथेटिक्स, जे० पी० इंडस्ट्रीज, एल एण्ड टी, नेश्ले इंडिया, रिलायंस इंडस्ट्रीज, टिस्को, बल्लारपुर डनलप, एवरेडी ग्रासिम, गुजरात नर्मदा फर्टिलाइजर, आई० टी० सी०, नियोरडिनेरी, केसोराम और **सदर्न पैट्रो।** निश्चय ही ये शेयर मार्केट में अपनी अनुकूल स्थिति बनाने में सफलता प्राप्त करेंगे।

इसके अलावा कुछ शेयर ऐसे भी रहेंगे, जो सामान्य रूप से अधिक लाभ तो नहीं पहुंचायेंगे, परन्तु हानि भी नहीं देंगे, अर्थात् वे मूल्यों में वृद्धि ही प्राप्त करेंगे, जैसे— **एच० डी० सी०, जे० सी० टी० लिमि०, श्रीराम इंडस्ट्रीज इंटर०, टेल्को, प्रकाश इंडस्ट्रीज, हरियाणा पेट्रो, जिंदल स्ट्रीप्स, ओसवाल एग्रो, बालाजी कमर्शियल** आदि।

इसके अलावा भी बहुत से शेयर हैं, जिनकी स्थिति यथावत् रहेगी अथवा गिरेगी, स्थानाभाव के कारण उनका उल्लेख नहीं किया जा सकता। इसलिए उचित होगा, कि शेयर धारक अपनी मौलिक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए ही निर्णय लें और शेयर मार्केट में अपना धन निवेश करें।

: एक अभिनव प्रयोग :

जिससे प्रत्येक संभाव्य मनोकामना पूर्ण होती है।

जीवन में केवल दो ही अवस्थाएं दृष्टिगोचर होती हैं— जीवन और मृत्यु, सुख और दुःख, और यही काल चक्र है, जो निरन्तर गतिशील है. . . जब व्यक्ति की मनोकामना पूर्ण नहीं होती, तो वह दुःखी हो जाता है, और जब पूरी हो जाती है, तो सुखी. . . यह सुख स्थायी रूप से बना रह सके, इसी का प्रमाण है यह अभिनव प्रयोग. . .।

समय का चक्र सदैव गतिशील है, इसकी गति अबाध है। मानव ने समय को पहिचाना और इसकी गति के साथ मिलकर चलने का प्रयास किया। कभी-कभी मानव की गति समय से तेज प्रतीत होती है, तो कभी धीमी। अपने चिन्तन को थोड़ा विस्तार देकर ध्यान से देखें, तो स्पष्ट होगा कि समय की गति के कारण मानव का जीवन समय की विभिन्न दो अवस्थाओं से प्रभावित होता है, ये दो अवस्थाएं हैं— दिन और रात, जीवन और मृत्यु, सुख और दुःख, सम्पन्नता और दैन्यता।

'रात', 'दुःख', 'दैन्यता' और 'मृत्यु' ये मानव जीवन में असीम वेदना से भरे क्षण होते हैं। ऐसी अवस्था में आवश्यक है, कि वह व्यक्ति दृढ़ता, धैर्यता और सुविचारों का सहारा लेकर समय की दूसरी अवस्था 'दिन', 'सुख', 'सम्पन्नता' और 'जीवन' को स्थायी रूप से प्राप्त करने का प्रयास करे।

इन्हें प्राप्त करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति प्रयत्न करता ही है और दुःख व दैन्यता जैसे पथरीले रास्तों को पार करने की कोशिश करता है। अपने प्रयास में सफल व्यक्ति को जब

राजमार्ग प्राप्त हो जाय, तो उसे प्रयास कर इसी मार्ग पर ही चलना चाहिए; किन्तु इस बात को कहना जितना सहज है, उससे कहीं ज्यादा कठिन है इसको कर दिखाना, क्योंकि कभी-कभी ऐसे क्षण भी सामने आ जाते हैं, जब एक सबल सहारे की आवश्यकता पड़ती है, जो उसे दृढ़ता से खड़ा रखते हुए राजमार्ग पर अग्रसर कर सके।

और यह सबल अवलम्बन केवल और केवल मात्र 'सद्‌गुरु' के रूप में ही प्राप्त होता है, वे जीवन के मार्ग से परिचित हैं, क्योंकि उन्होंने इस रास्ते को पार किया है। सद्‌गुरु के पास साधना रूपी ऐसी शक्ति होती है, जिसे वे अपने शिष्य को प्रदान कर उसका मार्ग निष्कण्टक बनाते हैं। साधना की क्रिया-पद्धति, विधि-विधान के बारे में पूर्ण जानकारी तो वही व्यक्ति दे सकता है, जिसने उसे परखा हो और उसमें सफलता अर्जित की हो।

गुरु किसी व्यक्ति का नाम नहीं होता; गुरु का अर्थ है– 'ज्ञान', और जो ज्ञान दे सके, वही गुरु है।

ऐसा समझ लीजिये कि यह पत्रिका ही आपकी गुरु है, जो समय-समय पर आपको दिशा-निर्देश देती रहती है और विभिन्न साधनाओं के माध्यम से यह बताती रहती है, कि किस प्रकार अपने जीवन की कमियों को, न्यूनताओं को और अभावों को दूर किया जा सकता है।

गुरु परम्परा द्वारा प्रदत्त यह लघु "सोम अमृत प्रयोग" अपने-आप में अनन्त संभावनाओं को समेटे है। लघु होते हुए भी अपने-आप में असीम विराटता को संजोये हुए है।

सोम का अर्थ है– चन्द्रमा, कपूर, शिव, जल, वायु, हवा और अमृत। जो इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, वह अमर हो जाता है, यानि लम्बी आयु प्राप्त कर अपनी अनन्त, असीम इच्छाओं की, जिन्हें इच्छाएं न कह कर जीवन की आवश्यकताएं कहें, तो ज्यादा उचित रहेगा, की पूर्ति कर लेता है. . . और जब ऐसा होता है, तो उसका दुःखी, मृतवत् जीवन जीवंतता में बदल जाता है, उसे जीवन को भली प्रकार से जीने की कला आ जाती है; एक नया चिन्तन, विचार, धारणा स्वतः ही उसका मार्ग प्रशस्त करती रहती है, वह जैसा चाहे वैसा करके अपने जीवन की हर परेशानी से, बाधा से और तनाव से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

"मानव" का अर्थ है– जीवन को उन्नति की ओर अग्रसर करना, ऊंचाई की ओर उठाना, एक श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करना और अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर लेना. . . और यह प्रयोग इसी कार्य की पूर्ति हेतु दिया जा रहा है, जो इस प्रकार है–

प्रयोग विधिः

१. साधकों को चाहिए कि वे साधना-सामग्री **"सोम यंत्र"** एवं **"अमृतेश माल्य"**, जो कि मंत्र-चैतन्य हो, पहले से ही मंगवाकर रख लें।

२. इस प्रयोग को ८.११.९५ **मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष, बुधवार, अमृत सिद्धि योग** के दिन सम्पन्न करें अथवा किसी भी माह में पड़ने वाले **अमृत सिद्धि योग** के दिन।

३. यह प्रयोग प्रातः या सायं कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है।

४. साधकों को चाहिए कि वे स्नान कर, शुद्ध व स्वच्छ हो, पूजागृह में बैठ जायें।

५. **पूर्व** या **उत्तर दिशा** की ओर मुंह करके बैठें।

६. **पीले आसन** का उपयोग करें।

७. पीली धोती तथा ऊपर से गुरु चादर ओढ़ लें।

८. फिर किसी बजोट पर पीले वस्त्र को बिछा दें तथा बायीं ओर जल से भरा कलश स्थापित करें, उसके ऊपर एक नारियल को मौली से बांध कर, कुंकुम व अक्षत चढ़ा कर स्थापित कर दें।

९. इसके पश्चात् 'यंत्र' को बजोट पर स्थापित कर उसके ऊपर 'अमृतेश माल्य' को रख दें।

१०. फिर हाथ में जल लेकर, मनोकामना की पूर्ति के लिए प्रार्थना कर जल को भूमि पर छोड़ दें।

११. फिर गुरु यंत्र व चित्र का पूजन कर **४ माला गुरु मंत्र-जप** करें।

१२. पूजन के बाद हाथ जोड़कर गुरुदेव से साधना-सिद्धि की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करें।

१३. फिर भूमि पर थोड़ा-सा जल गिरा दें।

१४. इसके पश्चात् सोम यंत्र और अमृतेश माल्य को दोनों हाथों में रखकर मूल मंत्र का **१ घण्टे तक जप करें**–

मंत्र :

ॐ श्रीं सोमस्ते मनसः
कामं श्रीं नमः

१५. मंत्र-जप के समाप्त होने पर गुरु आरती करें तथा पन्द्रह दिन के बाद समस्त सामग्री को नदी या कुंए में प्रवाहित कर दें।

१६. यथासम्भव साधना काल में मौन रहने का प्रयास करें, गुरु के प्रति तथा मंत्र के प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास रखें।

यह प्रयोग अकाल-मृत्यु भय, दरिद्रता निवारण, राज्य बाधा, सामाजिक बाधा व पारिवारिक उलझनों को समाप्त करने वाला एक लघु प्रयोग है, जो लघु होते हुए भी प्रभाव में विशाल है।

साधना-सामग्री (यंत्र व माला)
न्यौछावर – २६०/-

ईशितात्वम्

मैंने पन्द्रह अगस्त को गुरुधाम में आकर **''बगलामुखी साधना''** सम्पन्न की। साधना करने का कारण था मेरे चाचा, जो कि मेरे सगे कहे जाते हैं, उन्होंने धोखे से मेरे नाम की जमीन अपने नाम करवा ली थी। कई महीनों बाद यह राज खुला, तो मैंने उनसे बात की, लेकिन उन्होंने जमीन देने से इन्कार कर दिया। थक-हार कर मैंने मुकदमा दायर कर दिया, लेकिन कागज तो चाचा के पक्ष में बयान दे रहे थे, कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

गुरु जी से मिलने आया तो देखा, साधना हो रही है, मैंने भी साधना में भाग ले लिया। एक हफ्ते बाद की तारीख पड़ने पर मैं कोर्ट में गया, पता नहीं क्यों मेरे चाचा बराबर मुझे देखे जा रहे थे।

अगले दिन वे आये और उन कागजों को गलत बताते हुए मेरे नाम की जमीन मुझे देने के लिए सहमत हो गये। साधना के प्रभाव का और क्या वर्णन करूं।

– इन्द्र कुमार सिंह, नोएडा

कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले **''पुत्र प्राप्ति प्रयोग''** में मैंने भाग लिया। मैं गर्भवती हूं और अच्छे पुत्र की प्राप्ति के लिए मैंने यह साधना सम्पन्न की थी। जब पूजन कराया जा रहा था, तो भगवान श्रीकृष्ण के चित्र से एक ज्योति सी निकलती दिखायी दी, फिर मैंने देखा, कि वह ज्योति धीरे-धीरे मेरे गर्भ में प्रविष्ट हो गयी।

इस बात की चर्चा मैंने शास्त्री जी से की, तो उन्होंने बताया– ''आपके ऊपर भगवान श्रीकृष्ण की कृपा हुई है, अतः आप नित्य एक माला गुरु मंत्र का जप तथा कृष्ण मंत्र का प्रतिदिन २१ बार उच्चारण अवश्य करें।''

उनके निर्देशानुसार मैं नित्य जप करती हूं और **''मैं गर्भस्थ बालक को चेतना प्रदान करता हूं''** कैसेट को भी सुनती हूं। मुझे विश्वास है, कि मैं निश्चित समय पर योग्य संतान की माता कहलाऊंगी।

– सुमन बंसल, गाजियाबाद

मैं गोपीचन्द्र श्रीवास्तव, अपने पत्र द्वारा आप सभी लोगों को अपनी बात बताते हुए बहुत अधिक हर्षित हो रहा हूं। गणपति साधना को करने के लिए मैं निरन्तर प्रयासरत रहा हूं और सवा-सवा लाख के छः अनुष्ठान भी किये हैं, लेकिन सफलता मिलते-मिलते रह जाती थी। मैंने पत्रिका के **अगस्त अंक में प्रकाशित २९ अगस्त ९५ को** गुरुधाम में करायी जा रही गणेश जयन्ती के पर्व पर **''गणेश साधना''** को सम्पन्न किया और मंत्र-जप करते हुए ही भगवान गणपति के जाज्वल्यमान स्वरूप का दर्शन किया। अपने आराध्य देव का दर्शन करके मैं धन्य हो गया हूं।

गुरु जी मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं, कि आपने मेरे जीवन की मनोकामना पूरी कर दी।

– गोपीचन्द्र श्रीवास्तव, धार

पूज्य गुरुदेव, किसी लड़की के जीवन का सौभाग्य उसका पति होता है, और मैं अपने सौभाग्य से ही वञ्चित थी, क्योंकि मेरे पति मेरे होते हुए भी किसी और का भाग्य बने हुए थे। बहुत ही दुःखी मन से मैं गुरुधाम में आयी। मैंने पत्रिका, जिसे रेल में यात्रा करते हुए खरीद लिया था, उसमें पढ़कर **२ सितम्बर ९५ को ''भुवनेश्वरी साधना''** करने आयी। मन में भाव था, कि यदि ''भुवनेश्वरी देवी'' सौभाग्य को देने वाली हैं, तो मेरा सौभाग्य मुझे अवश्य मिल जायेगा, इसी कारण से मैंने साधना की, और घर जाकर भी मंत्र का जप करती रही।

कुछ दिनों बाद मुझे ऐसा लगने लगा, जैसे मेरे पति के व्यवहार में अन्तर आ रहा है और मात्र आठ दिनों में ही उन्हें मेरे काम में, मेरी बातों में रुचि लेते देख मैं आश्चर्य में पड़ गयी। धीरे-धीरे वे मेरी बात मानने लगे और आज मैं अपने-आप को पूर्ण सौभाग्यशाली मान रही हूं, क्योंकि देवी मां ने अपनी बेटी का दुर्भाग्य समाप्त कर दिया।

– जयन्ती भारद्वाज, पंजाब

आपके द्वारा प्रतिमाह विभिन्न दिवसों पर करायी जाने वाली साधना से बहुत से लोग लाभान्वित हो रहे हैं, ऐसा मैंने लोगों को बात करते हुए सुना है, जिज्ञासा हुई और गुरुधाम आकर के मैंने **अक्टूबर माह** में होने वाली साधना में निःशुल्क भाग लेने के लिए अपने दो परिचितों को सदस्य बना कर अपनी जगह आरक्षित कर ली है। इस जन हितार्थ कार्य हेतु साधुवाद।

– ईश्वर चन्द शास्त्री, वाराणसी

अपनों से अपनी बात

★ पिछले दिनों अतिवृष्टि एवं बाढ़ से राजस्थान के कई जिले और वहां के निवासी बेघर, बेहाल, व्यथित एवं बीमार हो गये, **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली चेरिटेवल ट्रस्ट''** ने ऐसी स्थिति में मुफ्त कम्बल, दवाइयां एवं भोजन के पैकेट वितरित किये, यह सब निःस्वार्थ भाव से प्रभु-कृपा से ही सम्पन्न हो सका।

★ उपरोक्त ट्रस्ट पिछले आठ महीनों से तीन मंदिरों का जीर्णोद्धार करवा रहा है, देवोत्थान एकादशी के बाद उनमें मूर्तियों की पुनर्प्रतिष्ठा एवं सम्बन्धित मंत्र-जप, पाठ आदि सम्पन्न कराये जायेंगे।

★ **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली चेरिटेबल ट्रस्ट''** ने निर्णय लिया है, कि शीघ्र ही ट्रस्ट द्वारा (फिलहाल) बीस नवयुवक विद्यार्थियों का चयन होगा, जो सच्चरित्र, सात्विक एवं पवित्र वातावरण में पले हों, उनमें से पांच को ज्योतिष, पांच को कर्मकाण्ड, पांच को वेदाध्ययन एवं पांच को जोधपुर ''गुरुधाम'' में ही रख कर साधनाएं सम्पन्न करायी जायेंगी; उनके रहने, खाने-पीने, वस्त्र, आवास आदि का व्यय ''ट्रस्ट'' उठायेगा, युवक १८ से २४ वर्ष के बीच की अवस्था के हों, तथा अपने माता-पिता से सहर्ष एक वर्ष की अनुमति लेकर ही आवेदन कर सकेंगे, चयन का अंतिम निर्णय ट्रस्ट का होगा, जो मान्य होगा।

★ यह पत्रिका एक बार फिर भ्रष्ट, धूर्त एवं अनैतिक स्वार्थी तत्त्वों की भर्त्सना करती है, जो तंत्र के नाम पर घटिया, ओछे और कानून विरोधी कार्य करते हैं। इस पत्रिका का उद्देश्य, भारतीय ज्ञान एवं पूर्वजों द्वारा उपलब्ध साधनाओं से समाज को परिचित कराना है, जिससे नवयुवक पाश्चात्य व्यसनों की अपेक्षा भारतीय ज्ञान से परिचित हो सकें। पत्रिका तो केवल साधनाएं प्रकाशित करती है; उसमें सफलता-असफलता तो साधक के विवेक, विश्वास और निष्ठा पर ही सम्भव है।

★ **फोटो द्वारा दीक्षा : सर्वथा मुफ्त**

आप-अपने परिवार के किसी भी एक सदस्य पत्नी, पति, पुत्र, पुत्री, मित्र, बन्धु किसी का भी फोटो भेज कर निम्न में कोई एक दीक्षा (**चेतना दीक्षा, गर्भस्थ बालक सिद्धि दीक्षा, कार्य सिद्धि दीक्षा, जीवन मार्ग दीक्षा, ज्ञान दीक्षा**) निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं, पर साथ में तीन सौ बीस रुपये का मनीऑर्डर जरूरी है, जिससे कि आपको **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** की पूर्व प्रकाशित दुर्लभ बीस प्रतियां भेज सकें, जिन्हें आप धर्मार्थ अस्पतालों, मंदिरों, मित्रों, स्वजनों में वितरित कर गुरु सेवा कर पुण्य अर्जित कर सकें। वी० पी० पी० चार्ज अलग से देय होगा।

★ ऐसा प्रतीत हो रहा है, कि पूज्य गुरुदेव धीरे-धीरे आत्मकेन्द्रित होकर पुनः ''संन्यस्त'' होने का मानस बना रहे हैं, ऐसा उनके प्रवचनों, कथ्यों एवं कार्यों से लगता है। हम समस्त भारतवासी शिष्यों का कर्त्तव्य है, कि उन्हें हमारे बीच गृहस्थ में ही रहने की विनती करें, **प्रभु से प्रार्थना है, कि हम अपने प्रयास में सफल हों।**

★ **''बम्बई से श्री शंभु सोनी''** एक श्रेष्ठ साप्ताहिक पत्रिका **''मूल राजस्थानी''** पिछले दो वर्षों से प्रकाशित कर रहे हैं, दूसरे वर्ष का प्रथम अंक पूज्य गुरुदेव को भेंट करते हुए उन्होंने गुरुदेव पर एक श्रेष्ठ लेख प्रकाशित किया है, साथ ही पत्र में लिखा है—

जग बगिया तुम इसके ''माली'', और ''श्री'' है तुम्हारे साथ।
तम फैला, दीप जलाओ ना, हे ''नारायण'' नाथ।।

पत्रिका के माध्यम से हम सब गुरु भाई ''श्री शंभु सोनी'' को हार्दिक शुभकामनाएं प्रस्तुत कर रहे हैं।

★ साधना में सफलता-सिद्धि के लिए ''पतंजलि'' ने जहां बहिर्रूप अर्थात् शरीर को पवित्र बनाये रखने के लिए गुरु-स्मरण एवं प्रभु-स्मरण बताया है, वहीं अन्तर्मन को पवित्र बनाये रखने के लिए छः बिन्दु दिये हैं— **(१) अहंकार का त्याग (२) आसक्ति हीनता (३) आलोचनात्मक प्रवृत्ति की समाप्ति (४) द्वेष (५) अशिक्षा (६) ऋषियों द्वारा बताई हुई साधनाओं को निरन्तर करते हुए अपनी संस्कृति की रक्षा।**

जीवन में पहली बार आपके लिए

इस मास का

श्रेष्ठतम उपहार

प्रत्येक शिष्य, साधक और अध्येता को,

जो पूज्य गुरुदेव में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखते हैं,

सिद्धाश्रम के सिद्ध योगियों से आशीर्वाद युक्त

(पूजा में रखने योग्य)

जीवन में पूर्ण सुख, सौभाग्य, उन्नति,
ऋणमुक्ति, व्यापार वृद्धि, पुत्र-सुख, रोग मुक्ति
एवं समस्त प्रकार की भौतिक-आध्यात्मिक उन्नति के लिए

एक अद्वितीय उपहार

आप क्या करें–

आप पत्रिका में दिया हुआ पोस्टकार्ड भली प्रकार से भर लें . . . अपने किन्हीं दो मित्रों या स्वजनों का पूरा पता एवं नाम भर कर हमें भेज दें, पोस्टकार्ड प्राप्त होने पर हम आपको 360/- रुपये दो वर्षीय पत्रिका सदस्यता शुल्क + 30/- रुपये वी० पी० पी० चार्ज इस प्रकार मात्र 390/- की वी० पी० पी० से **'मनोरथ सिद्धि निश्चित कार्य सिद्धि यंत्र'** भेज देंगे, और यह यंत्र आपको सुरक्षित रूप से प्राप्त हो जायेगा। वी० पी० पी० छूटने पर आपके दोनों मित्रों को अगले महीने से एक-एक वर्ष का पत्रिका सदस्य बना कर रसीद आपको भेज दी जायेगी।

नोट : ● इस योजना का लाभ केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्य ही ले सकते हैं।

● **इससे आप अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं कर सकते।**

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के प्रारम्भिक पृष्ठों पर प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत।

: प्राप्ति स्थान :

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

दीक्षायांऽमृत मश्नुते

रजिस्ट्रेशन नं० 55791/93

A.W.H.

पोस्टल-डी.एल.नं० 19052/93

दीक्षाओं के माध्यम से ही मृत तुल्य व्यक्ति दीक्षा-अमृत पीकर चैतन्य एवं उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

इस माह में पड़ने वाले विशेष दिवस जिनका महत्व अपने-आप में सर्वोपरि है, इन विशेष दिनों में पूज्य गुरुदेव निम्न दीक्षाएं प्रदान करेंगे।

दिनांक : 10 से 13 नवम्बर 1995

10.11.95 गणेश साधना दिवस
11.11.95 सिद्धि योग
12.11.95 सर्वदोष शुद्धि दिवस
13.11.95 कामना सिद्धि दिवस

और इन दिनों में भी

दिनांक : 23 से 26 नवम्बर 1995

23.11.95 सर्वार्थ सिद्धि योग
24.11.95 पूर्ण मनः शान्ति दिवस
25.11.95 व्यतिपातनाश योग
26.11.95 सर्व सिद्धि दिवस

दुर्लभ दीक्षाएं

भैरव दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा, राजयोग दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, धन्वन्तरी दीक्षा, लक्ष्य भेद दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, आत्म-ज्ञान दीक्षा, तंत्र सिद्धि दीक्षा, काल ज्ञान दीक्षा, ध्यान सिद्धि दीक्षा, वैवाहिक योग दीक्षा, अभीष्ट सिद्धि दीक्षा, पूर्ण वीर वैताल दीक्षा, ब्रह्मदर्शन सिद्धि दीक्षा, भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा, मंगली दोष निवारण दीक्षा, गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा, आत्मा-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा,वशीकरण दीक्षा

– विशेष –

प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान पर लगभग आधे घंटे की साधना सम्पन्न करा कर, फिर शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित दीक्षा देने का प्रावधान. . . और साथ में साधना-सिद्धि से सम्बन्धित गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्‌घाटन गुरुदेव के द्वारा. . .

सम्पर्क :

306, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - 110034

फोन : 011-7182248, फेक्सः 011-7196700

नोट

ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल ''गुरुधाम'' दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।